

मसलके आला हजरत का नकीब व पासवान

माहनामा

# सुन्नी दुनिया

बरेली शरीफ

कम उमरी में हजरत आयशा सिद्दीका के निकाह पर ऐतराज़ात  
अच्छे नाम रखने की फज़ीलत  
लौट पीछे की तरफ़ ऐ गर्दिशे अव्याम तू  
जवाब मुस्लिम के अस्बाब क्या हैं?  
सरकार गौसे आजम का दावती असलूब  
हजरत मुजदिददे अल्फ़सानी! हयातो-ख़िदमात  
मुजाहिदे मिल्लत की हयातो-ख़िदमात पर एक फ़िक्र अंगेज़ तहरीर  
अपने दरमियान कादयानियों को पहचानें  
जमात रज़ा-ए-मुस्तफ़ा का कल और आज

वीफ़ एडीटर  
मौलाना मोहम्मद  
असजद रज़ा ख़ाँ कादरी

एडीटर  
मौलाना मोहम्मद  
आदुर्हीम नशतर फ़ारुकी





बिरादराने अहले सुन्नत की फलाह-बहबूद और उनके ईमानो-  
इस्लाम की हिफाज़त के लिए आला हज़रत की कायम कर्दा जमात  
रज़ाए-मुस्तफ़ा के 100 साल पूरे हो रहे हैं इस मौक़े पर जमात का

# जश्ने सद साला

अज़ीमुश्शान पैमाने पर मनाया जायेगा

अहबाबे अहले सुन्नत से पुरखुलूस अपील की जाती है कि ज़्यादा से  
ज़्यादा तादाद जमात रज़ाए-मुस्तफ़ा के मेम्बर बनें और मुल्क के हर گوشे  
में इसकी शाखें कायम करके इस जश्ने सद साला का हिस्सा बनें।

दाईयान

मोहम्मद  
असजद रज़ा ख़ौं कादरी  
कुल दिव्य ख़दर

मोहम्मद  
सलमान हसन ख़ान कादरी  
तायब ख़दर

Head Office:

## JAMAT RAZA-E-MUSTAFA

Behind Dargah Alahazrat Saudagaran, Bareilly Shreef (U.P.) 243003

+91 7055078618 / 7055078619 / 7055078621 / 7055078622

Email: jrmheadoffice@gmail.com, www.jamatrazaemustafa.org



जनवरी-2018

रबिउल आखिर-1439

शुमारा-1

Issue-1

जिल्द नं0-1

Volume-1

महाना 20/- रुपये कापी

सालाना 250/- रुपये सादा डाक से

सालाना 500/- रुपये रजिस्टर्ड डाक से

पाकिस्तान, श्रीलंका व बंगला देश से 1000/- रुपये

दीगर ममालिक से 35 अमेरिकी डॉलर

### कानूनी इन्तेबा

किसी भी तरह की कानूनी चाराजोई सिर्फ बरेली कोर्ट में काबिले समाअत होगी। एहले कलम की आरा से इदारा का मुतफिक होना जरूरी नहीं।

गोल दायरे में सुर्ख निशान इस बात की अलामत है कि आपका जरे सालाना खत्म हो चुका है, बराये करम आगे के लिए अपना जरे सालाना पहली फुरसत में इससाल फरमायें ताकि रिसाला आपको आगे भी भेजा जाता रहे।

### नोट

रिसाला के मुताल्लिक किसी भी तरह की शिकायत या मालूमात के लिए सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक नीचे दिये गये नम्बरों पर राब्ता कर सकते हैं।

9259089193, 8923619276

### गुज़ारिश

एहले कलम हज़रात से गुज़ारिश है माहनामा सुन्नी दुनिया के लिए मज़ामीन भेजते वक्त लिफाफे पर "बराये माहनामा सुन्नी दुनिया" जरूर तहरीर फरमायें। आप अपने मज़ामीन हमारे ई-मेल आई.डी. पर भी भेज सकते हैं।

E-mail: [nashtarfaruqui@gmail.com](mailto:nashtarfaruqui@gmail.com)

### ब-यादगार

इमामुल मुतकल्लेमीन हज़रात अल्लामा मुफ्ती मोहम्मद नकी अली खॉं कादरी बरेलवी, आला हज़रात इमाम अहमद रज़ा खॉं कादरी बरेलवी, हुज्जतुल इस्लाम हज़रात अल्लामा मुफ्ती मोहम्मद हमिद रज़ा खॉं कादरी बरेलवी, मुफ्ति-ए-आजम हिन्द हज़रात अल्लामा मुफ्ती मोहम्मद मुत्तफा रज़ा खॉं कादरी बरेलवी, मुफ्तिररे आजम हिन्द हज़रात अल्लामा मुफ्ती मोहम्मद इब्राहीम रज़ा खॉं कादरी बरेलवी रदियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन

मरकजे सबादे आजम अहले सुन्नत व जमाअत आस्ताना-ए-आलिया  
कादरिया बरकतिया रज़विया का इल्मी दीनी और इस्लामी तजुमिन  
मसालके आला हज़रात का नकीब व प्रासिबान  
माहनामा  
**सुन्नी दुनिया**

**MAHNAMA SUNNI DUNIYA**

जरे सरपरस्ती

हुज़ूर ताजुशरीआ हज़रात अल्लामा

मुफ्ती मोहम्मद अख्तर रज़ा खॉं कादरी अज़हरी बरेलवी

मददजिल्लहुल आली काज़ियुल कुज़ात फ़िलहिन्द

चीफ़ एडीटर

मौलाना मोहम्मद

असजद रज़ा खॉं कादरी

एडीटर

मौलाना मोहम्मद

अब्दुरहीम नशतर फ़रूकी

फ़िज़ाईलरी

अतीक अहमद (शुजा मालिक) आई.टी. हेड, जामियातुर्रज़ा  
मोईन अख्तर रज़वी, कम्प्यूटर सेक्शन जे.आर.एम. हेड आफिस  
अशी ख़ान कम्प्यूटर सेक्शन, फ़ाईज़ा प्रिन्टर्स, बड़ा बाज़ार, बरेली

राब्ते का पता

दफ़तर माहनामा सुन्नी दुनिया, 82, सौदागरान, बरेली शरीफ़

**MAHNAMA SUNNI DUNIYA**

82 Saudagran, Bareilly Sharif (U.P.) Pin - 243003

Cont. No. 0581-2458543, 2472166, 3291453

E-mail:- [sunniduniya@aalaahazrat.com](mailto:sunniduniya@aalaahazrat.com)

[nashtarfaruqui@gmail.com](mailto:nashtarfaruqui@gmail.com), [atiqahmad@aalaahazrat.com](mailto:atiqahmad@aalaahazrat.com)

Visit Us: [www.aalaahazrat.com](http://www.aalaahazrat.com), [cisjamiaturraza.ac.in](http://cisjamiaturraza.ac.in), [hazrat.org](http://hazrat.org)

एडीटर, प्रबन्धीशर, प्रिन्टर और प्रोप्राइटर मौलाना मोहम्मद असजद रज़ा खॉं कादरी ने फ़ाईज़ प्रिन्टर्स बरेली से छपवाकर दफ़तर माहनामा सुन्नी दुनिया, 82, सौदागरान, दरगाह आला हज़रात, बरेली शरीफ़ से शाय किया

Editor, Printer, Publisher & Owner Asjad Raza Khan, Printed at Faiza Printers, Opp. Lala Kashinath Jewelers, Hamidi Complex, Gali Wazeer Ali, Bara Bazar, Bareilly, Published at 82, Saudagran, Dargah Aala Hazrat, Bareilly Shareef (U.P.)

## इस शुमारे में

कालम	मज़मून	मज़मून निगार	पेज नं०
मन्जूमात	वाह क्या मरतबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा	इमामे अहले सुन्नत कुदिसासिराहुल अजोब	5
	अपने दर से हमें ख़ाली न फिराना या ग़ौस	अल्लामा अर्शदुल कादरी अर्तहिरहमा	5
इदारिया	कम उमरी में हज़रत आयशा सिद्दीका के निकाह पर ऐतराज़ात! एक तहकीकी जायज़ा	मोहम्मद अब्दुर्रहीम 'नशर फ़ारूकी'	6
इस्लामियात	अच्छे नाम रखने की फ़ज़ीलत	हाफ़िज़ हाशिम कादरी मिस्बाही	14
मआशियात	लौट पीछे की तरफ़ ऐ गर्दिशे अय्याम तू	ग़ुलाम मुस्तफ़ा रज़वी	20
आईना-ए-कौमो-मिल्लत	ज़वाल मुस्लिम के अस्बाब क्या हैं?	मौलाना मुस्ताक़ अहमद अमजदी	24
अस्लाफ़ो-अख़लाक़	सरकार ग़ौसे आज़म का दावती असलूब	मुफ़्ती डॉ. साहिल शहसरामी	27
	ग़ौसे आज़म की फ़ज़ीलत	मौलाना अनीस आलम सीबानी	35
	हज़रत मुजदिददे अल्फ़सानी! हयातो-ख़िदमात	डॉ. इक़बाल अख़्तरुल कादरी	38
	उठ मेरे धूम मचाने वाले	अल्लामा रहमतुल्लाह सिद्दीकी	42
नक़दो-नज़र	अपने दरमियान कादयानियों को पहचानें	मौलाना खुर्शीद आलम रज़वी	49
जमात की सरग़मियाँ	जमात रज़ा-ए-मुस्तफ़ा का कल और आज	मौलाना सय्यद अज़ीमुद्दीन अज़हरी	52
रज़वीयात	बातें आला हज़रत की	मोईन अख़्तर रज़वी	54
	आला हज़रत के हालात बर सवालातो-जवाबात	डॉ. शकील अहमद औज़	55

## सुन्नी दुनिया का का यह शुमारा आपको कैसा लगा?

हमें ज़रूर बतायें और इस बात की भी वज़ाहत करें कि रिसाले की ज़बान आपको कैसी लगी? क्या इसमें अभी और आसानी या वज़ाहत की ज़रूरत है?

बिरादराने अहले सुन्नत से गुज़ारिश है कि अपने हिन्दी दाँ दोस्तो व अहबाब को इस के मेम्बर बनने की तरगीब दें और मर्कज़ की आवाज़ घर-घर पहुंचाने में हमारा तआवुन करें



# वाह क्या मर्तबा ऐ गौस है बाला तेरा

अज:- इमामे अहले मुन्नत कुदूस सिरगुल अजीज

वाह क्या मर्तबा ऐ गौस है बाला तेरा  
ऊँचे ऊँचों के सरों से कदम आला तेरा  
सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा  
औलिया मलते हैं आँखें वो है तलवा तेरा  
क्या दबे जिस पे हिमायत का हो पंजा तेरा  
शेर को खतरे में लाता नहीं कुत्ता तेरा  
कस्में खा खा के खिलाता है पिलाता है तुझे  
प्यारा अल्लाह तेरा चाहने वाला तेरा  
मुस्तफा के तने बे-साया का साया देखा  
जिसने देखा मेरी जाँ जलव-ए-जेबा तेरा  
इब्ने ज़हरा की मुबारक हो उरूसे कुदरत  
कादरी पायें तसददुक मेरे दूल्हा तेरा  
क्यों न कासिम हो कि तू इब्ने अबिल कासिम है  
क्यों न कादिर हो कि मुख्तार है बाबा तेरा  
नब्वी मेंह, अल्वी सल, बतूली गुलशन  
हसनी फूल, हुसैनी हैं महकना तेरा

मौत नज़दीक, गुनाहों की तहें, मैल के खोल  
आ बरस जा कि नहा धो ले यह प्यासा तेरा  
जान तो जाते ही जायेगी क्यामत यह है  
कि यहाँ मरने पे ठहरा है नज़ारा तेरा  
तुझ से दर, दर से सग और सग से है मुझ को निस्वत  
मेरी गर्दन में भी है दूर का डोरा तेरा  
इस निशानी के जो सग हैं नहीं मारे जाते  
हशर तक मेरे गले में रहे पट्टा तेरा  
मेरी किस्मत की कसम खायेँ सगाने बग़दाद  
हिन्द में भी हूँ तो देता रहूँ पहरा तेरा  
बद सही, चोर सही, मुजरिमो नकारा सही  
ऐ वह कैसा ही सही है तो करीमा तेरा  
मुझ को रुसवा भी अगर कोई कहगा तो यूँही  
कि वही ना! वह रज़ा बन्द-ए-रुसवा तेरा  
फ़ख़्रे आका में रज़ा और भी इक नज़्मे रफ़ीअ  
चल लिखा लायें सना ख़्वानों में चेहरा तेरा

## अपने दर से हमें ख़ाली न फिराना या गौस

अज: अल्लामा अरशदुल कादरी अलैहिर्रहमा

हाथ पकड़ा है तो ता-हशर निभाना या गौस  
अब किसी हाल में दामन न छुड़ाना या गौस  
अपने ही कूचे में सरशार तमन्ना रखना  
अपने मुहताज को दर दर न फिराना या गौस  
दिल से उतरे न कभी तेरे तसव्वुर का खुमार  
ऐसा इक जाम हुजूरी का पिलाना या गौस  
तेरे नाना की सखावत की कसम है तुझ को  
अपने दर से हमें ख़ाली न फिराना या गौस  
दोस्त खुश हों मेरे दुश्मन को पशोमानी हो  
काम बिगड़े हुये इस तरह बनाना या गौस  
आस्ती अपनी बढ़ाना मेरी पलकों की तरफ़

अपने गुम में हमें जब जब भी रुलाना या गौस  
कभी आँखों में, कभी ख़ान-ए-दिल में रहना  
रूह बन कर मेरी रग रग में समाना या गौस  
निस्वते हल्का बगोशी का भरम रख लेना  
बहरे इमदाद मेरी क़ब्र में आना या गौस  
आबगीना मेरी उम्मीद का टूटे न हुज़ूर  
ददें हसरत से मेरे दिल को बचाना या गौस  
तेरे जलवों से हैं कितने शबिस्तां रौशन  
मेरे दिल में भी कोई शमा जलाना या गौस  
किसी मझधार से अरशद की सदा आती है  
मेरी क़श्ती को तुम्ही पार लगाना या गौस



# कम उमरी में हज़रत आयशा के निकाह पर ऐतराज़ ! एक तहकीकी जायज़ा

अज : अब्दुरहीम 'नशर फ़ारूकी'

इत्तारिया

आये दिन इस्लाम मुख़ालिफ़ अनासिर इस्लाम और अहले इस्लाम के तअल्लुक से अपनी दरीदा देहनी का मुज़ाहिरा करते रहते हैं, कभी यह इस्लामी अहकामात को निशाना बनाते हैं तो कभी इस्लामी शख़्सियात को हदफ़े लान तान बनाते हैं, कभी पैग़म्बरे इस्लाम की शान में गुस्ताख़ियाँ करते हैं तो कभी अज़वाजे मुतहहरात की ज़ाते बाबरकात के ताअल्लुक से अपनी ख़बासतों का इज़हार करते हैं, वैसे तो यह कोई नई और ताअज़ुब खेज़ बात नहीं, क्योंकि इस्लाम पर कीचड़ उछालना दुनिया के सारे मुख़ालेफ़ीने इस्लाम का महबूब तरीन मशगला बन चुका है, चुनानचे सबसे पहले कुछ मुतआसिब किस्म के यहूदियों ने अपनी बीमार ज़हनियत की गन्दगी ज़ाहिर करते हुये यह ऐतराज़ किया कि एक कम उम्र लड़की से निकाह करना पैग़म्बरे इस्लाम के लिये मौज़ू नहीं था और न जाने कैसे कैसे अपनी ख़बासतें बातनी का इज़हार किया, अहले इस्लाम ने हमेशा की तरह उनकी इस लायानी और ग़ैर माकूल ऐतराज़ का भी दनदान शिकन जवाब दिया, लेकिन मुख़ालेफ़ीन ने अपनी कुछ न जाइज़ औलादें हमारे मुल्क में भी पैदा कर दी हैं जो उनके तख़रीबी मिशन को एक सच्चे वारिस की तरह आगे बढ़ाने में हमा तन मसरूफ़ हैं और अपनी ज़हनी गुलाज़तों की बदबू से हिन्दुस्तान की ख़ुशबूदार फ़िज़ा को बदबूदार करने पर तुली हुई हैं।

इस्लाम और अहले इस्लाम से बेजा नफ़रत वाली ज़हनियत अब एक "ख़तरनाक वायरस" की शक़ल अख़्तयार कर चुकी है जो कभी किसी बदबख़्त अंग्रेज़ को लाहिक् होकर उसे अक्लो-ख़िरद से बेगाना कर देता है तो कभी किसी नाहन्जार शायरा के अन्दर

सरायत होकर उसे पागल कर देता है और अब सुना है किसी सिर फिरे टी.वी. ऐंकर को भी यह मर्ज़ लाहिक् हो गया है, अब देखिये यह साहब कौन सा गुल खिलाते हैं, क्योंकि उन के पास तो अपनी कैचीनुमा ज़बान के साथ टी.वी. का एक बड़ा प्लेटफ़ार्म भी है जिसके ज़रिये वह अपने बवासीरी मर्ज़ की बदबू दूर दूर तक फैला सकते हैं।

दरअसल यह ऐतराज़ इस मफ़रूज़ा पर मबनी है कि हज़रत आयशा रदियल्लाहु अन्हा निकाह के वक़्त एक नाबालिगा लड़की थीं और अभी उनके अन्दर वह सलाहियत नहीं पैदा हुई थी जो एक ख़ातून को अपने शौहर के पास जाने के लिए दरकार होती है, दरअसल मुख़ालेफ़ीने इस्लाम का यह ऐतराज़ ही सिरे से गुलत व ब्रातिल है क्योंकि उनका निकाह ज़रूर नाबालिगी में हुआ था लेकिन रुख़्सती नौ साल की उम्र में बालिग हो जाने के बाद ही हुई थी। बुख़ारी शरीफ़ में खुद उम्मुल मोमेनीन सय्यादा आयशा सिद्दीका रदियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है, हज़रते आयशा सिद्दीका रदियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस वक़्त मुझसे निकाह फ़रमाया उस वक़्त मेरी उम्र 6 साल की थी, उसके बाद हम लोग (हिज़रत करके) मदीना गये और वहाँ क़बीलए बनी हारिस में क़याम किया। फिर मुझे ऐसा बुख़ार आया कि सर के तमाम बाल झड़ गये। फिर (नये बाल) कन्धों तक अभी पहुँचे ही थे कि मेरी माँ उम्मे रुमान मेरे पास आयीं, उस वक़्त मैं अपनी सहेलियों के साथ झूला झूल रही थी, मैं माँ के पास चली गयी, मुझे कुछ ख़बर नहीं कि आज क्या मआमला होने वाला है ?



वह मेरा हाथ पकड़ कर दरवाजे पर ( थोड़ी देर के लिये) रुकी रहीं, मेरी साँस फूल रही थी, जब सूकून हुआ तो मेरी माँ ने पानी लेकर मेरा मुँह और सर धोया, फिर मकान में लेकर गई, जहाँ अंसार की औरतें मौजूद थीं, वह मुझे दुआए खैर और मुबारकबाद देने लगीं, माँ ने मुझे उन औरतों के हवाले कर दिया, उन्होंने मेरा बनाओ श्रृंगार किया, अब मुझे कुछ खबर नहीं हुई यहाँ तक कि मैंने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा और फिर मुझे उन औरतों ने आपके सुपुर्द कर दिया, उस वक़्त मेरी उम्र नौ साल की थी। (सही बुख़ारी हदीस न. 3894)

अब आइये यह जानने की कोशिश करते हैं। कि क्या पूरी दुनिया में सिर्फ़ एक यही किसी लड़की का पहला निकाह है जो इतनी कम उमरी में बाँके हुआ? क्या इससे क़ब्ल या बाद में ऐसा कोई निकाह नहीं हुआ? तारीख़ी शवाहिद हमें यह बताते हैं कि दुनिया के हर گوشे में और हर मज़हब में इतनी उम्र में या इससे भी कम उम्र में शादियों का रिवाज़ मौजूद था और ऐसे किसी भी निकाह को कभी मायूब नहीं समझा गया, इस सिलसिले में सबसे पहले हम मुल्के अरब का ही जायज़ा लेते हैं जहाँ यह निकाह अमल में आया।

14 सौ साल क़ब्ल अरब में इस उम्र में लड़कियों की शादी को मायूब नहीं समझा जाता था, तारीख़ी हकाइक़ शाहिद हैं कि अरब में बाज़ लड़कियाँ नौ साल में माँ और 18 साल की उम्र में नानी भी बन गई हैं, चुनाँचे हदीस की मशहूर किताब “दारे कुतनी” में एबाद इब्ने एबाद मुहालबी का बयान है कि: “मैंने अपनी कौम मुहालबा में एक औरत को देखा कि वह 18 साल की उम्र में नानी बन गई थी, इसकी सूत यह हुई कि खुद उसको 9 साल की उम्र में लड़की पैदा हुई और फिर वह लड़की भी 9 साल की उम्र में लड़के वाली हो गई, इस तरह वह 18 साल में नानी बन गई।”

नीज़ हज़रत इमाम शाफ़ई रदियल्लाहु तआला अन्हु का एक चश्मदीद बाँकेआ नक़ल किया जाता है:

आपने देखा कि “एक औरत इक्कीस बरस की उम्र में नानी बन गई, उसकी सूत यूँ हुई कि नौवीं बरस में हैज़ आया, दसवीं बरस में लड़की जनी, और उस लड़की का भी हैज़ व हमल इसी तरह वकू पज़ीर हुआ जिससे इक्कीस बरस की उम्र में नानी कहलाने लगी।” (फ़तहुलबारी- जिल्द 5, सफा 203)

इसी तरह सही बुख़ारी में भी हसन बिन स्वालेह के ज़रिया एक बाक़या मज़कूर है, उनका बयान है कि “मैंने अपने पड़ोस की लड़की को देखा कि वह 21 साल की उम्र में नानी बन गई थी।” (सही बुख़ारी, जि0 1, स. 466)

जदीद साइंस भी इस हकीक़त का ऐतराफ़ करती है और आज कल के अख़बारात व रसाईल भी लड़कियों के कम उमरी में माँ बनने की तस्दीक़ भी करते हैं, इसके साथ ही इस हकीक़त को फ़रामोश नहीं किया जा सकता कि हज़रत आयशा रदियल्लाहु अन्हा की रुख़सती खुद उनकी वाल्दा ने हुज़ूर के तकाज़ा के बग़ैर की थी और दुनिया जानती है कि कोई भी माँ अपनी बेटी की दुशमन नहीं होती जो उसे नुक़सान व ख़ुसरान की आग में झोक दे, इस लिए यह नामुमकिन और मुहाल है कि उन्होंने बालिग़ होने से पहले आपकी रुख़सती कर दी हो।

अरब में कम उम्र लड़कियों की शादी का आम रिवाज़ था। चुनाँचे हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी लड़की उम्मे कुल्सूम का निकाह उरवा बिन जुबैर से, उरवा बिन जुबैर ने अपनी भतीजी का निकाह अपने भतीजे से और अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु की बीवी ने अपनी लड़की का निकाह इब्ने मुसइयब बिन नरब्बा से कमसिनी में किया। (अलफ़िक़हुल इस्लामी, जि0 7, स0 180)

इन हज़रात का कम उमरी में अपनी लड़कियों का निकाह कर देना भी इस बात की खुली हुई दलील है कि उस वक़्त कम उमरी में ही बाज़ लड़कियों के अन्दर निकाह और ख़लवत की सलाहियत पैदा हो जाती थी, तो



ऐसे मुआशरे में उम्मुल मोमेनीन हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह 6 साल की उम्र में होता है और बकायदा उनकी माँ की तरफ़ से उनकी अहलियत के ताअल्लुक् से मुकम्मल इतमिनान कर लेने के बाद नौ साल की उम्र में उनकी रुख़सती अमल में आती है तो उसमें तअज्जुब ही किया है।

मजकूरा हकाइक़ व शवाहिद यह वाज़ेह करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मुल मोमेनीन हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा से 6 साल की उम्र में निकाह फ़रमाना न कोई तअज्जुब खेज़ वाक़्या था और न ही नौ साल की उम्र में रुख़सती कराना कोई नई बात।

बल्कि मुल्के अरब की आबो-हवा, वहाँ के मुआशरती और समाजी रस्मों रिवाज़ के मुताबिक़ वह उम्र लड़कियों की रुख़सती के लिये क़ाबिले कुबूल उम्र थी, जिस उम्र में हज़रत आयशा सिद्दीका रदियल्लाहु तआला अन्हा की रुख़सती हुई।

हकीक़त यह है कि लड़कों और लड़कियों का शबाब व बुलूग़ सिर्फ़ उम्र पर ही मौकूफ़ नहीं, बल्कि ज़्यादा तर मुल्की आबो-हवा लड़कों और लड़कियों के जिस्मानी इरतका में तक्दीमो-ताख़ीर के लिये ज़िम्मेदार होते हैं, एक ही मुल्क के ताक़तवर और कमज़ोर जिस्म वालों में चार चार, छः छः साल का फ़र्क़ पड़ जाता है हत्ताकि बाज़ औकात छोटा लड़का या लड़की बुलूग़ को पहुँच जाती हैं और बड़े बसों पड़े रह जाते हैं।

दुनिया के हर ख़िस्ते में इंसानों के रहन सहन, खान-पान, शादी ब्याह और जीने मरने के अंदाज़ और अतवार मुख़्तलिफ़ हैं, रहन सहन के तरीक़े और खाने पीने के अंदाज़ इंसानों के जिस्मानी निशो नुमा पर असर अंदाज़ होते हैं। यह भी समाजी मुसल्लेमात से है कि आबो-हवा की तब्दीलियाँ इंसान के जिस्मानी निशो नुमा, उनकी सेहत व साख़्त, क़द व कामत और सने बुलूग़ में तब्दीलियाँ लाती हैं। जिसका लाज़िमी नतीजा

यह होता है कि कहीं इंसानों की बुलूग़त जल्द अमल में आ जाती है तो कहीं ताख़ीर से, कहीं इंसानों की लम्बी उम्र होती है तो कहीं कम, कहीं इंसानों का क़द् पस्त होता है तो कहीं लम्बा और कहीं बच्चों की जल्द शादी कर दी जाती है, तो कहीं ताख़ीर से, यह तब्दीलियाँ मुख़्तलिफ़ मुमालिक में मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में इंसानों को मुतास्सिर करती हैं। एक अहम इक़्तिबास मुलाहिज़ा फ़रमायें:

"The average temperature of the country is considered the chief factor with regard to Menstruation and Sexual Puberty."

यानी "किसी भी इलाके कि लड़कियों के अय्यामे हैज़ की शुरूआत और अज़्दवाज़ी बुलूग़त की उम्र को पहुँचने में इस मुल्क का औसत दर्ज़-ए-हरारत अहम किरदार अदा करता है।"

(Women: An Historical, Gynecological and Anthropological compendium, Volume I, Lord and Brands by 1998, p. 563)

यह एक तारीख़ी हकीक़त है कि 14 सौ साल पहले यूरोप व एशिया, अफ़्रीका और अमरीका जैसे मुमालिक में भी नौ साल से 14 साल की लड़कियों की शादियाँ कर दी जाती थीं, मिसाल के तौर पर सेंट आगास्टीन ने जिस लड़की से शादी की थी उसकी उम्र दस साल थी, किंग रिचर्ड-द्वितीय ने जिस लड़की से शादी की थी उसकी उम्र 7 साल की थी, हेनरी अष्टम ने एक 6 साल की लड़की से शादी की थी।

1929 ई0 से पहले तक बरतानिया में, चर्च आफ़ इंग्लैण्ड के मिनिस्टर्स 12 साल की लड़की से शादी कर सकते थे, 1983 ई0 से पहले केथोलिक केनान के क़ानून ने भी अपने पादरियों को ऐसी लड़कियों से शादी कर लेने की इजाज़त दे रखी थी जिनकी उम्र 12 साल को पहुँच चुकी हो।

बहुत से लोग इस हकीक़त से नावाकिफ़ हैं कि अमेरिका के स्टेट ऑफ़ डेल्योरा में 1888 ई0 में लड़की



की शादी की जो कम से कम उम्र थी वह 8 साल थी और कैलफ़ोर्निया में 10 साल थी, हत्ता कि आज तक भी अमेरिका के कुछ स्टेट्स में लड़कियों की शादी की जो उम्र है, वह मेसीचोसिस में 12 साल और न्यूहेम्सफ़र में 13 साल और न्यूयार्क में 24 साल की उम्र है, यहाँ तक तो ईसाईयत और मगरबी मुमालिक में लड़की की शादी की मुनासिब उम्र और वहाँ की मारुफ़ शख़िसयात के मुताल्लिक़ था, जिससे यह बिल्कुल साबित हो जाता है कि तारीख़ी नुक्तए नज़र से इस उम्र की लड़की से निकाह करना एक आम सी बात थी जिसे कोई मायूब नहीं समझता था।

### हिन्दू धर्म में शादी की उम्र

आख़िर में हम हिन्दू मज़हब की किताबों पर भी नज़र डालते चलते हैं चुनाँचे हिन्दू मज़हब की मशहूर किताब “मनु स्मृति” में लिखा है “A girl should be given in marriage before puberty. यानी लड़की के बालिग़ होने से पहले ही उस की शादी कर देनी चाहिये” (गौतमा 21-18)

दूसरी जगह में यूँ तहरीर है: “Out of fear of the appearance of the menses, let the father marry his daughter while she still runs about naked. For if she stays in the home after the age of puberty, sin falls on the father. (Vashistha 17-70) यानी इस डर से कि कहीं अय्यामे हैज़ न शुरू हो जायें, बाप को चाहिये कि अपनी लड़की की शादी उसी वक़्त कर दे, जब वह बेलिबास घूम रही हो, क्योंकि अगर वह बुलूग़त के बाद भी घर में रही तो उसका गुनाह बाप के सर होगा।”

([www.payer.de/dharmashastra/dharmash083.htm/manu ix 88 http](http://www.payer.de/dharmashastra/dharmash083.htm/manu%20ix%2088))

यह बात भी सभी जानते हैं कि ऐसी कम उमरी की शादियों का रिवाज हिन्दुस्तान के अकसर सूबों में आज भी है, चुनाँचे The Encyclopedia of Religion and Ethies में लिखा है कि जिसकी बेटी इस हालत में

बुलूग़त को पहुँची थी कि वह ग़ैर शादी शुदा हो तो उसके (हिन्दू) बाप को गुनाहगार समझा जाता था, अगर ऐसा होता तो वह लड़की ख़ुद बख़ूद “शूद्र” (निचली जात) के दर्जे में चली जाती थी और ऐसी लड़की से शादी करना शौहर के लिये बाइस रुसवाई हुआ करता था।

“मनु स्मृति में मर्द और औरत के लिये शादी की जो उमर तय की है, वह इस तरह है, लड़का 30 साल का और लड़की 12 साल की या लड़का 24 साल का लड़की 8 साल की, मगर आगे चल कर भरस्पति और महाभारत की ताअलीम के मुताबिक़ ऐसे मौकों पर लड़कियों की जो शादी की उम्र बताई गई है, वह 10 साल और 7 साल है, जबकि इसके बाद के “श्लोक” में शादी की कम से कम उम्र 4 से 6 साल और ज़्यादा से ज़्यादा 8 साल बताई गई है और इस बात की बेशुमार सुबूत हैं कि यह बातें सिर्फ़ तहरीर में ही नहीं थीं बल्कि उन पर बाकायदा अमल भी किया जाता था। (encyclopedia of religion and ethics, p.450)

### हिन्दुस्तान में शादी की उम्र

इस के मुताल्लिक़ कैम्ब्रिज के सेन्ट जॉन्स कॉलेज कि Jack Goody ने अपनी किताब The Oriental Ancient and Primitive में लिखा है कि हिन्दुस्तानी घरों में लड़कियाँ बहुत ही जल्द ब्याह दी जाती थीं, श्रीनिवास उन दिनों के बारे में लिखते हैं: “जब इण्डिया में बालिग़ होने से पहले शादी करने का रिवाज चलता था, (1984:11) लड़की की इस उम्र को पहुँचने से पहले उसकी शादी कर देनी होती थी, हिन्दू लॉ के मुताबिक़ और मुल्क के रिवाज के मुवाफ़िक़ लड़की के बाप पर यह ज़रूरी था कि वह बालिग़ होने से पहले उसकी शादी कर दे, अगर्चे रुख़सती में अक्सर ताख़ीर होती थी, जो तक़रीबन 3 साल हो जाती थी।

(The Oriental, the Ancient, and the Primitive, P208)

### कम उमरी में निकाह आयशा की हिकमत

यह हकीक़त भी ज़हन नशीन रहे कि हुज़ूर



सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह निकाह अपनी तर्ब मैलान की वजह से खुद नहीं फरमाया बल्कि अल्लाह की जानिब से आप को ख्वाब में कई बार हजरत आयशा सिद्दीका रदियल्लाहु तआला अन्हा की शकल दिखा कर उनसे निकाह की तरगीब दी गई थी, चुनाँचे नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा से इस ख्वाब का जिक्र करते हुये फरमाया: “तुम मुझे दो बार ख्वाब में इस तरह से दिखलाई गयीं कि एक शख्स तुम को रेशम के कपड़े में लपेट कर दिखलाता है कि यह आपकी बीवी हैं, मैं जब कपड़ा उठा कर देखता तो तुम्हारी सूरत नज़र आती थी, मैंने कहा कि अगर यह ख्वाब खुदा की तरफ से है तो पूरा होकर रहेगा।” (बुखारी, हदीस न० 7011)

एक रिवायत के मुताबिक तीन बार ख्वाब में हुजूर को आपकी शकल दिखा कर आपसे निकाह की तरगीब दी गई, इन ख्वाबों से वाजेह हो गया कि मशीयते इलाही को इस निकाह से किसी खास मकसद की तकमील मंज़ूर थी, वना बज़रिया ख्वाब बार बार हुजूर को इसकी तरगीब देने की क्या ज़रूरत थी? यही वजह थी कि बचपन ही से आपके रूहानी और जिस्मानी निशो नुमा माफ़ौकूल आदत तरक्की पज़ीर थे, कूदरत का यह खास अंदाज़ तरबियत आपके साथ इसी लिये था कि आपके ज़रिये कुछ अहम और नुमायौ कारनामे अंजाम देने थे, चुनाँचे दुनिया ने देखा कि आप बावुजूद कमसिन होने के बड़े बड़े फूकहाए-सहाबा पर इल्मो-फ़न और फ़ज़लो-कमाल में फौकियत रखती थीं।

हजरत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा से कमसिनी में इस लिये निकाह किया गया ताकि वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़्यादा अर्सा तक इक्तिसाबे इल्मो-फ़ज़ल कर सकें और उनके ज़रिये ज़्यादा से ज़्यादा अफ़राद इस्लामी तअलीम हासिल कर सकें, चुनाँचे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद अड़तालीस साल तक सहाबए-किराम

और ताबईने इज़्जाम उनकी खुदादाद ज़हानतों फ़िरासत, ज़कावतों बसीरत और इल्मो इरफ़ान हासिल करते रहे। (ज़रफ़ानी, जि० 3, स० 229-236)

तमाम अज़्वाजे मुताहरात में एक आप ही की ज़ाते बाबरकात थी जिसकी परवरिश व परदाख़्त इस्लामी माहौल में हुई थी और मज़ीद काशानए नबुव्वत में आकर आपकी तालीम व तरबियत हर लिहाज़ से मुकम्मल, मुन्फ़रिद और मिसाली हुई, यही वजह है कि आप मुसलमानों में इस्लामी तालीमात की तब्लीगो इशाअत का एक मोअस्सिर तरीन ज़रिया बन सकीं।

चूँकि हजरत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा के वाल्दैन का घर तो पहले ही से नूरे इस्लाम से मुनव्वर था, कम उमरी ही में उन्हें काशानए-नबुव्वत में पहुँचा दिया गया ताकि उनके सादा लौह दिल पर इस्लामी तालीमात का गहरा नक्श मुस्तसिम हो जाये, चुनाँचे दुनिया ने देखा कि हजरत आयशा रदियल्लाहु अन्हा ने अपनी नौ उमरी में ही किताब व सुन्नत के उलूम में गहरी बसीरत हासिल कर ली थी, और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आमाल व इरशादात का एक बड़ा ज़ख़ीरा अपने ज़हनो दिमाग में महफूज कर लिया, फिर बाद में वह उलूमो मआरिफ़ दसों-तदरीस और नक़लो रिवायत के ज़रिया उम्मत के हवाले किये।

चुनाँचे हजरत आयशा सिद्दीका रदियल्लाहु तआला अन्हा ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से 2210 हदीसों रिवायत फरमाई जो तादाद के ऐतबार से हजरत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु के बाद तमाम सहाबए-किराम में सबसे ज़ा़इद हैं, आप ग़ैर मामूली ज़हीन और बेहतरीन कुव्वते हाफ़िज़ा की मालिक थीं, कम उमरी में निकाह के ही सबब आपको हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इक्तिसाबे इल्म व फ़ज़ल का सबसे ज़्यादा मौक़ा मिला, जिसकी बदौलत आपने एक माहिरे फ़न मोअल्लिमा, एक बालिग़ नज़र फ़कीहा, बाकमाल मुहद्दिदा का किरदार अदा किया।



हजरत अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि: सहाबए-किराम को कभी कोई ऐसी मुश्किल पेश न आई जिसके बारे में हजरत आयशा सिद्दीका रदियल्लाहु तआला अन्हा से पूछा हो, और उनके पास उसकी कोई मालूमात न हो, नीज इमाम जोहरी फरमाते हैं कि हजरत आयशा सिद्दीका रदियल्लाहु अन्हा तमाम लोगों में सबसे ज्यादा इल्म वाली थीं, बड़े बड़े सहाबा उनसे मसाइल पूछा करते थे।

हजरत आयशा सिद्दीका रदियल्लाहु तआला अन्हा की शक्ल में मुस्लिम औरतों को शरई मसाइल की तालीमो तफहीम के लिये एक ऐसी कामिल मोअल्लिमा मिल गई जिसने उनके बारीक तर पोशीदा मसाइल उन्हें वाजेह तौर पर जहन नशीन करा दिये, क्योंकि औरतों की अक्सरियत ऐसी थी जो फितरतन बाज शरई मसाइल के बारे में नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल करने में शर्म महसूस करती थी, खास तौर पर वह मसाइल जो औरतों के साथ मख्सूस हैं, चुनाँचे अंसार की औरतें सीधे हजरत आयशा रदियल्लाहु अन्हा के पास आतीं और उनसे दीन के मसाइल मसलन् हैंज, निफास, जिनाबत और वजीफ़ जौजियत वगैरह के एहकाम के बारे सवाल किया करती थीं।

तमाम अजवाजे मुतहहरात में सिर्फ हजरत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा ही कुँवारी थीं, दीगर अजवाज या तो बेवा, मुतल्लका या फिर शौहर दीदा थीं, यह कैसे हो सकता था कि जिसके सद्के में सारी कायनात तमाम तर नेअमतों से बहरावर हो रही है उसके हिस्से में कोई कुँवारी औरत न आये।

इस निकाह का एक मक़सद यह भी था कि रिसालतो ख़िलाफ़त के दरमियान क़राबत दारी का एक और मजबूत रिश्ता कायम हो जाये जिसके ज़रिये इस्लाम की मज़ीद तक्वियत मिली और यही मक़सद उम्मुल मोमेनीन सय्यदा, हफ़्सा बिनते उमर रदियल्लाहु अन्हा से निकाह में कार फ़रमा था।

## एक नुक्ते की बात

अगर उस वक़्त इस तरह का निकाह अरब में मायूब होता तो सबसे पहले कुप्फ़ारे कुरैश जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अज़ली दुश्मन और बदतरीन मुख़ालिफ़ थे, वह इस मौक़े को कैसे अपने हाथ से जाने देते? उन्होंने इस निकाह पर क्यों ऐतराज़ नहीं किया? ज़ाहिर है सिर्फ़ इस लिये कि उस वक़्त समाज में इतनी कम उम्र लड़कियों का निकाह आम बात थी और हुज़ूर के बदतरीन दुश्मनों के नज़दीक भी इसमें ऐब का कोई शाएबा तक न था, जिसको बुनियाद बनाकर वह आप को मतऊन करते या आपकी साफ़ी शफ़ाफ़ शख़्सियत को गर्द आलूद करते।

मज़हका खेज़ बात यह है कि ऐसा शर्मनाक इल्ज़ाम उस ज़ाते बाबरकत पे लगाया जा रहा है जिसने अपना पहला निकाह ऐन 25 साल के क़ाबिले रश्क अय्यामे शबाब में दो-दो शादियाँ कर चुकी बच्चों वाली एक 40 साला बेवा औरत से किया और अपनी पूरी ज़वानी उसी उम्र दराज़ ख़ातून के साथ गुज़ार दी, यहाँ तक कि आपकी उम्र 50 साल से ज़ाइद हो गई, जब आप की पहली जौज़ा मोहतरमा उम्मुल मोमेनीन हजरत ख़दीज़तुल क़ुबरा रदियल्लाहु तआला अन्हा का विसाल हो गया, उसके बाद ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूसरे सभी निकाह किये, वह भी अपनी उम्र के 50 साल गुज़र जाने के बाद! जो अमूमन बुढ़ापे की उम्र होती है, उम्मुल मोमेनीन हजरत आयशा सिद्दीका रदियल्लाहु तआला अन्हा के सिवा आपने जिन ख़वातीन से भी निकाह किये वह सब की सब बेवा, मुतल्लका और बाज़ ज़ईफ़ुल उम्र थी अगर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन मोतअदिद निकाहों में या हजरत आयशा सिद्दीका से निकाह में नफ़्सानी ख़्वाहिशात की तकमील का मंशा कार फ़रमा होता तो फिर ऐन अय्यामे शबाब में एक 40 साला बेवा औरत से क्यों निकाह करते? चलो एक निकाह बेवा से कर लिया



मगर बाकी सारे निकाह तो कुँवारी और नौजवान औरतों से कर सकते थे आखिर बेवाओं और मोअम्मर ख्वातीन से क्यों किया? क्या कोई मामूली-सा शऊर रखने वाला इंसान भी इसे ख्वाहिशाते नफ्स की तकमील का नाम दे सकता है? यह तो ऐसा ही है जैसे कोई कोर चश्म ऐन दोपहर को शबे तार साबित करने की जिद करने लगे।

तारीख़ गवाह है कि सहाबए-किराम हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक इशारे-अबरू पर अपना सब कुछ कुरबान कर देने में फ़ख़ महसूस करते थे, अगर आप किसी भी ख़ूबरू, जवान और कुँवारी लड़की से शादी का इशारा करते तो यकीनन उनमें से कोई ज़रा भी तअम्मुल न करता बल्कि आपकी ख्वाहिश की तकमील में फ़ख़ महसूस करता, इसके बावजूद आखिर क्या वजह थी कि आपने शबाब में शादी न की और की तो क्यों कुँवारियों को छोड़ कर बेवाओं को तरजीह दी, हत्ताकि मुशरेकीने मक्का ने भी दावते हक़ से दस्तबरदार हो जाने की शर्त पर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अरब की सबसे ख़ूबसूरत लड़की से निकाह की पेशकश की थी, मुख़ालेफीने इस्लाम हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस तर्ज़े अमल क्या जवाब देंगे?

इस नुक्ता पर अदना ग़ौरी फ़िक्क से यह हकीक़त सूरज से भी ज़्यादा रोशन हो जाती है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जितनी भी शादियाँ की वह नफ़सानियात के पेशे नज़र न थीं बल्कि तमाम शादियाँ देने इस्लाम की पेश रफ़्त, अपने साथियों के साथ मुवद्दतो मोहब्बत के रिश्ता की इस्तवारी और दीगर दीनी, मुआशरती और सियासी मसालेह जैसे बुलन्द मकासिद के तहत की गई थीं।

चुनौचे तारीख़ी औराक़ शाहिद है कि जंगे बदर व ओहद में सैकड़ों की तादाद में सहाबए-किराम शहीद हुये, नतीजे के तौर पर उनकी बेवायें और बच्चे यतीम होकर बेयारो मदद्गार हो गये, इस परेशान कुन मसअला

को हल करने के लिये नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबए-किराम को बेवाओं से निकाह करने का मशवरा दिया और लोगों को अमली तरगीब देने के लिये पहले खुद आपने हज़रत सौदा रदियल्लाहु तआला अन्हा, हज़रत उम्मे सलमा रदियल्लाहु तआला अन्हा, हज़रत ज़ैनब बित्ते ख़ुज़ैमा रदियल्लाहु तआला अन्हा, से मुख़्तलिफ़ औकात में निकाह किये, आपके इस हुस्ने अमल से मुतास्सिर होकर बहुत से सहाबए-किराम रिज़वानुल्लाहे तआला अन्हुम ने बेवाओं से निकाह किये जिसके सबब कई बरबाद और बेसहारा घराने दोबारा आबाद हो गये।

अरबों का यह दस्तूर था कि जो शख्स उनका दामाद बन जाता उसके ख़िलाफ़ जंग करना अपनी शानो अज़मत के ख़िलाफ़ समझते थे, हज़रत अबू सुफ़्यान रदियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम लाने से कबल हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शदीद तरीन मुख़ालेफीन में से थे मगर जब उनकी बेटी उम्मे हबीबा रदियल्लाहु तआला अन्हा से हुजूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निकाह फ़रमा लिया तो यह दुशमनी कम हो गई, इसका वाक्या यह कि उम्मे हबीबा रदियल्लाहु तआला अन्हा शुरू में ही मुसलमान होकर अपने मुसलमान शौहर के साथ हब्शा हिज़रत कर गई, वहाँ उनका ख़ाविन्द नसरानी हो गया, हज़रत उम्मे हबीबा रदियल्लाहु तआला अन्हा ने इससे जुदाई इख़्तियार कर ली और बहुत सी मुश्किलात का सामना करते हुए घर पहुँची, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी दिल जोई फ़रमाई और बादशाहे हब्शा के ज़रिये उनसे निकाह किया।

हज़रत जुवैरिया रदियल्लाहु अन्हा का वालिद क़बीलए मुस्तलक़ का सरदार था, यह क़बीला मक्का और मदीना मुनव्वरा के दरमियान वाके था, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस क़बीले से जिहाद किया जिसमें उनका सरदार मारा गया, हज़रत जुवैरिया



रदियल्लाहु अन्हा कैद होकर एक सहाबीए-रसूल के हिस्से में आयीं, सहाबए-किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम ने मशवरा कर के सरदार की बेटी का निकाह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कर दिया और इस निकाह की बरकत से उस कबीले के सौ घराने आज़ाद हुये और सब के सब मुसलमान हो गये।

खैबर की लड़ाई में यहूदी सरदार की बेटी हज़रत सफिया रदियल्लाहु तआला अन्हा कैद होकर एक सहाबी के हिस्से में आयीं, सहाबए-किराम रिज़वानुल्लाहु तआला अन्हुम ने मशवरे से उनका भी निकाह हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से करा दिया, इसी तरह मैमूना रदियल्लाहु तआला अन्हा से निकाह की वजह से नब्द के इलाके में इस्लाम फैला, इन शादियों का मक़सद भी यही था कि लोग हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के करीब आ सकें और अखलाके नब्बी का मुशाहिदा कर सकें ताकि उन्हें राहे हिदायत नसीब हो। हज़रत ज़ैनब बिनते जहश रदियल्लाहु तआला अन्हा से निकाह मुतबन्ना की रस्म तोड़ने के लिये किया, हज़रत ज़ैद रदियल्लाहु तआला अन्हु हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुँह बोले बेटे थे, उनका निकाह हज़रत ज़ैनब बिनते जहश से हुआ, आपस में निबाह न होने पर हज़रत ज़ैद रदियल्लाहु तआला अन्हु ने उन्हें तलाक़ दे दी फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे निकाह कर लिया और यह साबित फ़रमा दिया कि मुतबन्ना हकीकी बेटे जैसा हरगिज़ नहीं होता, गर्ज़ कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हर निकाह का एक मक़सद था जो मशीअते इलाही के तहत मअरिज़े वुजूद में आया।

दर हकीक़त दुश्मनाने इस्लाम ने रोज़े अव्वल ही से पैग़म्बरे इस्लाम के बारे में शुक्कू शूबहात का यह सिलसिला शुरू कर दिया था, आपकी रिसालत को तानो तशनी का निशाना बनाया, आपके मोअज़िज़ात पर ऐब जोई की और तरह तरह की बोहतान तराज़ी की

ताकि मुसलमान अपने दीन के बारे में शुक्कू शूबहात का शिकार हो जायें और आपकी रिसालत को मानने से बाज़ रहें, मालूम हुआ कि मुख़ालेफीने इस्लाम की इस ज़हर अफ़शानी और हरज़ा सिराई का वाहिद सबब इस्लाम और बानीये इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से देरीना बुग़्जो इनाद और मज़हबी मुनाफ़िरत है जो उन्हें इस तरह की लायानी और ग़ैर माकूल बातों पर उभारती रहती है फिर तो उन पर हिज़्यान का वह दौरा पड़ता है जिससे मामूली सा शऊर रखने वाला इंसान भी इनके अक्लो ख़िरद पर मातम करने लगता है, मौलाये करीम सबको अक्ले सलीम अता फ़रमाये। (आमीन)■

## रज़ा वैल्यु प्लस एण्ड लिमरा हर्बल्स

ज़रूरत है

स्टॉकिस्ट, डिस्ट्रिब्यूटर और सेल्स एग्जीक्यूटिव की

रज़ा वैल्यु प्लस अपने आधीन लिमरा हर्बल द्वारा सौ प्रतिशत हर्बल व जाईज तत्वों द्वारा तैयार सभी प्रकार के हर्बल, आयुर्वेदिक दवाएँ एवं कास्मेटिक वस्तुएँ जैसे तेल, शैम्पू, क्रीम एवं घरेलू दैनिक उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करती है, साथ ही ये कंपनी किडनी Stone किट, पुरुष नपुंसकता किट, स्त्री बांझपन किट, हेपेटाइटिस बी किट का भी निर्माण करती है, कम्पनी की ये दवाएँ अधिक लाभकारी है, कम्पनी के लिए सभी शहरों एवं राज्यों में स्टॉकिस्ट, डिस्ट्रिब्यूटर सेल्स एग्जीक्यूटिव, विक्रेता की अवश्याकता है, बेहतर लाभ पाने के लिए यह एक सुनहरा अवसर है। **शीघ्र सम्पर्क करें:**

**डॉ. आदिल एम खान**  
**AZHARI HOSPITAL**

Padrauna, Kushi Nagar, U.P.

मोबाईल: 9936131988, 7985063850

व्हाट्स एप : 9696919892



# अच्छे नाम रखने की फज़ीलत

अज़: हाफ़िज़ मुहम्मद हाशिम कादरी

हर इंसान की यह खाहिश होती है कि अल्लाह तअला उसे वारिस अता फ़रमाये यानी औलाद जो नेक व सालेह हो और उस से ख़ानदान की शान बुलन्द हो, उसके लिए शादी होने के फ़ौरन बाद अल्लाह के हुज़ूर दुआयें मांगी जाने लगती हैं और जैसा के क़ुरआन मजीद में इरशाद हुआ है कि पैग़म्बरों ने जिस तरह अल्लाह से औलाद जैसी नेअमते इलाही के हुसूल के लिये अपना दस्ते सवाल उठाओ मैं तुम्हारी झोली उस नेअमत से भर दूंगा।

क़ुरआन पाक में औलाद की दुआ के लिये कई जगह ज़िक्र मौजूद है, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ “इलाही मुझको लाइक़ औलाद अता फ़रमा” (सूरत नम्बर 19, आयात नम्बर 99)

रब्बे करीम ने इरशाद फ़रमाया “तो हम ने उसे खुशख़बरी सुनाई एक अक़लमन्द लड़के की” (सूराह-19, अयत-100)

हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से दुआ की “ऐ मेरे रब मुझे अपने पास से पाकीज़ा औलाद अता फ़रमा, बेशक तू दुआ सुनने वाला है” (सूराह-आल इमरान, अयत-37)

दुसरी जगह क़ुरआन में यूँ दुआए ज़करिया अलैहिस्सलाम मज़कूर है “अल्लाह हमें वारिस अता फ़रमा जो मेरा काम उठा ले मेरा भी वारिस हो और औलादे याकूब के ख़ानदान का भी जानशीन हो और ऐ मेरे रब तू उसे मक़बूल बंदा बना ले” (सूराह मरयम, अयत नं०-4,5)

मालूम हुआ के बेटे की दुआ करना सुन्नते अम्बिया है मगर नफ़स के लिये नहीं बल्के रब के लिये

कि वह दीनदार हो, अल्लाह का नेक बंदा हो, नेक और सालेह हो, ताके हमें कब्र में उसकी नेकियों से आराम पहुँचे।

लिहाज़ा अल्लाह ने खुशख़बरी सुनाई “ऐ ज़करिया! हम तुझे एक लड़के की खुशख़बरी देते हैं जिस का नाम याहया है, हमने इससे पहले इस नाम का हम नाम नहीं किया।” (सूराह नं०-19, अयत नं०-6)

अल्लाह तअला ने ना सिर्फ़ उनकी दुआ कबूल फ़रमायी बल्कि उनके लड़के के नाम की तज़वीज़ भी फ़रमायी।

**औलाद लड़का हो या लड़की ये अल्लाह की रहमत है:**

इस्लाम से पहले अरब में लड़की की पैदाईश को बहुत बुरा माना जाता था और उसको ज़िन्दा दर गोर कर दिया जाता था, आज भी तरक्की याफ़ता कहलाने वाले इस दौर के बावजूद हिन्दुस्तानी मुआशरे में लड़की की पैदाईश पर इज़हारे अफ़सोस किया जाता है, मज़हबे इस्लाम ने इसको सख़्तों से मना किया और ना पसंद किया है।

**अच्छे नाम रखने और बुरे नामों से बचने की फ़ज़ीलत:**

अल्लाह पाक जो अपने नाम से ही यक़ता और बेमिस्ल है जिस ने ना सिर्फ़ इस कायनाते रंग व बू को पैदा फ़रमाया बल्कि इस कायनात में हुस्न व ख़ूबसूरती के सब से आला नमूना इंसान को पैदा फ़रमाया और फिर उसे सब से पहले ख़ूबसूरत नाम आदम से नवाज़ा और इस तरह कायनाते अरज़ी के हर ज़र्रे की इब्तेदा नाम से हुई, इंसानी फ़ितरत का तज़ाज़ा ये है कि हर चीज़ में हुस्न व ज़माल को पेशे-नज़र रखा जाये।

इसलिये अल्लाह पाक ने इंसान को बेहतरीन



साख्त और उम्दा-शाम्मा अता फ़रमाया "हम ने इंसान को उम्दा साख्त में पैदा किया।"

लिहाज़ा वालिदैन का फ़र्ज़ बनता है कि अपने बच्चों की निगेहदाश्त और परवरिश अच्छे अन्दाज़ में करें, वहीं यह भी ज़रूरी है कि बच्चों के नाम भी अच्छे रखें, अच्छे नाम अच्छी अलामत का मज़हर होते हैं और अच्छे नाम अल्लाह को पसंदीदा हैं। हमारे आका सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अच्छे नाम रखने और बुरे नामों से गुरेज़ करने की बार-बार तल्कीन फ़रमायी है और यही बात इस्लामी तालीमात में बुन्यादी हैसियत रखती है, हुज़ुरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अल्लाह तअला को दो नाम बहुत पसंद हैं और वह दो नाम "अब्दुल्लाह" और "अब्दुर रहमान" हैं, इसलिये यह बात हमेशा पेशे नज़र रखें के नाम ख़ुबसूरत बमाना और हर लिहाज़ से ज़ामेअ हो और पुकारते वक़्त पूरा नाम पुकारा जाये, इस लिये के नाम ही वह पहचान है जो एक को दूसरे इंसान से अलाहिदा पहचान देता है और उस को एक दूसरे पर फ़ज़ीलत अता करता है और इंसान की पूरी ज़िन्दगी पर असर अन्दाज़ होता है।

अल्लाह तअला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पहले नामों ही की तालीम दी जैसा कि इरशादे बारी तअला है। "और अल्लाह तअला ने आदम को तमाम (अशिया) के नाम सिखाये फिर मलाइका पर पेश करके फ़रमाया सच्चे होतो इनके नाम तो बताओ" (सूरह-2, अयत नं०-30,31)

**अच्छे नामों के असरात सीरते नब्वी की रौशनी में:**

इरशादे रब्बानी है "कहदो के तुम (अल्लह तअला को) अल्लाह तअला (के नामों से) पुकारो या रहमान (के नाम से) पुकारो सब उस के अच्छे नाम हैं।" (सूरह नं०-17, अयत नं०-109)

इस से ये बात ज़ाहिर होती है कि रब्बे करीम हमें अच्छे नामों की तल्कीन फ़रमा रहा है, अच्छे नाम

रखें जायें, अच्छे नाम से पुकारना सुन्नते इलाहिया है, हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम की औलाद के लिये दुआ का ज़िक्र क़ुरआन में मौजूद है। अल्लाह ने ना सिर्फ़ औलाद की दुआ क़बूल फ़रमाई बल्कि औलाद अता फ़रमाई और उसका नाम भी तजवीज़ फ़रमाया "ऐ ज़करिया हम तुझको खुशी सुनाते हैं, एक लड़के की जिस का नाम यहिया है, इससे पहले हमने इस नाम का कोई ना किया।" (सूरह मरयम 19, अयत नं०-6)

हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम की बहुत सी फ़ज़ीलतें क़ुरआने पाक में बयान हुई हैं। ये कि अल्लाह तअला ने खुद नाम रखा, वालिदैन के सुपूर्द ना किया, ये आप की ख़ुसूसियत है, ये नाम किसी और को ना पहले मिला ना बाद में, यानी अल्लाह तअला ने यह नाम किसी दूसरे आदमी का ना रखा, अल्लाह तअला ने ज़करिया अलैहिस्सलाम को ख़ुशख़बरी सुनाई और उनका नाम यहिया रख दिया।

ख़याल रहे के हमारे बच्चों के नाम उनके वालिदैन रखते हैं, वह भी पैदाईश के सातवें दिन बाद मगर हमारे आका सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम और हज़रते यहिया अलैहिस्सलाम का नाम खुद रब तअला ने रखा, वह भी विलादत से पहले।

हमारे बच्चों के नाम उस के ख़िलाफ़ होते हैं, अक्सर नाम सही नहीं होते, गुलत भी होते हैं, काले आदमी का नाम यूसुफ़, बुज़दिल का नाम शेर बहादुर, बहरे का नाम समीउल्लाह, अंधे का नाम नूरुल्लाह रख दिये जाते हैं, मगर रब तअला के रखे हुये नाम बिल्कुल सही और नाम के मुताबिक़ काम भी होते हैं, रब ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम मुहम्मद रखा यानी बहुत सराहा हुआ, तारीफ़ किया हुआ, आज भी इस नाम की बहार देखी जा रही है कि हर जगह हर वक़्त हर ज़बान में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तारीफ़ें हो रही हैं, इसी तरह रब तअला ने हज़रत यहिया का नाम रखा यानी ज़िन्दगी बख़्शाने वाले या जिन्दा



वह जिन्दा हैं और ताक्यामत जिन्दगी बख्शेंगे, चुनाँचे हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम बेमिसाल तारिके दुनिया और आबिदो जाहिद हुए, नबीयों के नाम अल्लाह तअला ने रखे और और वही उन के नाम व काम का कफ़ील है, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपनी कौम से हमारे हुज़ूर के बारे में फ़रमाया "उनका इस्म शरीफ अहमद है और यहिया अलैहिस्सलाम उन रसूलों में से हैं जिन्हें बचपन ही से नबूवत मिली" ये अल्लाह तअला के नाम रखने की बरकत से हुआ।

### अच्छे नामों के असरात:

आज कल आम मिज़ाज बनता जा रहा है कि बच्चों के नामों में जिद्दत हो, ऐसा नाम रखा जाये कि किसी और का नाम ना हो, ख़्वाह उस का मफ़हूम और माना कुछ भी निकलता हो, हालाँकि प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वाल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि "अम्बिया अलैहिस्सल के नामों पर अपने बच्चो के नाम रखो" (अबू दाउद)

इसलिये हुज़ुरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने आख़री साहबज़ादे का नाम इब्राहीम रखा था जो हज़रते मारिया रदियल्लाहो तअला अन्हा के बतने मुबारक से पैदा हुये थे, एक हदीसे पाक में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशादे पाक है "क्यामत के दिन तुम्हें तुम्हारे और तुम्हारे आबा के नाम से पुकारा जायेगा, लिहाज़ा तुम अच्छे नाम रखा करो।" (मुसन्दे अहमद)

रब तअला ने हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम और हमारे आका सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम रखा इस नाम का पहले कोई ना था (यहिया, अहमद) अल्लाह के रसूल मोहसिने काइनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी हज़रत इमामे हुसैन रदियल्लाहो तअला अन्हा की पैदाईश के बाद आप के कान में अज़ान दी, मुँह में लुआबे दहन डाला और आप के लिये दुआ फ़रमायी फिर सातवे दिन आप का नाम हुसैन रखा और

अक़ीका किया, हज़रते इमामे हुसैन की कुनियत अबू अब्दुल्लाह और लक़ब सिबते रसूल व रैहाने रसूल है।

हदीसे पाक में है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हज़रत हारून अलैहिस्सलाम ने अपने बेटों का नाम शब्बर और शब्बीर रखा और मैंने अपने बेटों का नाम हसन और हुसैन रखा। (सवाइके मोहरिका, स 10-118)

सुरयानी ज़बान में शब्बीर और शब्बर और अरबी ज़बान में हसन और हुसैन दोनों के माने एक हैं, इन्हे अरबी मुज़फ़िल से रिवायत करते हैं कि अल्लाह तअला ने ये दोनों नाम पोशिदा रखे यहाँ तक कि नबीए अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वाल्लम ने अपने नवासों का नाम हसन और हुसैन रखा। (असरफ़ुल मोव्यद, स 10-70)

अहादीस में अच्छे नाम जिस से अबदियत का इज़हार हो उसे अच्छा करार दिया गया है, चुनाँचे अब्दुल्लाह और अब्दुरहमान अल्लाह और रसूल लल्लह के नज़्दीक पसन्दीदा नाम हैं। (मुस्लिम शरीफ़)

### वालिदैन पर औलाद के हुक्क

अच्छा नाम रखना हुक्के औलाद में से एक है, जब बच्चा पैदा हो फ़ौरन दाहिने कान में अज़ान और बाई जानिब अक़ामत कहे कि ज़िल्ले शैतान व उम्मे सिबयान से बचेगा, हर बच्चे का नाम रखे, हदीसे पाक में है कच्चे बच्चे (जो कम दिनों में गिर जायें) उनका का भी नाम रखे, नाम ना रखने पर वह बच्चा अल्लाह अज़्ज़ व जल के यहाँ शिकायत करेगा, बुरा नाम ना रखे कि फ़ाले बद है, अब्दुल्लाह, अब्दुरहमान, अहमद वगैरा रखे, अम्बियाए इकराम या जो अपने बुर्जगो में जो नेक गुज़रे हों उन के नाम पर रखे कि बाइसे बरकत है, खुसूसन वह नाम जो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम हैं, उस मुबारक नाम की बेपनाह बरकतें दुनिया व अख़िरत में बच्चों के काम आती हैं।

बुरे नामो को अच्छे नामो से बदलना



हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अच्छे नाम रखने का इहतमाम फरमाते थे बल्कि अगर नामो के मानों में अच्छाई ना हों या उन में शुबहा हो तो उसे बदल दिया करते थे, हज़रते जैनब बिनते अबी सलमा रदिल्लाह तअला अन्हा का नाम " बिर " था, जिस के माने नेकोकार हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन का नाम इस लिये तब्दील फरमा दिया कि उसमें अपनी तारीफ का पहलू निकलता है, उस की वजह से नफ़स कहीं धोका ना दे दे, लिहाज़ा आप का नाम जैनब रखा, इसी तरह एक सहाबी का नाम "हुज़्ज" था, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन का नाम इस लिये बदल दिया कि उस के माने सख्त ज़मीन के होते हैं और "सुहैल " नाम रख दिया, जिसके माने नर्म होने के हैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अच्छे नाम सुनकर खुश होते थे और उस के असरात के मुतमन्नी होते थे, सुलेह हुदैबिया के मौके पर मामला उलझा हुआ था, कुरैश की जानिब से सालिसी के लिये सुहैल आये तो हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दरयाफ्त फरमाया के कौन है, बताया गया के सुहैल हैं, हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह अज़्ज़ वज़ल ने हमारे मामले को आसान कर दिया और फिर उन्हीं के ज़रिये सुलेह हुदैबिया का तारीख़ साज़ मुआहिदा बजूद में आया जिस को रब तअला ने "फतहे मोबीन " से ताबीर किया।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अक्सर व बेशतर सहाबाये इकराम रदिल्लाह तअला अन्हुम के नाम तब्दील फरमाये हैं ताकि नये नाम और इस्लाम लाने से उन के किरदार में नामो के मआनी के लिहाज़ से तब्दीली और बरकत शामिल हो जाये और वह सर ता पा इस्लामी रंग में ढल जायें और नेकी का मुक्का बन जायें, सीरत की किताबों में बहुत से बाकिआत मौजूद हैं, चंद मुलाहिज़ा फरमायें एक सहाबीए रसूल रदिल्लाह तअला अन्हा का नाम अस्वद (काला, गर्दआलूद,

तारीक) से बदल कर अबयज़ ( सफ़ेद ) रख दिया, इसी तरह एक सहाबी का नाम अलजब्बार ( जबर व जुल्म करने वाला ) से बदल कर अब्दुल जब्बार ( जब्बार का बंदा ) रख दिया, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रदिल्लाह तअला अन्हा का नाम अब्दुल काबा ( काबे का बंदा ) से बदल कर अब्दुल्लाह ( अल्लाह का बंदा ) रख दिया, मशहूर सहाबी हज़रत अबू हु़रैरा रदिल्लाह तअला अन्हा का नाम अब्दुशशम्स से बदलकर अब्दुर्रहमान रख दिया, इस तरह हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आंसी, उतला, हकम, गुराब, हुबाब के नाम तब्दील फरमाये और अहराम को जुआ, आसिया को जमीला और बूरा जैनब से बदल दिया। ( सुनने अबू दाउद )

हज़रत उमरे फारूक़ रदिल्लाह तअला अन्हा की एक बेटी का नाम आसिया था जिसे हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदल कर जमीला रख दिया ( मुस्लिम शरीफ )

ये बात ज़हन-शीन रहे के सही और दुरूस्त नाम ना रखने से बच्चे की शख्सियत पर अच्छा असर नहीं पड़ता, इसलिये नाम ऐसा रखना चाहिये के जब बच्चा बड़ा हो तो उसे अपने नाम पर फ़क्र महसूस हो और फ़क्र उस वक़्त महसूस होगा कि जब उसका अच्छा इस्लामी नाम रखा जायगा, उस ज़िम्न में इरशादे रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम है " जिस शख्स के तीन बेटे हों और वह उन में से किसी का नाम मुहम्मद ना रखे तो वह बिलयकीन ( इमानो इश्क ) के तकाज़े से जाहिल है। ( तिबरानी शरीफ )

अल्लाह तअला के नज़दीक़ क्यामत के दिन बदतरीन नामों में से उस शख़श का नाम होगा जिसको शहनशाह कहते होंगे, अल्लाह के नज़दीक़ बेहतरीन नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान और ज़ियादा अच्छे नाम हारिस और हुमाम, अहमद, मुहम्मद हैं, जबकि बदतरीन नाम हर्ब और मुराह होंगे ( अबू दाउद )

हज़रत शेरैह बिन हानी रदीयल्लाहो अन्हु



फरमाते हैं कि मेरे वालिद अपनी कौम के साथ नबीए करीम सल्लललाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत अक़दस में हाज़िर हुए तो आपने उनसे उनका नाम दरयाफ़्त किया, उन्होंने जवाब में अर्ज किया कि मेरा नाम अबुलहिकम है, उस पर हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हिकम ख़ुदा के क़ब्ज़ा व इस्तिथार में है, तुमने अबुल हिकम कुनियत क्यों मुक़र्रर की है? उन्होंने कहा कि मेरी कौम में जब भी किसी मामले में इस्तिलाफ़ होता है तो फ़रिक्क़ेन मेरे पास फ़ैसले के लिए आते हैं और मैं उन के दरमियान ऐसा फ़ैसला करदेता हूँ कि वो तमाम राज़ी हो जाते हैं और मेरे हुक्म को तसलीम कर लेते हैं, उस पर हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया “लोगों के दरमियान फ़ैसला और हिकम करना बहुत अच्छी बात है तुम्हारे कितने बच्चे हैं? उन्होंने कहा तीन बेट: शौरैह, मुस्लिम, अब्दुल्लाह, हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बस आज से तुम्हारी कुनियत अबू शौरैह है। (निसई)

इस से यह बात मालूम होती है कि नाम की मानिबयत ज़िन्दगी पर असर अन्दाज़ होती है, अच्छी उर्फ़ियत अच्छे नाम से किरदार और शख़्सियत पर अच्छा असर पड़ता है और बुरे नाम, बुरी उर्फ़ियत से बुरा असर होता है, जैसा कि अबू ज़हल की उर्फ़ियत (जिहालत का बाप) उसे सारी ज़िन्दगी हल्का बग़ौशे इस्लाम होने से दूर रखा, हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में एक सहाबी हाज़िर हुए हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने उनका नाम पूछा तो बताया गया हुज़न यानि पथरीली ज़मीन, हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने यह नाम नपसंद फ़रमाया और कहा अपना नाम सहल यानी नर्म ज़मीन रख लो, मगर उन्होंने नाम तबदील न किया, कहा कि यह मेरे बाप ने रखा था, उन सहाबी के बक़ौल उनके ख़ानदान में सख़्ती बराबर कायम रही, यह नाम का असर है। (बुख़ारी शरीफ़)

हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना मुनव्वरा जिसे “यसरब” कहते थे उसके माना में जबरो ज़ियादती और इल्ज़ाम का मफ़हूम पाया जाता है। इसलिये हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने उसका नाम ताबा और तय्यबा रखा, हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने ताकीद की “यसरब” को तय्यबा (खुशगवार और उमदा) कहा जाय, मदीना का माना शहर के आये हैं, चूँकि यह मदीनतुरसूल है इसलिये उसका नाम ही मदीना पड़ गया, अब अगर बग़ैर किसी इजाफ़त के मदीना कहा जाये तो उस से मुराद मदीनतुरसूल, मदीना तय्यबा ही होगा, मदीने में बुख़ार की बीमारी आम थी। बड़ी शिद्दत का बुख़ार होता था, अक्सर आने वाले इसमें मुब्तिला होजाते थे, नये आने वाले उस की ज़ुद में आजाते, जिसकी वजह से जल्द ही वहाँ से रुख़सत होना चाहते थे, अल्लाह के रसूल सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने मदीने की तकलीफ़ें झेलने पर जन्नत की बशारत सुनाई और उसका नाम तय्यबा रख दिया तो नाम बदलने की बरकत से मदीना मुनव्वरा की फ़िज़ा अल्लाह के रहम व करम से खुशगवार हो गई, अल्लाह के रसूल सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने ख़्वाब में देखा कि एक काली कालुटी औरत मदीना मुनव्वरा से निकल कर हज़फ़ा जहाँ यहूदियों की आबादी थी उस की तरफ़ चली गई, हुज़ूर सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह बीमारी जो हवा के ख़राब होने से फैलती थी एक वबा थी जो वहाँ से मुन्ताकिल हो गई, इस लिये बहुत से उलमा, मुफ़त्सरीन, शारेहीन ने यह लिखा है कि मदीना मुनव्वरा को अब “यसरब” कहना सही नहीं है।

### नाम रखने में हद से गुज़रना

अक्सर यह बात देखने में आती है कि जब किसी के यहां बच्चा या बच्ची पैदा होती है तो सब से पहले वालिदैन को जिस मरहले का सामना करना पड़ता है वह बच्चे या बच्ची के नाम रखने का होता है जिसकी



रौशनी में बच्चा सब के लिये काबिले मुहब्बत, काबिले तबज्जोह और पुरकशिश बन सके और उसके नाम से खानदान की इज्जत व वफ़ा बढ़े, खानदान भर में हर फर्द अपनी अपनी मरजी का नाम तजवीज़ करता है लेकिन जो नाम तजवीज़ होता है, उसके माना पर गौर नहीं किया जाता हालांकि किसी भी नाम के असरात उसके माने के अन्दर पोशीदा होते हैं और माना ही शख़्सी किरदार की तशकील में अहम रोल अदा करते हैं, इसी तरह उसके नाम से ही मालूम होता है कि बच्चे या बच्ची किस मज़हब से ताअल्लुक रखते हैं? किस कौम से ताअल्लुक रखते हैं और यह कि उसका नाम शरई, इस्लामी है या नहीं और यह कि यह नाम उस बच्चे के लिये मौजू भी है या नहीं। इसीलिये मज़हबे इस्लाम ने माना के ऐतबार से अच्छे नाम रखने का हुक्म दिया ताकि बच्चे की ज़िन्दगी की शुरूआत की पहली ईंट दुरुस्त तौर पर रखी जाये, नाम रखने में गुलू की हद तक यकसाँ वज़न का ख़याल रखा जाता है यानी सारे बच्चों और बच्चियों के नाम हम वज़न हों, हालांकि नामों के सिलसिले में यह इल्तिज़ाम गौर ज़रूरी है, कभी कभी इस की पाबन्दी भौंडी मानवियत पैदा कर देती है, एक साहब के चन्द लड़के हैं, एक नाम शमीम है, दूसरे का नाम तसलीम, तीसरे का नाम करीम है और जब चौथा बच्चा पैदा हुआ तो उन्हें ये ख़्बत सवार हुआ कि इस बच्चे का नाम कुरआन पाक से उसी वज़न पर रखेंगे, चुनाँचे बहुत तलाश करने के बाद उन्हें सूरए कलम में "ज़नीम" लफ़्ज़ मिल गया, उन्होंने बग़ैर माने पर गौर किये हम वज़न नाम ज़नीम रख दिया, कुछ दिनों के बाद उन के यहाँ एक आलिमे दीन मेहमान हुये, उन्होंने मेज़बान को अपने लाडले बच्चे को "ज़नीम" कह कर पुकारते हुये सुना, इस पर उन्हें बड़ा ताअज्जुब हुआ कि बाप अपने बेटे को खुद "ज़नीम" कह रहा है, ताअज्जुब की बात है, लेकिन तहकीक के बाद मालूम हुआ कि इस बच्चे का नाम ही ज़नीम है।

चुनाँचे आलिम साहब ने दरयाफ़्त किया कि आख़िर आप ने यह नाम क्यों रखा है? उन्होंने बड़ी मुसरत के साथ फ़रमाया कि असल में मैंने अपने इस बच्चे के नाम के मुताअल्लुक यह सोचा कि अपने दीगर बच्चों के नामों पर हमवज़न एक ही तरह का नाम हो और तमन्ना यह भी थी कि वह नाम कुरआन पाक से हो, बहुत तलाश के बाद यह नाम सूरह कलम में मुश्रे मिल गया और मैंने यह नाम रख दिया, मेहमान आलिम ने कहा: इब्लीस, अबू-लहब और फिरऔन भी तो कुरआन में हैं, क्या यह नाम कोई रखना पसन्द करेगा? बिलआख़िर जब कुरआन में उस नाम का माना देखा गया तो "ज़नीम" का माना "हराम ज़ादे" का मिला, मेहमान आलिम ने कहा कि क्या कोई यह सुनना पसन्द भी कर सकता है? मेज़बान को बड़ी पशेमानी हुई और उस बच्चे का नाम बदल दिया गया, निसार अशरफ़ नाम रखा गया, आज कल नाम रखने में हम से बहुत ज़्यादा गुलतियाँ हो रही हैं, जिस से हमारी तहज़ीब भी मुतआस्सिर हो रही है, इस से हमें बचना चाहिये।

### नाम बिगाड़ना गुनाह है:

बच्चों के हुक्कूम में से यह भी है कि उनका नाम अच्छा रखा जाये और अच्छे नाम को बुलाते वक़्त भी महलूज़ रखा जाये, इसी तरह नाम बिगाड़ना भी गुनाह की बात है, कुरआन पाक में इसे "बीसल इस्मुल्फूसूक" कहा गया है, लिहाज़ा किसी के नाम को बिगाड़ कर पुकारना नहीं चाहिये, इस में खुद घर वालों की तरफ़ से कोताही होती है, वह प्यार में नामों का छोट्टा कर देते हैं और फिर वही नाम बन जाता है, इस से परहेज़ लाज़िम है, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक सहाबी का नाम पूछा, सहाबी ने कहा "इसराम" जिसके माने काँटे के आते हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारा नाम इसराम नहीं बल्कि जुआँ होगा, जिस के माना खेती और ज़ूद सखा के होते हैं, बाद में वो सहाबी इसी नाम से मारुफ़ **बकिया स. 23 पर**



# 1912 ई० में इस्लामी माशियत का हमागीर मनसूबा लोट पीछे की तरफ है गर्दिशे अय्याम तू

अज: गुलाम मुस्तफा रज़वी ★

20वीं सदी का इब्तिदाई दौर मुख्तलिफ़ तहरीकात व नज़रियात का दौर था। सियासी सतह पर वुजूद में आने वाली तहरीक तर्कें मवालात और तहरीकें हिजरत ने हिन्दुस्तानी मुसलमानों को मआशी व इक़तिसादी तौर पर कमज़ोर करके रख दिया था, इस से पेशतर सलतनते मुग़लिया का ज़वाल मामूली ज़ख़्म ना था इन हालात ने मुसलमानों को इब्तिला व आजमाइश से दो चार किया। 1912 ईसवी मुताबिक 1331 हिजरी में हिन्दुस्तान के एक इस्लामी मुफ़क्किर ने मुसलमानों की मआशी व इक़तिसादी कुव्वत को संभालने के लिये हमागीर नज़रियात व मनसूबे पेश किये, इन सुतूर में हमें उन्हीं के मुतास्सिर कुन नज़रियात पर मुख्तसर गुफ़्तगू मक़सूद है जो सिलसिलेवार कुछ इस तरह है :

- (1) उन मामलों के अलावा जिन में हुकूमत दख़ल अंदाज़ है मुसलमान अपने मामलात बाहम फैसला करें ताकि मुक़द्दमा बाज़ी में जो करोड़ों रुपये खर्च हो रहे हैं पस अंदाज़ हो सकें।
- (2) मुसलमान अपनी कौम के सिवा किसी से कुछ ना ख़रीदें।
- (3) बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, रंगून, हैदराबाद वगैरा के मालदार मुसलमान अपने भाईयों के लिए बैंक खोलें।
- (4) इल्मे दीन की तरबीज व इशाअत करें।

इन कलमाते दानिश के तजज़ीए से क़ब्ल ज़रूरी मालूम होता है कि उस अहद के मआशी हालात पर कुछ रौशनी डाली जाए। मआशी व

इक़तिसादी उलूम का मुताला पहली जंगे अज़ीम के बाद 1929, 30 ईसवी में रोनुमा होने वाली आलमी कसाद बाज़ारी के नतीजे में अहमियत का हामिल बना, इस लिहाज़ से जदीद इक़तिसादी नज़रये की इब्तिदा 1930 ई० में हुई, 1936 ई० में मगरिबी माहिरे इक़तिसादियात जे एम केंज (J.M. KENYES) ने "नज़रिय-ए-रोज़गार आमदनी" (बचत=सरमाया कारी) पेश किया जिस ने आलमी निज़ामे मईशत पर अपने गहरे असरात मुर्त्ताब किए, जिस पर उसे बर्तानवी हुकूमत ने "लार्ड" का खिताब अता किया, इस रू से अंदाज़ होता है कि 1912 ईसवी में तरक्की याफ़ता ममालिक भी इल्मे मआशियात की अहमियत को वाज़ेह नहीं कर सके थे, शायद उन पर भी इस इल्म की इफ़ादियत नहीं खुल सकी थी।

जब कि एक इस्लामी मुफ़क्किर ने मुसलमानों की फ़िक्कों को महमूज़ दिया था और सरमाए को पस अंदाज़ करने की तरगीब दी थी, नीज़ उस दौर में मुसलमानों की एक बड़ी तादाद ज़मीनदार थी और उनकी अमलाक कसीर, लिहाज़ा उन मुस्लिम रईसों और अमीरों में बाहमी इन्तिशार के नतीजे में मुक़द्दमा बाज़ी का रुजहान ज़्यादा पाया जाता था, इस तरह मुसलमानों की अमलाक दो तरफ़ा मुक़दमों की नज़र होकर तबाह और बरबाद हो रही थी, इस इस्लामी मुफ़क्किर ने आपसी मामलात को इफ़हामों तफ़हीम से हल करने की फ़िक्र देकर सरमाए के तहफ़फ़ुज़ की सिम्ता रहनुमाई की, उस ने आपसी झगड़ों की कैफ़ियत इन अल्फ़ाज़ में बयान की है:

अव्वल पर ये अमल है कि घर के फैसले में अपने दावे से कुछ भी कमी हो तो मन्ज़ूर नहीं और



कचहरी जाकर अगर्चे घर की भी जाए ठन्डे दिल से पसन्द, गिरह गिरह भर ज़मीन पर तरफ़ैन से दो दो हजार बिगड़ जाते हैं, क्या आप इन हालातों को बदल सकते हैं ?

1930 इसवी के बाद जब ममलुकतों ने इक़्तिसादियात की अहमियत और इफ़ादियत को जान लिया तो सरमाए की बचत पर जोर दिया और पस अन्दाज़ के तीन दरजे मुतव्यन किए:

(1) अन्दरूने मुल्क बचत के ज़रिये सरमाया इकट्ठा करना।

(2) दूसरे तरक्की याफ़्ता मुल्कों से कर्ज़ लेना।

(3) करेन्सी की पैदावार बढ़ाना, आख़िरी तरीका ख़तरनाक है जिससे मआशी तबाही का अन्देशा है, इस लिये बेहतर तरीका पस अन्दाज़ यानी सरमाए की बचत है, इफ़राते ज़र से हमारा मुल्क हिन्दुस्तान दो चार है, इस पर 2008 ई0 के इक़्तिसादी मन्सूबे में काबू पाने के लिए तरजीही मन्सूबे बनाए भी गए और उस पर बड़ी हद तक काबू पाया जा चुका है, अगरचे क़तई नहीं लेकिन 2008 ईसवी के मुक़ाबले में ग़नीमत है।

इस्लामी मुफ़्किर के नज़रिये पर 1912 ईसवी में अमल दर आमद की कोई सूरत निकल आती तो आज मुसलमान मआशी तरक्की में बजाए पस्ती के तरक्की याफ़्ता ममालिक से दो दहाई आगे होते, इस तरह आलमी सतह पर कमजोर इस्लामी ममालिक मआशी खुश हाली के नतीजे में ना काबिले तस्ख़ीर क़ुव्वत साबित होते, बुनियादी ज़रूरीयात से फ़राग़त के बाद अपनी दिफ़ाई क़ुव्वत को संवारते और उस के सहारे तबाही और बरबादी से बच जाते और आज मुस्लिम ममालिक की तन्ज़ीम मुस्तहक़म होती, UNO की तरह उसकी भी ताक़त तस्लीम की जाती।

इस मुफ़्किर का दूसरा नुक्ता था:

अपनी क़ौम के सिवा किसी से कुछ ना ख़रीदते कि घर का नफ़ा घर ही में रहता, अपनी हिफ़्त व सनअत को तरक्की देते कि किसी चीज़ में किसी दूसरी क़ौम के मोहताज ना रहते।

इस्लाम ने सनअत व तिजारात को हलाल़ करार

दिया है नीज़ उस में बरकत भी रखी है, अल्लाह तआला का इरशाद है "ऐ ईमान वालो आपस में एक दूसरे का माल नाहक् न खाओ मगर यह कि कोई सौदा तुम्हारी बाहमी रज़ा मन्दी का हो" (सूरतुनिसा 29)

आज जिस तरह से इस्लाम के ख़िलाफ़ मगरबी क़ुव्वतें सरगमें अमल हैं इस से मुसलमान बेचैनी के शिकार हैं और नौबत यह आती है कि उन की पैदावार (मगरबी अशिया) का ग़ैर मोअस्सिर बाईकाट किया जाता है, अगर मुफ़्किरे इस्लाम के 1912 ई0 के मन्सूबे पर अमल हो जाता और मुसलमान आपस में ख़रीद व फ़रोख़्त कर रहे होते तो इस तरह के बाईकाट की नौबत भी न आती जबकि बाईकाट सिर्फ़ ज़बानी ही होता है और अमल सिफ़र, मुफ़्किरे इस्लाम ने एक सदी पेशतर उसे महसूस किया था और कहा था "अव्वल तो ये भी कहने ही के अल्फ़ाज़ हैं, ना उस पर इल्तिफ़ाक़ करेंगे ना हरगिज़ उसको निभाएंगे उस अहद को पहले तोड़ने वाले जेन्टिल मैन हज़रात ही होंगे जिनकी गुज़र बग़ैर यूरोपियन अशिया के नहीं।

मुफ़्किरे इस्लाम ने 1912 में मुसलमानों को आपस में तिजारात और लेन देन की तरगीब दी थी, 1929 ई0 के बाद जबकि जर्मनी, इटली मआशी लिहाज़ से तबाह हो चुके थे, यूरोपियन मंडी की तश्कील हुई जो इस तर्ज़ की थी कि वो आपस में ही सरमाया कारी करते, ख़रीदो फ़रोख़्त करते और तिजारात को फ़रोग़ देते और इस तरीके से बहुत ज़ल्द वो एक इक़्तिसादी क़ुव्वत बन गये जिससे उनकी करंसी का वज़न और वफ़ार भी बढ़ा और आज उनकी करेन्सी आलमी अहमियत की हामिल और तिजारात पर असर अन्दाज़ है, मुफ़्किरे इस्लाम ने आपसी तिजारात से मुताअल्लिक़ दो मिसालें दी थीं:

(1) अहले यूरोप को देखा है कि देसी माल अगरचे विलायती की तरह और उस से सस्ता भी हो हरगिज़ न लेंगे और विलायती महंगा ख़रीद लेंगे।"

(2) हिन्दू तिजारात के उसूल जानता है कि जितना थोड़ा नफ़ा रखे उतना ही ज़्यादा मिलता है और मुसलमान साहब चाहते हैं कि सारा नफ़ा एक ही ख़रीदार से वसूल कर लें।"



फ़रोग के लिये कोई मौका नहीं छोड़ते लेकिन हमारे अपने लापरवाही का शिकार होकर मआशी गिरावट की राह जा पड़े, जब कि इस्लाम ने हुसूले मआश और तिजारत को भी ख़ैर के जुमरे में रखा और सबाब की बशारत दी, मज़्कूरा नुक्ता मुसलमानों की सनअतों और फ़ैब्रियों के ब्याम से मुताअल्लिक किस क़द अहमियत का हामिल है यह बात छुपी नहीं, मआशी तरक्कियात ने दुनिया को आलमी मण्डी में तब्दील कर के रख दिया है, ग्लोबलाइजेशन का तसव्वुर उसी की सराहत व वज़ाहत है लेकिन इस ज़िम्मे में मुसलमानों की मआशी पैदावार का तनासुब कितना है? यह एक अलमिया है, मुफ़्किरे इस्लाम के मंसूबे पर अगर मुसलमान कान धर लेते तो बरें सगीर की हालत मुख़्तलिफ़ होती।

इस्लामी मुफ़्किर ने तीसरा नुक्ता दिया:

“मुम्बई, रंगून, मद्रास, हैदराबाद वगैरा के मालदार मुसलमान अपने भाई मुसलमानों के लिये बैंक खोलते, सूद शरअ ने हरामे क़तई फ़रमाया है मगर और सौ तरीक़े नफ़ा लेने के हलाल फ़रमाये हैं।”

यह बाद मज़्कूरी नहीं कि मौजूदा बैंकिंग के निज़ाम की बुनियाद सूदे मुक्कब Compound Interest System पर है, इक्तिसादी मंसूबे के लिये सरमाया रीढ़ की हड्डी की हैसियत रखता है और सरमाये के निज़ाम को चलाने के लिए बैंक की हैसियत मरकज़ी है, इस्लामी मुफ़्किर ने बिला सूदी बैंकिंग का तसव्वुर 1912 ईसवी में दिया जब कि हिन्दुस्तान में चन्द बैंक कायम थे और वह भी अंग्रेज़ों के और बैंक की अहमियत भी कुछ जाहिरो वाज़ेह नहीं हो सकी थी, इस मुफ़्किर ने करेन्सी से मुताअल्लिक एक किताब भी लिखी बनाम “किफ़लुल फ़कीह अलफ़हिम फ़ी अहकामे किरतासिददराहिम” इस में बिला सूदी बैंकिंग सिस्टम पर बड़ी ज़ामे और नतीजा खेज़ तजावीज़ दी हैं, यह किताब उलामये हरमैन के एक सवाल के जवाब में तसनीफ़ फ़रमाई जो अरबी और उर्दू में हिन्द व पाक के अलावा दारुल कुतुब इलमिया बैरुत से भी शाये हो चुकी है। हराम से बचने की तालीम कुरआने मुक़द्दस ने दी है और सूद को हराम करार दिया, अललाह तआला का

इरशाद है “ऐ लोगों खाओ जो कुछ ज़मीन में हलाल पाकीज़ा है और शैतान के क़दम पर क़दम न रखो बेशक वो तुम्हारा खुला दुश्मन है।” (अलबक़रह 68, कन्तुल ईमान)

एक और मक़ाम पर कुरआन मुक़द्दस में इरशाद होता है “और अल्लाह ने हलाल किया बैअ और हराम किया सूद।” (सूरतुल बक़रह 275)

मुफ़्किरे इस्लाम ने 1912 ई0 में बिला सूदी बैंकिंग का तसव्वुर दिया जब कि 1940 ईसवी तक कोई मुस्लिम बैंक कायम नहीं हो सका था, 1912 ईसवी में मुसलमान बेदार हो लेते तो आज आलमी बैंकिंग सिस्टम पर मुसलमानों का कंट्रोल होता।

यह बात भी लाइके ग़ौर है कि सरमाये के तहफ़फ़ूज़ के लिये इसराफ़ से बचना ज़रूरी है, मौजूदा दौर में मुसलमान किस हद तक इस में मुब्तिला हैं यह बताने की ज़रूरत नहीं, मुफ़्किरे इस्लाम ने इसराफ़ की शिद्दत के साथ मज्मूमत की, आप क़ब्र पर चिराग़, अगरबत्ती रौशन करने से मुताअल्लिक तहरीर फ़रमाते हैं “और क़रीबे क़ब्र सुलगाना अगर वहां न कुछ लोग बैठे हों न कोई तिलावत करने वाला या ज़िक्र करने वाला हो बल्कि सिर्फ़ क़ब्र के लिये जला कर चला आये तो जाहिर मना है कि इसराफ़ व इज़ाअते माल है।”

वाज़ेह रहे कि मज़ारते औलिया से क़रीब खुशबू के लिये और जायरीन को सहूलत फ़राहम करने की गुर्ज़ से जलाना अलग बात है और यह इसराफ़ के दर्जे में नहीं।

गुर्ज़ कि उस मुफ़्किरे इस्लाम ने कौम को बेदार करने की अन्थक़ कोशिश की, उस ने कौम को ईमान के लुटेरों से बाख़बर किया, दुश्मनों की साज़िशों से आगाह किया, उस ने एक शेर में बेदारी का फ़लसफ़ा बयान कर दिया:

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है  
सोने वालों जागते रहियो चोरों की रखवाली है

उसके अफ़कार का चौथा नुक्ता “इल्मे दीन की तरबीज़ व इशाअत” से मुताअल्लिक है, वह एक माहिर तालीम था, वह 70 के लगभग उलूमा फूतून में महारत रखता था, उस ने स्वालेह सरगर्म उलमा और मुदब्बरीन की एक पूरी टीम तैयार की जिस ने कौम की



अंजाम दिये, उसने इस्लामी निज़ामे तालीम को ज़िन्दगी बख़्शी जबकि मुग़लिया सलतनत के ज़वाल के नतीजे में इस्लामी मदरिस खस्ता हाल हो चुके थे और मुत्तहिदा हिन्दुस्तान में यहूदी नसारा के इश्टिराक से ज़दीद तालीम का ऐसा निज़ाम मुरत्तब हो चुका था जिसमें दीन से दूरी का पैग़ाम मुज़मर था, मग़रिबी निज़ामे तालीम को मग़रिबी तहज़ीब व तमद्दुन के फ़रोग़ के लिये नाफ़िज़ किया जा रहा था।

ऐसे वक़्त में उसने इल्मो फ़न के हर शोबे में रहनुमाई की, साइंस व फ़लसफ़ा, रियाज़ी व हिन्दसा, तारीख़ व जुग़राफ़िया, मआशियात व इक़तिसादियात वग़ैरह हर इल्मो फ़न को दीन की बुनयादों पर बरता।

उसकी तालीमी बसीरत और नज़रियात पर यूनिवर्सिटीयों, कॉलेजों और ज़ामिआत में तालीम की मुनासिबत से मास्टर डिग्री (M.Ed) के 18 मक़ाले (Thesis) लिखे जा चुके हैं, उसकी दीनी ख़िदमात के दूसरे मौज़ुआत पर यूनिवर्सिटीयों में 28 से ज़्यादा डोक्ट्रेट (Ph.D) के मक़ाले और दरज़न भर एम फ़िल (M. Fil) के मक़ाले लिखे जा चुके हैं, लेकिन मरहलए शोक़ हुनूज़ तय होना बाक़ी है और मज़ीद ज़लवे आशकार हुवा चाहते हैं।

वो इल्मो फ़न का बहरे बेक़री था, वो अरब में भी मक़बूल और मशहूर था, उल्माये हरमैन ने उसे किस्म किस्म के अलकाब और आदाब से नवाज़ा, उसे "इमामुल मुहददीसीन" कहा, "मुफ़्स्से शहीर" कहा, "बरकतुज़ ज़मान" कहा, अपना पैशवा व मुतक्क़दा जाना, उसकी निगाह अपने ज़माने से आगे देखा करती थी, उसकी बसीरत को दानाये मशरिक़ इक़बाल ने भी ख़िराजो अक़ीदत पेश किया, उसकी रियाज़ी में महारत के ज़लवे देख लेने के बाद अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डा० सर ज़ियाउद्दीन अहमद ने कहा कि "ये हस्ती सही मानों में नोबेल प्राइज़ की मुस्तहिक़ है।" उसकी मतबुआत व तहरीरात ने एक इनक़लाब बरपा कर दिया, वो सुन्नतों का दाई था, वो मुहाफ़िज़े इस्लाम था, मुजाहिदे इस्लाम था। पासबाने इस्लाम था और मुफ़क्किरे इस्लाम था, उसकी तसानीफ़ की इशाअत कई सिम्तो में होती थी, बरेली पटना, रामपुर,

मुम्बई, आगरा, सीतापुर, कलकत्ता और लाहौर के इशाअती इदारे उसकी किताबें बड़े शौक़ से शाए करते थे, उसका हमगीर इक़तिसादी मनसूबा "तदबीर फ़लाह व निजात व इस्लाह" के नाम से शाये हुआ और अफ़कार के लिये महमीज़ का सबब बना, उसको मुसलहे कौमो मिल्लत मौलाना लाल मुहम्मद ख़ाँ मद्रासी (कलकत्ता) के एक सवाल के ज़बाब में तहरीर फ़रमाया, उस पर आज भी अमल की उतनी ही ज़रूरत है जितनी के एक सदी पहले थी, वो सहबानुल हिन्द भी है, हस्सानुल हिन्द भी है, इमामुल हिन्द भी है और शेख़ुल हिन्द भी, अगर हिन्दुस्तान उस पर फख़ करे तो बजा है, वो फखरे इस्लाम भी है उसने मुसलमानों के वक़ार को बुलन्द किया, जो मर्दे मोमिन था, बकौला डॉ. इक़बाल:

हर लहज़ा है मोमिन की नई शान नई आन  
गुफ़्तार में किरदार में अल्लाह की बुरहान

वो मुहब्बते रसूल में सर शार था और उसी मुहब्बत को उसने आम किया, उस निस्बत से उसका नाम मुहम्मद था, तारीख़ी नाम अलमुख़्तार था, लेकिन वह खुद को अब्दुल मुस्तफ़ा लिखता और कहा करता था और दुनिया उसे आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा के नाम से जानती, मानती और पहचानती है।

मुफ़क्किरे इस्लाम इमाम अहमद रज़ा मुहिद्दीन बरेलवी की विलादत 10 शव्वाल 1272 हिजरी मुताबिक़ 1856 ईसवी को हुई और विसाल 25 सफ़र 1340 हिजरी मुताबिक़ 1921 ईसवी को, आपकी दीनी और इल्मी ख़िदमात और अफ़कार की इशाअत अहद की ज़रूरत है और एक इल्मी ख़िदमत भी।...

स. नं. 19 का बकिया

के वास्ते, खुदा को मत भूलो, उसके अहक़ाम से बेनियाज़ी न बरतो, उसके प्यारे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के उसवए हसना से मूंह ना मोड़ो, उनकी गुलामी ही हमारी कामयाबी की ज़ामिन है और उनसे रूग़दानी हमारी ज़िल्लत व ख़वारी और ज़वाल का हकीकी सबब है।

उन के जो हम गुलाम थे ख़ल्क के पैशवा रहे।

उन से फ़िरे जहाँ फिर आयी कमी वक़ार में।



# ज्वाल मुस्लिम के असबाब क्या हैं

अज: मुश्ताक अहमद उवैसी अमजदी \*

हालिया दिनों में मुसलमानाने आलम जिन हालात से दोचार हैं वो किसी से छुपी नहीं, कहीं मुसलमानों के खून से होली खेली जा रही है तो कहीं उन का घर बार नजरे आतिश किया जा रहा है, कहीं उन के ज़्बात को मजरूह करने की नापाक कोशिश की जा रही है तो कहीं उनकी हक तलफ़ी की बेजा काशिश की जा रही है, कहीं शरीअत मुतहहरा में तबदीली की आवाज़ बुलन्द हो रही है तो कहीं शेआरे इस्लाम को मिटाने की बात कही जाती है, गुर्ज कि हर तरह मुसलमानाने आलम दिनबदिन मग़लूब होते जा रहे हैं, ज़िल्लतो-ख़वारी के कअरे अमीक में दफन होते दिखाई दे रहे हैं। और बातिल कौमों के सामने दबे कुचले नजर आते हैं वरना यही वह कौम थी जिसकी शानो-शौक़त का डंका चहारदांगे आलम में बजता था, जिन का गुल्बा हर तरफ नजर आता था, यही वह कौम थी जिसने बड़े-बड़े तूफ़ानों का रुख़ मोड़ा था और बहरे जुल्मात में घौड़े दौड़ाये थे जिसकी तरफ़ इशारा करते हुये शायरे मशरिक़ डॉक्टर इक़बाल ने कहा था:

दशत तो दशत है दरिया भी न छोड़े हमने

बहरे जुल्मात में दौड़ा दिये घौड़े हमने

मज़क़ूरा तनाज़ुर में आज का सबसे बड़ा और अहम सवाल यह है कि तरक्की पज़ीर कौमे मुस्लिम के ज्वाल का सबब क्या है? आखिर इतन बड़ा फ़र्क़ क्यों? हम जब मुसलमानों के हालात, उनके चाल-ढाल, रहन-सहन, नशो-बो-फ़राज, मईशतो-मामलात पर ग़ौरो फ़ि़क़र करते हैं तो उस ज्वाल का सबबे हकीकी मालूम होता है, वह है अल्लाह के हुक्म से रुगरदानी और उस्वए रसूल से दूरी, मगरिबी

तंहजीब व तमददुन को अपनाना, जब तक कौमे मुस्लिम सही मअनों में अल्लाह के अहकाम पर आमिल रही, उसके हुदूद की हिफ़ाज़त करती रही और मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ए-ज़िन्दगी के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारती रही, अल्लाह रब्बुलइज़ज़त ने उनकी हिफ़ाज़त की, उनको गुल्बा अता फ़रमाया, बातिल कौमों की नज़रों में उनका रोब बिठा दिया, यहीं वजह थी जिस तरफ़ वह रुख़ करते थे फ़तहो-नुसरत उनके क़दम चूम लेती थी, कुप्फ़ारे नाहनजार उन से लरज़ते थे।

आप तारीख़े इस्लाम का मुताअला करें तो मालूम होगा कि इस्लाम में सबसे पहली जंग, जंगे बद्र लड़ी गई, जिसे तारीख़ी सफ़हात में गुज़वए-बद्र कहा जाता है, यह जंग उस वक़्त लड़ी गई जब मुसलमानों के पास न अपनी ज़ाहिरी ताक़त थी ना ही माली कुव्वत, बल्के हर एतबार से मुसलमान कमज़ोर थे, तादाद में सिर्फ़ 313 जब कि मुक़बिले में दुश्मन 950 थे, मुसलमानों के पास सवारी के लिये फ़क़त 70 ऊँट और दो घोड़े और हथियार में 6 ज़िरह और 8 तलवारें थीं जब कि दुश्मनों के पास 100 घोड़े, 700 ऊँट, बकसरत ज़िरह और दीगर हथियार थे मगर जब माअुरका आराई शुरू हुई, तलवारें चमकीं तो कुप्फ़ार लर्ज़ा बरअन्दांम होने लगे, लाशों की लाशें वासिले जहन्नम हुई, मुसलमानों की दादे शुजाअत से काफ़ि़रों का कलेजा दहलने लगा और देखते ही देखते अल्लाह ने मुठ्ठी भर निहत्थे सरफ़रोश फ़रज़न्दाने इस्लाम को कामयाबियो-कामरानी से हमकिनार फ़रमा दिया, कुरआने मुक़ददस में उसका तज़किरा वुं मिलता है: और बेशक अल्लाह ने



सरो-सामान थे। (सूरह आले-इमरान आयत नं० 123)

अजीज़ क़रिईन! मैं दावते फ़िक्क देना चाहता हूँ कि कुफ़्फ़ार माददी ताक़त व कुव्वत में हर लिहाज़ से मुसलमानों से क़वी तर थे, जिसका तकाज़ा तो था कि मुसलमान कुचल दिये जाते, उनका नामो-निशान मिटा दिया जाता, उन्हें सफ़हए हस्ती से ख़त्म कर दिया जाता, मगर ऐसा कुछ भी ना हुआ बल्कि उसके बर-ख़िलाफ़ कुफ़्फ़ार हार के शिकार हुये, आखिर वह कौन सी ताक़त कार फरमा थी जो मुसलमानों की पुश्त पनाही कर रही थी और मुसलमानों की तरफ़ से कुफ़्फ़ार से नबर्द आज़मा थी, यकीनन आपका यही ज़वाब होगा वह तादाद में ज़रूर कम थे, निहथे, भूखे, प्यासे और कमज़ोर थे मगर अहकामे खुदा पर कारबंद थे, हुदूदुल्लाह के मुहाफिज़ थे, अपने सीनों में ईमानी हरा रत और रसूल की सच्ची मुहब्बत रखते थे जिस की वजह से अल्लाह ने उनकी हिफाज़त फरमायी और यह नुस्ख़ए कामयाबी सिर्फ़ उन हक़ परस्तों के साथ ख़ास न था बल्कि आज और कल सुबहे क़यामत तक जुमला फ़रज़न्दाने तौहीद के लिये क़ुरआन ने ज़ाबता दे दिया अगर कामयाब होना चाहते हो, इज़्ज़त और अज़मत के मीनार बनना चाहते हो तो ईमाने कामिल की दौलत अपने दामन में समेट लो फिर कामयाब तुम्ही रहोगे, अल्लाह तआला फ़रमाता है: और न सुस्ती करो और न गुम खाओ तुम ही ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो। (सूरह आले-इमरान 139)

शायरे मशरिफ़ डॉक्टर इक़बाल ने क्या ख़ूब कहा है:

आज भी हो जो इब्राहीम का ईमाँ पैदा।

आग कर सकती है अंदाज़े गुलिस्ताँ पैदा।

कामिल ईमान बंदों की हुकूमत न सिर्फ़ इंसानों पर होती बल्कि उनकी हुकूमत अल्लाह की तमाम मख़लूक़ात पर हुआ करती है, तारीख़े इस्लाम का एक ज़र्ज़ी बाब अमीरुल मोमिनीन उमर फारूक़े आज़म

रद़िअल्लाहु तआला अन्हु की सीरत तय्यबा है, आप की सीरते पाक का मुताअला करने से मालूम होता है कि आप के दौर ख़िलाफ़त में जब मिस्र फ़तह हुआ तो अमर बिन-आस रद़िअल्लाहु तआला अन्हु के पास वहाँ के लोगों ने आकर अर्ज़ किया: ऐ अमीर हमारे इस दरयाए नील की एक आदत है जिसके बग़ैर यह जारी नहीं होता, आप ने फ़रमाया वह क्या? वह कहने लगे जब माहे हाल की ग़्याराह रातें गुज़र जाती हैं तो वह एक कुँवारी और इकलौती लड़की को उसके वालिदैन् की रज़ामन्दी से ले लेते हैं और उसे निहायत ही नफ़ीस और उम्दा कपड़ों और ज़ेवर पहनाकर दरयाए नील में डाल देते हैं, अमर बिन आस रद़िअल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि यह बात इस्लाम में कभी नहीं होगी क्योंकि इस्लाम जहालत के रसूमे बंद को मिटाता है, लोग यह बात सुनकर उस बात से बाज़ रहे, मगर नील का पानी बहुत कम हो गया और लोगों ने उस रस्म को पूरा करने का इरादा किया, जब अमर बिन आस रद़िअल्लाहु तआला अन्हु ने यह बात देखी तो उन्होंने हज़रते उमर रद़िअल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में इस किस्से को एक ख़त में लिखकर रवाना किया, तो हज़रते उमर रद़िअल्लाहु तआला अन्हु ने उसका ज़वाब लिखा कि आप ने बहुत ख़ूब किया जो इस रस्मे क़बीह से उन्हें रोक दिया, इस्लाम बेशक ज़ाहिलियत की रस्मों को मिटाता है, मैंने अपने ख़त में एक रूक़आ लिखा है, उसे नील में डाल दो, जब अमर बिन आस रद़िअल्लाहु तआला अन्हु के पास वह ख़त पहुँचा तो उन्होंने उस छोटे से ख़त को खोलकर जो उस में लिखा था पढ़ा तो उस में लिखा था कि ये ख़त खुदा तआला के बन्दे उमर अमीरुल मोमिनीन की जानिब से नील मिस्र की तरफ़ है, अम्माबाअद: ऐ नील अगर इससे पहले तू खुद जारी था तो अब जारी ना हो और अगर इससे पहले तू खुदा के हुक्म से जारी था तो अब मैं खुदाये कहहार से सवाल करता हूँ कि तुम्हें जारी करे, अमर बिन आस रद़िअल्लाहु तआला अन्हु ने उस ख़त



को तुलूआ सलीब से एक दिन पेशतर नील में डाल दिया जब सुबह हुई तो देखा कि एक ही रात में नील सोलह सोलह गज चढ़ आया है, उस दिन से वह बुरी रस्म मिस्र से जाती रही। (तारीखुल-खुलाफा मुतरज्जिम, स: नं० 155)

आप अन्दाज़ा करें कि यह कैसे अल्लाह के बंदे थे के एक हुक्म होता है तो पानी भी सरे नियाज़ ख़म कर देता है। बात दरअसल ये है कि इन बन्दों ने रब के आगे अपना सर झुकाया तो अल्लाह ने सारी खुदाई को उनके सामने झुका दिया, यह दर हकीकत "जो अल्लाह के लिए है, अल्लाह उस के लिए हैं" की अमली तसवीर है।

बुलबुले शीराज़ हज़रत शेख साअदी शिराज़ी अलैहिर्रहमा लिखते हैं "मैंने जंगल में एक आदमी को देखा जो शेर पर सवार था, मैं हैरान रह गया कि यह शख्स शेर पर किस तरह सवार हुआ और शेर उसका फ़रमाबरदार कैसे हो गया? हज़रत साअदी फ़रमाते हैं, उस आदमी ने मेरी तरफ़ देखा और कहा :

तू अल्लाह के हुक्म से मुँह न मोड़े तो तेरे हुक्म से कोई चीज़ भी मुँह न मोड़ेगी।

आज कौमे मुस्लिम अहकामे खुदाबंदी से मुँह मोड़कर शैतान की फ़रमाबरदारी, नफ़्स की पैरवी और दुनिया की रंगीनी में ऐसी रंग गई है कि मालूम होता है कि यही मकसूद ज़िन्दगी और मन्ज़िले आख़री है, हमारी ग़फ़लतों को क़लम बंद करते हुये इमामे अहले सुन्नत सय्यदी सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी रदिएल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

दिन लहव मे खोना तुझे, शब सुबह तक सोना तुझे  
शर्म नबी, ख़ौफ़े खुदा, यह भी नहीं वो भी नहीं  
रिज़्के खुदा खाया क्या फ़रमाने हक़ टाला क्या  
शुक्रे करम, तर्से सज़ा यह भी नहीं वो भी नहीं

हालाँकि यह इंसान की बहुत बड़ी ग़फ़लत और इन्तेहाई भूल है क्योंकि अल्लाह तआला ने इस दुनिया को दारे आजमाईश और दारे अमल बनाया है,

एक मुक़रर वक़्त तक हमें इसमें आजमाईश से गुज़रकर हयात मुस्ताआर की तकमील करके दारे अख़िरत की तरफ़ कूच करना है।

असल ज़िन्दगी तो उख़र्वी ज़िन्दगी है जब तक अल्लाह के बंदे इस दुनिया से तरके तअल्लुक कर के उख़र्वी ज़िन्दगी निखारने के लिये रब्बे तआला की बन्दगी करते रहे, अल्लाह ने उन्हें रोज़ अफ़जू तरक्की और बुलंदी अता फ़रमायी, कायनाते आलम की हर चीज़ उस के ताबए फ़रमान रही, वह अल्लाह की हर नेअमत से मुस्तफ़ीद होते रहे मगर जब से लोगों के दिलों से रब की बंदगी का शौक़ और यादे हक़ का ज़ौक़ रूख़सत हो गया, उस के अहकाम से बेनियाज़ी बरती गई तो इज़्ज़त व अज़मत, गुल्बा व शौक़त, कामयाबी व कामरानी, तरक्की व सरबुलंदी गुर्ज हर चीज़ उनसे रूठ गई और हर किस्म की बुराई माँ-बाप की नाफ़रमानी, औलाद की हक़ तल्फी, सूदख़ोरी, शराब नोशी, किमारबाज़ी, चुगुली व बदअहदी, झूठ व बोहतान तराज़ी और ज़िना जैसी लानती अशिया हम में जोर पकड़ने लगीं और देखते ही देखते मुसलमान इन रज़ील हरकतों का रसिया बन गया, नतीजन मुसलमानों की इज़्ज़त रफ़्ता-रफ़्ता कम होती चली गई फिर अज़ाबे इलाही का ला-मुतानाही सिलसिला शुरू हो गया, कभी ज़ल्ज़ला तो कभी नागेहानी आफ़ात व बलियात का बुरूद, कभी सैलाब का कहर तो कभी खुश्क साली का जोर, कभी क़त्ले आम तो कभी बुन्यादी हुकूक की पामाली।

मुसलमानों! खुदारा अपने हाले ज़ार पर रहम खाओ, अपने किये पर नदामत के आंसू बहाओ और आइन्दा इन ख़सीस अफ़आल के इस्तेकाब से बाज़ रहने का अज़म मुसम्मम करो। याद रखो अभी भी वक़्त है, तुम अपनी खोई-हुई अज़मत व शौक़त पा सकते हो, अपना खोया हुआ वक़ार हासिल कर सकते हो, मगर शर्त है कि अल्लाह की बंदगी करो, खुदा

बक़िया स: 41 पर



# सरकारें गीसे आजम का दावती उसलूब

अज: मुफ्ती डॉ० साहिल शहसरामो (अलीग) ★

इस्लाम दावत व इस्लाह का पयाम्बर है जिसकी बुनियाद हिकमत और खुश-उसलूब मौईज़त पर रखी गई। आकाए-दोजहाँ रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी हकीमानी तफहीम और दिलकश अख़लाक से दिलों की दुनिया फ़तह की और उनमें इमान के जगमगाते आफ़ताब रौशन किये, आप ने इस जहाने रंगो-बू की ज़ाहिरी महफ़िल को अलवदा कहा तो कुफ़्र की तारीकियों के बालो- पर फिर निकल आये, इरतिदाद का एक सिलसिला चल निकला लेकिन आपके जानशीने अकबर सय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर रद़िअल्लाहु अन्हु की पामरदी और इस्तिफ़ामत के ज़ब्बों से लबरेज़ मसाई-ए-जमीला ने इस्लाम को ताक़त दी और फिर हज़रते फ़ारूक़े आजम रद़िअल्लाहु अन्हु के ज़माने में इस्लाम की नूरानी शुआएँ बहरो-बर की वुसअतों में फैल गई, हज़रते उस्माने गनी और सय्यदना मौलाए-कायनात अलीए मुर्तज़ा रद़िअल्लाहु अन्हुमा का दौर ख़िलाफ़त शेरिशों और फ़ितना समानियों की नज़र रहा, जिसका नुक़तए अख़ीर बदबख़्त यज़ीद की अज़ली शकावतों और 61 हिजरी में अलमनाक तरीन सानिहए-करबला की शक़ल में नमूदार हुआ, ख़िलाफ़त के बाद इमारत ने रंग जमाया, उमवी और अब्बासी दौरें हुकूमत इस्लामी तारीख में रौशन और तारीक़ दोनों किस्म के नुकूश रखता है, उस दौर की रौशनी तो यह है कि इस्लामी हुकूमत में तक़रीबन 80 ममालिक शामिल हो चुके थे और उलूमो-फ़ुनून की तदवीन ने हज़रत मौलाए-कायनात के दौर में जो संगे बुनियाद रखा था वह अब खूबसूरत इमारत की शक़ल में तब्दील हो चुका था, हदीस व तफ़्सीर, नहव व सर्फ़,

अदब, फ़िक्ह और उसूल के बुनियादी मसादिर इसी दौर की शानदार यादगारें हैं, वसाइले हयात की फ़रावानी, मादिदयत की बढ़ती क़दों ने इंसानों को खुश ऐश और पुरतकल्लुफ़ बना दिया था लेकिन इन फूलों के गिर्द कई बड़े नुकीले और चुभते कांटे भी थे जिनकी टीस आज भी हर हस्सास दिल में महसूस होती है, तख़्ते हुकूमत के लिये खूने मुस्लिम की अरज़ानी जितनी इस दौर में हुई, उसकी नज़ीर कम नज़र आती है, माददी वसाइल की वुसअतों ने दिल को दीन से दूर और दुनियावी हवस कारीयों से क़रीबतर कर दिया था, ज़हनों में सज़िशों और फ़ितनों ने रंग जमा लिया था, ऐशो-तर्ब की महफ़िल आबाद और दीनी क़दरें पामाल हो रही थीं। अहले सरवत ऐश के शेषों में मसरूफ़, उलमा हिरसो-हवस के असीर और तमल्लुक़ की रज़ालत में डूबते जा रहे थे। सूफ़िया और जूहहाद रियाकारी की दलदल में धंस चुके थे। खुदसरी और सरकशी फ़ितरी वतीरा और तसादुम व खूनरेज़ी इंसानी मशग़ला बन चुका था। तवाइफ़ुल- मुलूकी के उस दौर में इस्लाम दुश्मन ताक़तों ने भी अपने इन्तेक़ामाना हौसले निकालने शुरू कर दिये। तरह-तरह के अक़ाईद मुसलमानों पर थोपे गये। नसब, ख़ुरूज, रफ़ज़, ऐतिज़ाल, बातनियत, क़रामता के दरमान्दा ग़िरोह भी इसी दौर की यादगार हैं, यहूदियत और ईसाइयत से माअरका आराईयों का सिलसिला चल पड़ा था। इस दौर के आख़री मरहले में एक हादीए- उम्मत, मोहसिने मिल्लत उठा और अपने नफ़सान सोख़ता से इस्लाम के चमकते हुये चराग़ की लौ तेज़ कर गया। इस्लामी क़दरें फिर से ज़िन्दगी की हारतें लेकर उठीं और अन्फ़सो- आफ़ाक़ की वुसअतों पर छा

अस्लाफ़ व अख़लाफ़



गई उस की जाँ बख्शा सदाओं ने दिलों की ख्वाबीदगी को बेदारी बख्शी, वहकी फिक्रों को सही समत अता की, जबरो इस्तिबदाद में पिस्ती इंसानियत ने चैन की सांस ली, इस्लाम की सूनी बर्ज़ में आरास्ता हुई, तसव्वुफ़ के गुबार में अटे चहरे फिर शफ़्फ़ाफ़ हो गये, इस्लाम का रूप-ज़ेबा ईमान की चाँदनी में निखर गया, उसी ज़ाते गिरामी को दुनिया शैख़ुल इस्लाम, मुहीउद्दीन अबू मुहम्मद सय्यद अब्दुल कादिर हसनी हुसैनी ज़िलानी रद़िअल्लाहु अन्हु कहती हैं, जिन्होंने अपने ज़ददे करीम सय्यदना इमाम हसन मुजतबा और सय्यदना इमाम हुसैन शहीदे कर्बला रद़िअल्लाहु अन्हुमा के कदम ब कदम चलकर इस्लाम की डूबती नब्ज़ को जिन्दगी की हारतें बख़्शाँ। पहले सरकार गौसे आज़म रद़िअल्लाहु अन्हु के पाकीज़ा औराके हयात के इम्माली मुताले से हम अपनी फ़िक्र को ताज़गी बख़्शाते हैं फिर एक निगाह आप के दावती उस्लूब पर।

सरकार गौसे आज़म सय्यदना शेख़ अब्दुल कादिर ज़िलानी रद़िअल्लाहु अन्हु 470 हिजरी में हज़रत अबू सालेह मूसा जंगी दोस्त के घर गीलान में हज़रत उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा बित्ते सुमई के बतने मुबारक से पैदा हुये। उस वक़्त आप की वालिदा माजिदा की उमर साठ साल की हो चुकी थी, आप नजीबुत्तरफ़ैन सय्यद, वालिद माजिद की जानिव से हसनी और वालिदा माजिदा की तरफ़ से हुसैनी हैं, आप इब्तिदाए आफ़रीनश से करामत आसार थे।

आप ने शीर ख़वारगी के ज़माने में भी रोज़े के औकात में शीरे मादर नोश ना फ़रमाया, शिकमे मादर ही में वालिदा माजिदा की तिलावत सुन कर पन्द्रह पारे हिफ़्ज़ कर चुके थे। बचपन ही से हर एक आप से शफ़्क़त व इकराम का मामला रखता। अठारह साल की उमर में उलूमे ज़ाहिरी की तहसील के लिए उरसुल बिलाद बग़दाद पहुँचे और नामवराने फ़न से भरपूर इस्तिफ़ादे किये जिन में आरिफ़ बिल्लाह हज़रत हम्माद

दब्बास कुदिदस सिरहू और काज़ी अबू सईद मुबारक मख़ज़ूमी कुदिदस सिरहू खास तौर से काबिले ज़िक्र हैं। इन में हज़रत मख़ज़ूमी से आप को गायत दर्जा अक़ीदत थी और फिर यही आप के शेख़े तरीक़त ठहरे। आप ही के इरशाद के मुताबिक़ शाह जीलाँ ने मदरसा बाबुल अज़ज में दर्सी-इफ़ादा का सिलसिला शुरू किया। आप के क़दमे मुबारक से तलबा का इस क़दर इज़्दिहाम हुआ कि क़दीम इमारत ना काफ़ी हो गई तो बग़दाद के इल्म दोस्त हज़रात ने उसे वुस्अत देकर शानदार नई इमारत तैयार कराई और मदरसा “कादरिया” नाम रखा। आप का दर्स तफ़सीर, हदीस, फ़िक़ह, उम्ूल, नहव और तजवीद के मौज़ूआत पर मुहीत होता। तफ़सीर व हदीस के वह गिराँ क़द्र निक़त इरशाद फ़रमाते कि आप के असातिज़ा और असातीने फ़न भी अंगुशत बदन्दौ रह जाते, इफ़ता नवेसी, रुशदो-हिदायत और वाज़ो तलकीन भी आप के नुमाया मशागिल थे।

आपने वाज़ का सिलसिला 16 शब्वाल 521 हिजरी मंगल के दिन से शुरू फ़रमाया, शुरू में झिजक रही क्योंकि आप अज़मी थे और बग़दाद फ़ुसहाए अरब का गहबारा! लेकिन फ़ैजे रिसालत मआब और फ़ैज़ाने मुर्तज़ा ने आप की ज़बाने मुबारक में ऐसी रवानी और ताक़त पैदा कर दी कि मज़ामीन का एक सैले रवाँ होता जो आपके दहने मुबारक से निकलता चला जाता। तासीर ऐसी मिली थी कि पत्थर दिल भी मोम हो जाते, सियाहकार तायब होते, तक्वा शिआरों को सबात मिलता और कुफ़्र की आलूदगी में लुथड़े हुए लोग सर चश्माए इस्लाम के क़रीब आकर शफ़्फ़ाफ़ हो जाते। सत्तर हज़ार अफ़राद पियादा और घोड़ों पर सवार आप की महफ़िले वाज़ में शरीक होते। आप के मवाइज़े हसना को चार चार सो अफ़राद क़लम बन्द करते। इस महफ़िल में सैकड़ों अफ़राद इस्लाम कुबूल करते, फ़िस्को-फ़ुजूर से तायब होते और आप जब ये फ़रमाते “अब हम क़ाल से ह़ाल की तरफ़ लौटते हैं” तो लोगों पर



वजद की ऐसी कैफियत तारी होती कि बेहाल हो जाते, बहुत से लोग मुर्गे बिस्मिल की मानिन्द तड़पने लगते और बाज़ तो वहीं जान जाने आफरी के सुपुर्द कर देते, आप अपने ख़लवत क़दे से बहुत कम निकलते। ज़लाल और ज़माल के संगम, रक़ीकूल क़ल्ब, नहीफुल जुस्सा, मुतवस्सित क़द, कुशादा सीना, दराज़ रीश, बलन्द आवाज़ और खुश रफ़तार थे। आपके रोअबो ज़लाल के सामने किसी को सर ताबी की मजाल न थी। ख़लीफ़ये वक़्त को जब किसी हाज़तमन्द के सिलसिले में ख़त लिखते तो ये तहरीर फ़रमाते "अब्दुल कादिर तुमको इस बात का हुक्म देता है, तुम पर उस का हुक्म नाफ़िज़ और इस हुक्म की इताअत वाजिब है" हज़रत ग़ौसे आज़म ने बेशतर ज़बानी तलक़ीने हिदायत कि लेकिन आप से चन्द तसानीफ़ भी यादगार हैं जिन में कुछ आप के मवाइज़े हसना के मजमूए हैं: 1 फुतूहुल ग़ैब, 2 अलफतहुर रब्बानी, 3 गुनयतुत तालिबीन, 4 बशाइरुल ख़ैरात, 5 अलयुवाक़ीत वलहिकम, 6 अल फ़युज़ातुर रब्बानिया, 7 अल मवाहिबुरहमनिया, 8 ज़िलाउल ख़ातिर, 9 सिरुल असरार, 10 रदुर्फ़जा 11 तफ़सीरुल कुरआनिल हकीम (2 जिल्दें), 12 मजमूए कलाम, का शुमार आपकी निगारेशात में होता है। ग़ौसे आज़म के मुख़तलिफ़ अज़वाजे मुकर्रिमात से गयारह शहज़ादे और एक शहज़ादी तवल्लुद हुई।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़िअल्लाहु तअ़ला अन्हु का विसाले मुबारक 11/ रबीउलअव्वल 561 हिजरी / 1165 ईसवी में हुआ और ज़ायरीन के हुजूम के सबब दूसरी शब में उसी जगह तदफ़ीन अमल में आयी, जहां आप दर्से-इफ़ादा की बिसात बिछाते थे।

ख़ानवादाए-रिसालत के मुमताज़ बुजुर्ग सरकार ग़ौसे आज़म रद़िअल्लाहु तअ़ला अन्हु ने इन्तेशारे फ़ितन के दौर में जिस तरह मिल्लते इस्लामिया के वजूद को संभाला और बातिल के सामने ऐलाए कलिमतुल-हक़ की जैसी कायदाना जिम्मेदारी निभाई

वह अपने आप में बेनज़ीर है।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तअ़ला अन्हु ने अपनी तक़रीरों और तहरीरों में उम्मत के हर तबके की इस्लाहो-तज़कीर और दावतो-इरशाद का फ़रीज़ा अन्ज़ाम दिया। आप ने अक़ायद से लेकर आमाल तक, इल्म से लेकर अमल तक, ख़ानकाह से लेकर सियासत तक, तिजारत से लेकर तालीम व तदरीस तक हर तबकए-उम्मत के बेराह रबी की इस्लाह फ़रमाई और इस ज़ैल में आप ने किसी का लिहाज़ नहीं फ़रमाया। आप को खुदा दाद ऐसा रोअब हासिल था कि किसी को आप के सामने मजाले दम ज़दन ना थी। यहाँ चंद इक्तिबासात बतौर मिसाल पेश करता हूँ। तफ़सील के लिये आप की तसनीफ़ाते मुबारका और मजमूआए ख़ुतबात का मुताला करना चाहिये।

इत्तिबाए-ज़ाते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईमान की रूह है, वाबस्तगीए मुस्तफ़ा के बग़ैर हर चीज़ और हर अमल अकारत है, इमामे इश्को मोहब्बत ने ख़ूब फ़रमाया:

जान है इश्के मुस्तफ़ा, रोज़ फूज़ू करे खुदा।

जिसको हो दर्द का मज़ा, नाज़े दवा उठावे क्यों।

अल्लाह की सर ता बक़्दम शान हैं ये

इन सा नहीं इंसान, वह इंसान हैं ये

कुरआन तो ईमान बताता है इन्हें

ईमान यह कहता है मेरी जान हैं ये

अर्सए क़दीम से ज़िन्दगीक़ सिफ़त नाम निहाद सूफ़ियों का एक ग़िरोह रहा है जो ये कहता है कि हमें इत्तेबाए-मुस्तफ़ा और उन की शरिअत की क्या ज़रूरत? हम तो अल्लाह तक पहुँच चुके, रसूल की इत्तेबा की अब क्या हाज़त? इस ग़िरोह को ख़बर दार करते हुये सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तअ़ला अन्हु फ़रमाते हैं:

“तुम अपनी निसबत अपने नबी सल्लल्लाहु



अलैहि वसल्लम के साथ सही कर लो, जो सही मानों में आप का पैरोकार हुआ उस की निसबत सही है, इत्तेबा के बगैर तुम्हारा ये कह देना मुफीद नहीं कि मैं हुजूर की उम्मत में हूँ, जब तुम अफ़आलो-अक्वाल में हुजूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तेबा करोगे तो उन की सोहबत में होगे।" (अलफ़तहूरब्बानी, स-91)

इसी में दूसरी जगह इरशाद फरमाया जो शख्स नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम की पैरवी नहीं करता, एक हाथ में आप की शरीयत और दूसरे हाथ में कुरआन पाक नहीं रखता, उस की रसाई अल्लाह तआला की बारगाह तक नहीं हो सकती, वह तबाह और बरबाद हो जायेगा, गुमराही और ज़लालत उस का मुक़द्दर होगी, ये दोनों बारगाहे इलाही तक तेरे रहनुमा हैं, कुरआन पाक तुम्हें दरबारे खुदा तक और सुन्नत, बारगाहे मुस्तफ़ा तक पहुँचायगी।" (स-91)

जो शख्स आदाबे शरियत नहीं अपनाता, क्यामत के दिन आग उसे अदब सिखायगी। (स-91)

"वह हकीक़त में बेदीनी है जिस के लिये शरियत गवाही न दे।" (स-90)

मज़ीद दूसरी जगह फरमाते हैं: "ऐ लड़के! अपने दिल को रिज़्के हलाल के ज़रिये साफ़ कर, तुझे मारफ़ते इलाही हासिल हो जायगी, तू अपने लुकमे को, अपने लिबास और दिल को पाक साफ़ कर, तुझे सफ़ाई मिल जायेगी। तसव्वुफ़ सफ़ा से बना है, ऐ ऊन का लिबास पहनने वाले, तसव्वुफ़ में सच्चा सूफी वह है जो अपने दिल को अपने मौला के मा सिवा से पाक कर ले और ये मक़ाम रंग-बिरंगे कपड़े पहनने, चेहरों को ज़र्द कर लेने और कन्धों को झुका लेने, औलियाए-कराम के वाकिआत ज़बान पर सजा लेने और तस्बही व तहलील के साथ उंगलियों के मुतहर्रिक कर लेने से हासिल नहीं होता। ये मक़ाम, मौला तआला को सच्चे दिल से तलाब करने, दुनिया से बेनियाज़ हो जाने, मख़लूक को दिल से निकाल देने और अपने मौला के मा सिवा से अलग

थलग हो जाने से हासिल होता है। (फ़तहूरब्बानी, स-90)

उलमा के एक तबके को ये भी गुरुर रहता है कि हमें दूसरों की दुआओं और तौबा व इस्तिग़फ़ार की क्या ज़रूरत? दूसरे तो खुद हमारी दुआओं के मोहताज़ हैं, हम तो बख़्शो बख़्शायें हैं, अलबत्ता दूसरों की मग़फ़िरत हमारे तुफ़ैल होगी, हमें अब अमल करने की क्या ज़रूरत? इस तबके को ख़बरदार करते हुये सरकारे ग़ौसे आजम रद़िअल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं: "इल्म छिलका है और अमल मग़ज़, छिलके की हिफ़ाज़त इस लिये की जाती है कि मग़ज़ महफूज़ रहे और मग़ज़ की हिफ़ाज़त इस के लिये की जाती है कि उससे तेल निकाला जाये, वह छिलका किस काम का जिसमें मग़ज़ न हो और वह मग़ज़ बेकार है जिसमें तेल न हो, इल्म ज़ाया हो चुका है क्योंकि जब इल्म पर अमल ही न रहा तो इल्म भी ज़ाया हो गया। अमल के बगैर इल्म का पढ़ना और पढ़ाना क्या फ़ायदा देगा? ऐ आलिम! अगर तू दुनिया और आख़िरत की भालाई चाहता है तो अपने इल्म पर अमल कर और लोगों को इल्म सिखा" (अलफ़तहूरब्बानी, स-106)

मुझे तेरी तारीफ़ या बुराई, देने और ना देने की फ़िक्र नहीं है, तेरी ख़ैर और शर और तेरे मुतवज्जह होने या ना होने को भी मैं ख़ातिर में नहीं लाता, तू जाहिल है और जाहिल की परवाह नहीं की जाती, अगर तुझे मौका मिले और तू अल्लाह की इबादत करे तो तेरी इबादत मरदूद होगी, क्योंकि यह इबादत, जहालत पर मबनी है और जहालत तमाम तरफ़साद का बाइस है।" (स-70)

देखो हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम अपने हाथ से साइल को दिया करते थे, अपनी कूँटी को चारा डालते, उसका दूध दुहते और खुद अपना कुरता सिला करते। तुम उन की मुताबअत का दावा कैसे करते हो? जब के अक्वाल-अफ़आल में उन की मुख़ालिफ़त कर रहे हो।" ऐ मोलवियों, ऐ फ़कीहों, ऐ ज़ाहिदों, ऐ आबिदों, ऐ सूफ़ियों तुम में कोई



ऐसा नहीं जो तौबा का हाजत मन्द ना हो, हमारे पास तुम्हारी मौत और हयात की सारी खबरें हैं। सच्ची मुहब्बत जिस में तगव्युर नहीं आ सकता वो मुहब्बत इलाही है, वही है जिस को तुम अपने दिल की आँखों से देखते हो और वही मुहब्बत रुहानी सिद्दीको की मुहब्बत है, ऐ नफ्स ख्वाहिश, तबीअत और शैतान के बन्दो! मैं तुम्हें क्या बताऊँ? मेरे पास तो हक् दर हक्, मज्ज दर मज्ज और सफा दर सफा तोड़ने और जोड़ने के सिवा कुछ नहीं है यानी तोड़ना मा सिवाए अल्लाह से और जोड़ना अल्लाह से.....ऐ मुनाफ़िको, ऐ दावा करने वालो, ए झूठो मैं तुम्हारी हवस का काइल नहीं, अहले दिल की सोहबत इस्तिथार करो ताकि तुम को भी दिल नसीब हो लेकिन तुम्हारे पास तो दिल ही नहीं, तुम तो सरापा नफ़्स व तबीअत और हवस हो.....ऐ बग़दाद के रहने वालो! तुम्हारे अन्दर निफ़ाक़ ज़्यादा और इख़लास कम हो गया है और वे अमल बातों की फ़रावानी है, अमल के बग़ैर कौल किस काम का? तुम्हारे आमाल का बड़ा हिस्सा बेरूह जिस्म की तरह है, गुफ़लत मत करो, अपनी हालत को पलटो ताकि तुम को राह मिले, ऐ आलिमों और ज़ाहिदों! बादशाहों और सुल्तानों के लिये तुम कब तक मुनाफ़िक़ बने रहोगे? ताकि तुम उन से मालो-ज़र, शहबतों और लज़्ज़तें हासिल करते रहोगे.....(ऐ मौलवी) तू अहवाले बातिनी को नहीं पहचानता तो तू उन में कलाम क्यों करता है? तुझे अल्लाह तआला की मारफ़त हासिल नहीं, तू उस की तरफ़ क्यों बुलाता है? तू सिर्फ़ उस मालदार को पहचानता है, उस बादशाह को पहचानता है, तेरे लिये कोई रसूल व मुसिल नहीं है, तू वरअ और परहैज के साथ नहीं खाता है, तू हराम तारीक़ों से खाता है, दीन के बदले दुनिया का खाना हराम है, तू मुनाफ़िक़ है, दज़ाल है, मैं मुनाफ़िक़ों की दुकानों का दुश्मन हूँ, उन को अक्लों को तबाह करने वाला हूँ, मेरे कुदाल उस मुनाफ़िक़ का घर तबाह कर देंगे और उस का ईमान

सत्ब कर लेंगे जिसका वह दावेदार है। (स-244)

अगर कोई रहमत और बरकत बरक़ार रहे तो उसे अल्लाह की तरफ़ से जानकर शुक्र अदा करो क्योंकि अल्लाह ही हर शै पर कादिर है, अल्लाह को अपनी क़ुदरत में कामिल समझो, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उसवए हसना की पैरवी करो, हुज़ूर नबीए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कुरआनी आयात मुख़लिफ़ तरीक़ों से उतारी गई और कश्फ़ो मारफ़त की हर दूसरी हालत अपनी पहली हालत से आला व अरफ़ा हुआ करती थी और हों! जब कभी इल्तेवा और हिजाब वारिद होता तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस्तिग़फ़ार से काम लिया करते, इस्तिग़फ़ार ततहीरो-तदवीने ज़ात और ज़िलाये कल्ब का मूजिब बनती है, इस्तिग़फ़ार ही बंदे का बेहतर हाल है।

तौबा और इस्तिग़फ़ार अबुल बशर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की मिरास है, जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अपना इरादा और ख्वाहिश उजागर की तो खुदा ने हालात बदल दिये, फिर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को जब उस का एहसास दिलाया गया तो उन्होंने भी इस्तिग़फ़ार से काम लिया कि "ऐ हमारे परवरदिगार! हम ने अपने नफ़्स पर जुल्म किया है और अब अगर तू हमें माफ़ नहीं फ़रमायगा तो हम दायमी ख़सारे में रहेंगे।" फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उन को तौबा क़बूल फ़रमायी और उन्हें शऊरो-आग़ही बख़्शी और तौबा के असरार उन पर मुनक़शिफ़ किये, इस तरह उन्हें दुनिया में रहने की जगह मिली, उस में उन की औलाद भी रहने लगी, पस बंदे को हर हाल में न्याज़मंदी और इस्तिग़फ़ार को अपनाना चाहिये कि यह पैगम्बराना वसफ़ है। (अलफ़तहूरब्वानी)

फिर ऐसे दुनियादार मौलवियों से बचने की तलकीन करते हुये इरशाद फ़रमाते हैं:

उन लोगों की बात ना सुनो जो अपने नफ़्स को



खुश करते हैं, बादशाहों के सामने ज़िल्लत इस्त्रियार करते हैं, उन्हें अल्लाह तआला के अवामिर व नवाही नहीं सुनाते हैं, अगर सुनाई भी तो अज़ राहे मुनाफ़िक़त और तकल्लुफ़ सुनायेंगे, अल्लाह तआला ज़मीन को उन से और हर मुनाफ़िक़ से पाक फ़रमा दे या उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे अपने दरवाज़े की जानिब हिदायत अता फ़रमाये। (स-645)

“तुम उन उलमा की सोहबत इस्त्रियार ना करो जो अपने इल्म पर अमल नहीं करते, उन की सोहबत तुम्हारे लिये नहूसत का बाइस होगी।” (ऐज़न, स-51)

लेकिन उन उलमायें सू और दुनिया दार मौलवियों की वजह से ब्राअमल उलमाए किराम और सुलहाए इज़ाम की मोहब्बत और अकीदत कम ना हो जाये, इस लिये उम्मत मुस्तफ़वी को खबरदार करते हुये इरशाद फ़रमाते हैं:

“पहले लोग दीन और दिलों की अतिब्बा, औलिया और सौलिहीन की तलाश में मशरिक़ व मगरिब का चक्कर लगाते थे, जब उन्हें उन में से कोई मिल जाता तो उस से अपने दीन की दवा तलब करते थे, और आज तुम फ़ुक़हा, उलमा और औलिया से बुज़ रखते हो जो अदब और इल्म सिखाते हैं, नतीजा ये है कि तुम दवा हासिल नहीं कर पाते।” (ऐज़न, स-127)

अमले ख़ैर की तल्कीन करते हुये उम्मत मुसलिमा को नसीहत फ़रमाते हैं, ज़रा उस्लूब का सोज़ और तलकीन का अन्दाज़ मुलाहिज़ा फ़रमाइये, सरकार ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

“ऐ लड़के! तू दुनिया में बका और ऐश के लिये पैदा नहीं किया गया, अल्लाह तआला के नापसंदीदा उमूर को तबदील करदे, तूने समझ लिया है कि अल्लाह तआला की इताअत के लिये ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्सूलल्लाह पढ़ लेना काफी है, यह तेरे लिये उसी वक़्त मुफ़ीद होगा जब तू इस के साथ कुछ और उमूर (आमाले सौलिह) मिलायेगा, ईमान इक्रार

और अमल का नाम है। जब तू गुनाहों, लगज़िशों में मुबितला और अहकामे इलाही की मुख़ालिफ़त का मुस्तकिब होगा, उन पर इसरार करेगा, नमाज़, रोज़ा, सदका और अफ़आल ख़ैर तर्क करेगा तो यह दो शहादतें तुझे क्या फ़ायदा देंगी?”

जब तू ने ला इलाहा इल्लल्लाह कहा तो यह एक दावा है, तुझसे कहा जायेगा इस दावे पर दलील क्या है? अल्लाह तआला ने जिन चीज़ों का हुक्म दिया है उनका अदा करना, जिनसे मना किया है उन से बाज़ रहना, आफ़तों पर सब्र करना, तक्दीरे इलाही को तसलीम करना इस दावे की दलील है, जब तू ने यह अमल किये तो अल्लाह तआला के लिये इख़लास के बग़ैर मक़बूल न होंगे, कौल बग़ैर अमल के और बग़ैर इख़लास और इत्तिबाए-सुन्नत के मक़बूल नहीं (स-10)

उम्मत मुसलिमा को आख़िरत की तैयारी और क़बूले हक़ की तलकीन और दुनिया की रंगीनियों में गिरफ़्तार न होने की नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं:

“ऐ कौम! तुम लोग दुनिया के पीछे दौड़ते हो यहाँ तक कि दुनिया तुम्हें दे दी जाती है, हालांकि दुनिया औलियाए-किराम के पीछे भागती है, यहाँ तक कि दुनिया उन्हें इस हाल में अता की जाती है कि उनके आगे दस्त-बस्ता, सिर झुकाये खड़ी रहती है। तुम अपने नफ़्स को तौहीद की शमशीर बुरी से मारो और उस के लिये तौफ़ीक़ की ख़ोद पहनो और मुजाहिदा का नेज़ा, तक्वा की ढाल और यकीन की तलवार लो तो कभी उस से नेज़ाबाज़ी करो और कभी शमशीर ज़नी करो, तुम्हारा ये अमल बराबर रहे, यहाँ तक नफ़्स तुम्हारे ताबए फ़रमान रहे और तुम उस के दोश पर सवार हो जाओ, इस की लगाम तुम्हारे हाथ में रहे, तुम उसे लेकर खुशका-तर में सफ़र करो, उस वक़्त तुम्हारा रब्ब अज़्ज़वजल तुम पर फ़क़ फ़रमायेगा।” (स-279)

सरकार ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने ज़ालिम हुक्मरानों और आवाम की इस्लाह भी बहुत



ही खुले लफ्जों में फरमायी है अल फतहुर्रब्बानी में फरमाते हैं :

“तुम रमजान में अपने नफ्सों को पानी पीने से रोकते हो और जब इफ्तार का वक्त आता है तो मुसलमानों के खून से इफ्तार करते हो और उन पर जुल्म कर के जो माल हासिल किया है उसे निगलते हो, ए लोगो! अफसोस कि तुम सैर हो कर खाते हो और तुम्हारे पड़ोसी भूखे रहते हैं और फिर कहते हो हम मोमिन हैं, तुम्हारा ईमान सही नहीं।

एक दफा खलीफ़-ए-वक्त मुस्तनजिद बिल्लाह अबुल मुज़फ़्फ़र यूसुफ़ मुलाकात के लिये आया, सलाम किया और दरख्वास्त की कि मुझे कुछ नसीहत फरमायें और साथ ही दरहिम व दीनार की दस थैलियाँ पेश कीं जिन्हें दस खादिम उठाये हुये थे। आप ने कबूल करने से इन्कार कर दिया, खलीफ़ा के इसरार पर दो थैलियाँ हाथों में ले कर दबाई तो उन में से खून टपकने लगा, आप ने फरमाया: “ऐ अबूल मुज़फ़्फ़र! तुम्हें अल्लाह तआला से हया नहीं आती कि लोगों का खून चूस कर लाते हो और मुझे पेश करते हो, खलीफ़ा ये देखकर बेहोश हो गया, ग़ौसे आजम ने फरमाया “खुदा की क़सम! अगर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ताल्लुक़ का पास ना होता तो यह खून बहता हुआ खलीफ़ा के महल तक पहुँच जाता।

(कलायदुल जवाहर, स-30)

सरकार ग़ौसे आजम रद़िअल्लाहु तआला वर सरे मेम्बर बादशाहों, खलीफ़ों और अमीरों को कारे ख़ैर का हुक्म देते और बुरे कामों से मना फरमाया करते, ज़ालिमों के वाली बनाने पर बिला ख़ौफ़ो-ख़तर इनकार फरमाते, जब खलीफ़-ए-वक्त ने अबूल वफ़ा याहया बिन सईद ज़ालिम को काज़ी मुकरर किया, तो आपने वर सरे मेम्बरे खलीफ़ा को मुख़ातिब करते हुये फरमाया:

“तू ने ज़ालिम तरीन शख़्स को काज़ी मुकरर कर दिया है, कल क्यामत के दिन अल्लाह तआला को क्या जवाब

देगा? खलीफ़ा कांप गया और उस की आँखों से सैले अश्क़ रवाँ हो गया, उसी वक्त काज़ी मज़कूर को माअज़ूल कर दिया। (क़लायदुल जवाहर, स-6)

सरकार ग़ौसे आजम रद़िअल्लाहु तआला अन्हु खलीफ़-ए-वक्त को ख़त लिखते तो इस अन्दाज़ में लिखते “अब्दुल कादिर तुम्हें ये हुक्म देता है, उसका हुक्म तुम पर जारी और उस की इताअत तुम पर वाजिब है, और वह तेरा मुक़ददर और तुझ पर हुज्जत है। खलीफ़ा को मकतूबे गिरामी मिलता तो खड़े होकर उसे बोसा देता। (जुब्दतुल असरार, स-54)

आज कल आम तौर पर सूफ़ी या ख़ानकाही कहलाने वाले नाम निहाद अफ़राद का ये तराना रहता है कि किसी को बुरा न कहो, सूफ़िया किसी बदमज़हब को बुरा न कहते थे ना ही उनसे मेल-जोल तर्क करते थे। ऐसे नाम निहाद सूफ़िया के लिये सरकार ग़ौसे पाक रद़िअल्लाहु तआला अन्हु की तहरीरात ताज़ीयानए इबरत हैं। आप ने गुनियतुलालिबीन में बाज़ाबता तौर पर इस ज़माने तक मौजूद हर बदमज़हब फ़िर्के का रद्द फरमाया, ये एक तैहकीकी मौजू है कि हज़रात सूफ़िया ने अपने दौर के बदमज़हबों का किस-किस तौर से रद्द फरमाया? कोई फ़ाज़िल तबज्जो दे तो इस मौजू पर एक अच्छी ख़ासी किताब तैयार हो जाये, सरकार ग़ौसे आजम रद़िअल्लाहु तआला अन्हु इस सिलसिले में बदमज़हबों से बचने की ताकीद फरमाते हुये तहरीर फरमाते हैं :

“बदमज़हबों की मजलिस में जाकर उनकी तादाद में इज़ाफ़ा ना करे, ना क़रीब हो, न उन्हें सलाम करे क्योंकि बदमज़हबों को सलाम करना, उन्हें दोस्त बनाना है, इस लिये नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया “आपस में सलाम को रिवाज़ दो बाहम दोस्त हो जाओगे, इसी तरह बदमज़हबों की हम नशीनी ना अख़्तियार करो, और ना उनका कुर्ब दूँदो और ना खुशी के मौक़े पर उन्हें मुबारक बाद दो और



जब वह मर जायें तो उनकी नमाज़ें जनाज़ा न पढ़ो, उनका ज़िक्र हो तो उन के लिये दुआये रहमत न करो बल्कि तुम उनसे जुदा रहना और अल्लाह के लिये उन से दुश्मनी रखना, इस यक़ीन के साथ कि उन के मज़हब बातिल हैं और ये ख़याल करते हुये कि इस तर्कें ताअल्लुक में अज़ीम सवाब और कसीर अज़्र है।

हज़रत फूज़ैल बिन आयाज़ कूदिदस:सिरहु ने फ़रमाया जो शख्स किसी बदमज़हब से मोहब्बत रखे अल्लाह तआला उसके आमाल तबाह कर देगा और उस के दिल से ईमान का नूर सलब फ़रमा लेगा और अल्लाह तआला किसी बंदे को इस तर्ज़ पर पायेगा कि वह बदमज़हब से महज़ अल्लाह की रज़ा के लिये बुज़ रखता है तो मुझे यक़ीन है कि अल्लाह तआला उसके गुनाह बख़्श देगा अगरचे उसके पास नेक अमल का ज़ख़ीरा थोड़ा ही क्यों ना हो। (गुनीयतुलालिबीन)

सरकार गौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की हयाते तय्यबा का मुताआला करने के बाद इस्लामी दावत के जो रौशन निकात सामने हैं उनके चंद गोशे ये हैं: (1) दूसरों को दावते इस्लाह देने से पहल खुद अपनी इस्लाह करनी चाहिये वरना खातिर ख़्वाह असर नहीं होगा। (2) दाई को फ़िस्को-फ़ज़ूर और जुल्मो-सितम के सामने कभी घुटने नहीं टेकना चाहिये बल्कि बरमला इज़हारे हक़ करना चाहिये, देखिये हज़रत गौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने ज़ालिम हुक्मरानों से लेकर रियाकार जाहिदों, अपने दौर के जुम्ला बदमज़हबों तक के तबक़ात पर बड़ी तनकीद की और उनकी जानिब से होने वाले मुमकीना शरारतों की हरगिज़ परवा ना की।

दाई को इक्तेदा ही से सरज़निश का अन्दाज़ नहीं अपनाना चाहिये बल्कि ज़हनों को अपने अख़लाक़, नर्म गुफ़्तगू और हक़ीमाना तफ़होम से हम आहंग करना चाहिये, देखिये सरकार गौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने पहले नरम-नरम गुफ़्तगू फ़रमायी फिर कड़ी

तनकीद शुरू की।

दाई को हालात की मुकम्मल नब्बाज़ी हासिल होनी चाहिये ताकि वह समाज की दुखती रग पर उंगली रख सके और अपनी ज़िम्मेदाराना क़्यादत के तकाज़े पूरे कर सके। सरकार गौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु के औराके हयात के मुताआले से हमें यही सबक़ मिलता है। दौरे हाज़िर को ऐसी ज़िम्मेदाराना क़्यादत की ज़रूरत है।

स. नं. 53 का बक़िया

### ऑफ़ लाइन ब्रांच कायम करने का तरीका

जमात रज़ा ए मुस्तफ़ा के हेड ऑफ़िस से ब्रांच का फॉर्म हासिल करें और अपनी आवश्यक जानकारी भरके हेड ऑफ़िस में जमा करें।

हमारी Android Application Markaz Ki Awaz के द्वारा भी आप मेम्बरशिप हासिल करने के लिये apply for Membership के आप्शन पर जाकर अपनी आवश्यक जानकारी भरके Apply कर सकते हैं।

### ऑनलाइन ब्रांच का तरीका

जमात रज़ा ए मुस्तफ़ा की वेबसाइट

[www.jamatrazaemustafa-org](http://www.jamatrazaemustafa-org) में apply for branch के आप्शन पर जाकर अपनी आवश्यक जानकारी भरके Submit करें।

हमारी Android Application Markaz Ki Awaz के द्वारा भी अपने इलाके में ब्रांच कायम करने के लिये apply for branch के आप्शन पर जाकर अपनी आवश्यक जानकारी भरके Apply कर सकते हैं।

इस लिंक के जरिये भी ब्रांच फॉर्म / मेम्बरशिप फॉर्म भर सकते हैं [www.jamatrazaemustafa.org/branch](http://www.jamatrazaemustafa.org/branch)

### सुन्नी दुनिया कि एजेन्सी हासिल करें

माहानामा सुन्नी दुनिया उर्दू, हिन्दी कि एजेन्सी हासिल करें और एक बेहतरीन तिजारत को अपनाएँ, एजन्सी कम से कम 10 कापीयों पर दी जाएगी जिसके लिए इदारा आपको 25% कमिशन देगा।



# फज़ीलते ग़ौसे आज़म

अज: मौलाना अनीस आलम सिवानी ★

अस्लाफ़ व अख़लाफ़

हज़रत सय्यदना सरकार ग़ौसे आज़म रद़िअल्लाहु अन्हु अल्लाह तआला के मुक़र्रब और बरगुज़ीदा बंदों में वही मक़ाम रखते हैं जो सूरज को बाकी सितारों पर मर्तबा हासिल है या इंसानी जिस्म में बाकी आज़ा पर जो फ़ज़ीलत सर को हासिल है, सिराजुल अवारिफ़ में शेख़ अबुल हुसेन अहमद नूरी मारहरवी ने फ़रमाया कि तमाम औलिया पर सय्यदना सरकार ग़ौसे आज़म रद़िअल्लाहु तआला अन्हु की फ़ज़ीलत ज़लीला तसलीम शुदा है, किसी जुड़ फ़ज़ीलत की बुनियाद पर इस इजमाई मसअले को तोड़ा नहीं जा सकता, उसी किताब में ज़िक्र है कि जब अल्लाह के हुक्म से शेख़ अब्दुल कादिर जिलानी ने फ़रमाया कि मेरा क़दम तमाम औलिया अल्लाह की गरदनों पर है तो तमाम औलिया ने अपनी गरदनों को झुका दिया, उस वक़्त ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ जवान थे और ख़ुरासान की किसी पहाड़ी पर इबादत में मशगूल थे, जैसे ही ये अवाज़ सुनाई दी फ़ौरन आप ने सर झुका दिया और कहा ऐ मेरे सरदार आप का क़दम मेरी गरदन पर ही नहीं बल्कि मेरे सर पर है, अल्लाह रब्बुल इज़ज़त के हुक्म से ख़्वाजा की इस सआदत मन्दी का हाल जब सरकार ग़ौसे आज़म को मालूम हुआ तो आप ने फ़रमाया: ग़्यासुद्दीन के बेटे ने इताअत में सक्क़त की, फिर आपने फ़रमाया अन क़रीब विलायते हिन्दुस्तान ख़्वाजा मुईनुद्दीन के हिस्से में आने वाली है, ख़्वाजा ने अर्ज़ किया हमें इराक़ अता किया जाये तो आप ने फ़रमाया कि इराक़ की विलायत शेख़ शहाबुद्दीन सोहरवदी को पहले ही मुक़र्र हो चुकी है।"

ग़ौसे आज़म की विलादत 1 रमज़ान 470

हिजरी लिखी है, शेख़ अबुल फ़ज़ल अहमद बिन सालेह जेली का एक कौल इमामे याफ़ई से नक़ल किया है कि ग़ौसे आज़म की विलादत 471 हिजरी में हुई और 488 हिजरी में आप बग़दाद तशरीफ़ ले गये।

हज़रत ग़ौसे आज़म अजमी और नजीबुलतरफ़ैन सय्यद थे, वालिद की तरफ़ से हसनी और वाल्दा की तरफ़ से हुसैनी, आप के वालिद का नाम अबू स्वालेह मूसा जंगी और वाल्दा का नाम उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा था, आप के दादा का नाम अबू अब्दुलाह और नाना अब्दुलाह सुमई थे, बतने मालूफ़ गील है। जिसे गीलान और अहले अरब उसी को जील और जिलान कहते हैं, ये तबरीस्तान के पास एक इलाका है जो अजम में बाँके है उसी के क़स्बा नीफ़ में आप पैदा हुये, चार साल की उम्र में जब आप ने तालीम का आगाज़ किया तो बिस्मिल्लाह हिरहमानिरहीम से शुरू किया और मुतवातिर अद्वारह पारे पढ़ दिये, उस्ताद की हैरत की इन्तेहा न रही, उस्ताद ने पूछा कि मदरसे में पहला दिन है फिर ये अद्वारह पारे कैसे याद कर लिये? तो फ़रमाया कि शिकमे मादर में ही मैं अद्वारह पारे का हाफ़िज़ हो चुका था इसलिए के मेरी वाल्दा अद्वारह पारे की हाफ़िज़ा हैं, वह रोज़ाना तिलावत करती थीं, मैंने अल्लाह के फ़ज़ल से माँ के पेट में सुनकर याद कर लिया था।

तमाम अहले इल्म का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि आप पैदाइशी वली थे, इसीलिये आप मदरसा जाते तो असातज़ा आप का एहताराम करते, जगाह खुद बा खुद क़ुशादा हो जाती, कभी खेल-कूद में या दुनियावी बातों में मशगूल होते तो कानों में आवाज़ सुनाई देती कि क्या तू इसी के लिये पैदा किया गया है, अवाज़ देने वाला कहीं नज़र नहीं आता, आप वहशत ज़दा होकर माँ की ग़ोद में



जाकर छिप जाते, बचपने में रमज़ान के दिनों में तुलूए सुबहे सादिक से गुरुबे आफ़ताब तक दूध नहीं पीते थे।

**असातज़ए किराम:**

आप के असातज़ा में शेख़ हम्माद बिन मुस्लिम, अबुलवफ़ा अली बिन अकील, अबुल खत्ताब महफूज़ बिन मुहम्मद अल्कलवाज़ी, अबूल हुसैन मुहम्मद बिन काज़ी अबू याला, अबू ग़ालिब मुहम्मद बिन हसन बाक़िलानी, अबू ज़करिया तबरेज़ी, और हज़रत काज़ी अबू सईद मुबारक बिन अली मख़ज़ूमी वगैराह हैं।

**इल्मी मुक़ाम और तस्नीफ़ात:**

आप अपने वक़्त के साहिबे मरतबा आलिम व फ़कीह थे। सालों तक फ़िक्ह व इफ़्ता की ज़िम्मेदारी निभाई, आप का मसलक हंबली था, इमाम अहमद बिन हम्बल के मसलक पर फ़तवे देते थे, बेपनाह इल्म व फ़ज़ल के मालिक थे, तक्वे और तहारत, जोहदो-वरा, इत्तेबाये सुन्नतो-शरीयत में आला मुक़ाम रखते थे, बक़सरत कश्फ़ के वाक़ियात किताबों में मज़कूर हैं, आप से बेशुमार करामातें सादिर हुई, इल्मी ऐतबार से दीगर औलियाए-कराम पर आप को फ़ौकियत हासिल है, आप ने कई किताबें तस्नीफ़ फ़रमाई, शेर गोई पर कुदरत रखाते थे, आप की तसनीफ़ात में गुनयतुल्लाहिलबीन, फ़तुहुलगायब, अलफ़तहुर्रब्बानी, बशाइरुलख़ैरात, अलमवाहिबुर्रहमानिया, सिरुल अंसार, रदुर्दुर्फ़ज़ा, तफ़्सीरे क़ुरआन और इल्मे रियाज़ी में एक किताब है, रिवायतों में आया है कि आप की तसनीफ़ात की तादाद 69/ है, हर सिलसिले में ग़ौसे आज़म का फ़ैज़ान जारी है।

हज़रत सय्यदना ग़ौसे आज़म शेख़ अब्दुल कादिर जीलानी के फ़ज़ाइल व मनाकिब बेशुमार हैं, तमाम बलियों का सिलसिला आप तक पहुँचता है, जितने भी सलासिलए सूफ़िया हैं ख़्वाह कादरिया, चिशितया, नक़्शबनदिया, सोहरवर्दिया यह सब के सब ग़ौसियते मआब के फ़ैज़ से ही जारी हैं, यह चार मशहूर सलासिल हैं, इन के अलावा भी बहुत से सलासिल हुये,

कुछ हैं, कुछ ख़त्म हो गये, कादरिया, चिशितया, नक़्शबनदिया, सोहरवर्दिया की बहुत सी शाखें हैं।

**ग़ौसियत क्या है ?**

इस्तिलाहे सूफ़िया में ग़ौसियत एक दर्जा और मरतबा है जो बहुत कम बलियों को नसीब होता है, हज़रत शेख़ अब्दुल कादिर जीलानी को अल्लाह ने ग़ौसियते कुबरा के मुक़ामे रफ़ीअ से सरफ़राज़ फ़रमाया और अपना कुर्ब अता किया और अपने महबूबों में शामिल फ़रमाया था।

हज़रत ग़ौसे पाक को ग़ौसियत के अलावा अफ़राद का मनसब भी बख़्शा गया, सूफ़िया के नज़दीक ये इतना अजीम मनसब है कि इस पर ग़ौसियत भी फ़ख़र करती है, हज़रत ग़ौसे आज़म का एक लक़ब सय्यदुल अफ़राद भी है।

**मुरीदे ख़ास की सच्ची इरादात:**

हज़रत ग़ौसे आज़म के ज़माने में एक बुजुर्ग सय्यदी अब्दुल रहमान तफ़्स्ज़ी ने एक रोज़ बर सरे मिम्बर फ़रमाया मैं औलिया में ऐसा हूँ जैसे कुलंग सब से ऊँची गर्दन वाला, वहीं हज़रत ग़ौसे पाक के एक मुरीदे ख़ास सय्यद अहमद भी थे, ये सुनकर के उन्हें ना ग़वार गुजरा और महसूस हुआ के यह बुजुर्ग हमारे शेख़ हज़रत ग़ौसे आज़म पर अपनी बरतरी ज़ाहिर कर रहे हैं, बस गुदड़ी फेंक दी और खड़े हो गये, और कहा कि मैं आप से कुश्ती लड़ना चाहता हूँ, हज़रत सय्यद अहमद को शेख़ अब्दुर्रहमान ने कई मरतबा सर से पैर तक, पैर से सर तक देखा और ख़ामोश हो गये, लोगों ने सबब दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया मैं ने देखा कि इस के जिस्म का कोई रींगटा रहमते इलाही से खाली नहीं है और उन से फ़रमाया गुदड़ी पहन लो, उन्होंने फ़रमाया कि फ़कीर जिस कपड़े को उतार कर फेंक देता है उसे दोबारा नहीं पहनता, बारह रोज़ के रास्ते पर उन का मकान था, अपनी ज़ौजा को अवाज़ दी, फ़ातिमा मेरे कपड़े दो, उन्होंने वहीं से हाथ बढ़ा कर कपड़े दे दिये और उन्होंने हाथ बढ़ा कर ले लिये, इस नज़ारे को देखने के बाद सय्यदी अब्दुर्रहमान ने पूछा तुम किस के मुरीद हो, फ़रमाया



सरकार गौसियत मआब का गुलाम हूँ, इतना सुनने के बाद सय्यदी अब्दुर्रहमान ने अपने मुरीदों को बग़दाद भेजा कि जाकर सरकार गौसे आज़म से अर्ज़ करो, बारह बरस से कुर्बे इलाही में हाज़िर होता हूँ ना आप को आते देखा ना आप को जाते देखा, इधर गौसे आज़म ने अपने दो मुरीदों को तफ़सूज़ भेजा और फ़रमाया रास्ते में शेख़ अब्दुर्रहमान के दो मुरीद मिलेंगे उन को वापिस ले जाओ और शेख़ अब्दुर्रहमान को जवाब दो कि वह जो सहन में है क्यों कर देख सकता है उसे जो दालान में है, और जो दालान में हो उसे कैसे देख सकते हैं जो कोठरी में हो, और वह जो कोठरी में हो उसे क्योंकर देख सकता है जो नेहाँ खाने में हो, मैं नेहाँ खाने खास में हूँ और अलामत ये है कि फ़ुल्लौ शब 12 हज़ार औलिया को खिलअत अता हुये थे, याद करो कि तुम को जो खिलअत मिला था वो सब्ज़ था और उस पर सोने से कूल हुवल्लाह शरीफ़ लिखी थी, इतना सुनना था कि शेख़ अब्दुर्रहमान ने सर झुका लिया और कहा: सच कहा शेख़ अब्दुल कादिर ने और वह इस वक़्त तमाम औलिया के सुल्तान हैं।

इस वाक़िये से हज़रत शेख़ अब्दुल कादिर जीलानी की कुर्बत व मक्बूलियत का पता चलता है, हज़रत गौसे पाक खुदाए वाहिद की बारगाह में उस मुक़ाम पर फ़ाईज़ थे जहाँ दूसरों की रेसाई नहीं हो सकती, बड़ी-बड़ी ऊँची गर्दन वाले आप की ख़िदमत में झुके हुए हाज़िर होते, आप के मुरीदों की शान के आगे औलियाए-ज़माना सर झुकाते फिर आप की अज़मत का कैसे कोई अन्दाज़ा कर सकता है।

### एक नसीहत आमेज़ हिकायत:

एक दिन ख़लीफ़ा मुसतन्ज़िद बिल्लाह ने हज़रत सरकारे गौसे आज़म की बारगाह में अशरफ़ियों के दस तोड़े नज़र किये, आप ने लेने से मना फ़रमाया जैसा कि आप को मालूम था, लेकिन जब ख़लीफ़ा का इसरार बढ़ा तो आप ने एक तोड़ा दायें हाथ में और एक बायें हाथ में लेकर रगड़ना शुरू किया तो अशरफ़ियों से खून टपकने लगा, आप ने ख़लीफ़ा को मुख़ातिब करके

फ़रमाया: क्या तुम लोगों को खुदाये बुजुर्गों-बरतर से शर्म नहीं आती कि इन्सानों का खून चूसते हो और उसे जमा करके मेरे पास लाते हो? यह देखकर ख़लीफ़ा पर ऐसा असर हुआ कि गुशी तारी हो गई, अल्लाह वालों के नज़दीक हराम माल की कोई क़दरो-कीमत नहीं होती, इसलिए कि माले हराम के इस्तेमाल से रहमते इलाही दूर होती है, हराम माल का इस्तेमाल इबादतो-रियाज़त को अकारत कर देता है फिर इबादत का जौक व शौक ख़त्म हो जाता है और दिल यादे इलाही में नहीं लगता।

हज़रत सय्यदना शेख़ अब्दुल कादिर जीलानी उलूमे ज़ाहिरी और उलूमे बातिनी दोनों में यक्साँ कमाल रखते थे, जिस तरह आप की दावतो-तब्कीग़ से मुतासिर हो कर हज़ारो लोगो ने अपने गुनाहों और बुराईयों से तौबा किया और कसीर तादाद में यहूदी-नसारा ने इस्लाम क़बूल किया, उसी तरह आप की तदरीसी ख़िदमत से बहुतों ने उलूमे ज़ाहिरी में कमाल हासिल किया, इल्मे ज़ाहिर के ज़रिये आप इल्मे बातिन के क़रीब करना चाहते थे, इसलिये कि इल्मे ज़ाहिर के बग़ैर मारीफ़ते खुदावंदी के हासिल करने की दौड़ में तालिबे राह के भटकने के इम्कानात क़वी होते हैं, इसीलिये तमाम औलिया अल्लाह पहले शरीअते नब्वी के हुसूल को ज़रूरी करार देते हैं।

हुसूले इल्म के बाद हज़रत सय्यदना गौसे आज़म के उस्ताद काज़ी अबू सईद मुबारक मख़ज़ूमी के इरशад फ़रमाने के मुताबिक़ गौसे आज़म ने मदरसा बाबुल अज़ज़ में तदरीस की ज़िम्मेदारी क़बूल फ़रमायी, आप के आलिमाना फ़ाज़िलाना तदरीस की शौहरत के आम होते ही तालीबाने उलूमे नबूवत और आशिक़ाने शरियत का जम्मे ग़फ़ीर उमड़ पड़ा, तालीबाने मुहब्बतों अक़ीदत की भीड़ के सामने मदरसा बाबुल अज़ज़ की गुन्जाइश कम पड़ने लगी और हाल यह हुआ कि तलबा को जगह नहीं मिलती थी, इस हालत को देखकर बाअसर अहले ख़ैर ने ज़रे कसीर सर्फ़ करके मदरसे की तौसी की। इस वक़्त यह मदरसा बाबुल अज़ज़ के बजाये हुज़ूर गौसे आज़म की तरफ़ निस्बत करते हुए "मदरस



# हज़रत मुजददिद अलफे सानी!

रदिल्लाहु अन्हु

हयातो-ख़िदमात

अज: डॉ. इक़बाल अहमद अख़तरुल कादरी ★

इमामे रब्बानी मुजददिदे अलफे सानी हज़रत शेख़ अहमद सरहिन्दी रहमातुल्लाहि अलैहि 971 हिजरी को हिन्दुस्तान के मशरिफ़ी पंजाब के इलाक़ा सरहिन्द में पैदा हुये, आप के वालिद शेख़ अब्दुल अहद चिश्ती रहमातुल्लाह अलैह, अपने वक़्त के ज़लीलुल क़द्र आलिम व आरिफ़ थे, हज़रत मुजददिदे अलफे सानी का सिलसिलए नसब 29 वास्तों से अमीरुलमोमेनीन सय्यदना हज़रते उमर फ़ारूके आजाम रदिल्लाहु अन्हु से जा मिलता है, आपने बेशतर उलूम अपने वालिद माजिद से हासिल किये, मौलाना कमालुद्दीन कश्मीरी मौलाना याकूब कश्मीरी और काज़ी बहलूल बदख़शी वगैराह से उलूमे माकूला व मनकूला की तहसील फ़रमाई, क़िल्आ ग्वालियार में तज़र बंदी के ज़माने में कुरआने करीम भी हिफ़ज़ फ़रमाया था, थानेसर के शेख़ सुल्तान थानेसरी की सहाबज़ादी से अक़दे मसनून हुआ जो कि अकबर बादशाह के मुक़र्रेबीन में से थे, जिसकी वजह से शाही दरबार से एक ताल्लुक़ पैदा हो गया जो कि तक्लीगो-इरशाद का ज़रिया बना, आप बरें सगीर के मारुफ़ बुजुर्ग हज़रत ख़्वाजा बाकी बिल्ला रहमतुल्लाह अलैह से सिलसिलए नक़्शबंदिया में बैत हुये और 1008 हिजरी में इजाज़त व ख़िलाफ़त से तवाज़े गये, जबकि सिलसिलये चिश्तिया में वालिद शेख़ अब्दुल अहद चिश्ती और सिलसिलये कादरिया में हज़रत शाह कमाल कादरी कैथली रहमातुल्लाह अलैह से ख़िरक़ये ख़िलाफ़त पहले ही हासिल हो गया था, आप हज़रत ख़्वाजा बाकी बिल्लाह के मन्गूरे नज़र मुरीदों में थे जिसकी बदौलत आसमाने इल्मो इरफ़ान पर आफ़ताब बनकर चमकें और अहदे अकबरी की तारीक़ फ़ज़ाओं

को नूरे ईमान से रौशन कर दिया।

आप की इस्लाही कोशिशों का आगाज़ अकबर बादशाह के ज़माने से हुआ और जहाँगीर बादशाह की हुकूमत में कोशिशें बार आबर हुईं, सियासी मक़ासिद के हुसूल के लिये अकबर ने “दीने इलाही” के नाम से एक नये मज़हब की बुनियाद रखी जिसका मक़सद मुसलमानों और हिन्दुओं को मिलाकर एक क़ौम बनाना था, अकबर के इस नज़रिया के ख़िलाफ़ हज़रत मुजददिदे अलफे सानी ने “दो क़ौमी नज़रिये” का ऐलान फ़रमाया और यह बताया कि कुफ़्र और इस्लाम दो अलग अलग चीज़ें हैं, इस पाकीज़ा नज़रिया की तरवीज़ व इशाअत के लिये आप ने बेशुमार मकतूबात तहरीर फ़रमाए जो कि “मकतूबाते मुजददिदे अलफे सानी” के नाम से किताबी सूरत में शाय हो गये हैं।

हिन्दुस्तानी मुस्लिम मुआशरे की इस्लाह और तरक्की के लिये आप ने जो कुछ किया वह किसी से पोशीदा नहीं, शरियत से बेगाना होने वालों को अपने इल्मी मुकालमात और मकतूबात के ज़रिये आशानाये शरिअत किया, जो सूफीया राहे तरीक़त की हकीक़त से ना वाक़्फ़ियत की बिना पर गुमराह हो गये थे, उन को तरीक़त का वाक़िफ़ कार बनाया “नज़रियए वहदतुल बुजूद” की गुलत ताबीरात की वजह से लोग गुमराह हो रहे थे, आप ने उस नज़रिया की लाज रखते हुये उसके साथ “नज़रियए वहदातुश शुहुद” पेश फ़रमाकर जो दिल और दिमाग़ दोनों के करीब था और यही वह नज़रिया था जिस ने शायरे मशरिफ़ डॉक्टर इक़बाल की फ़ि़क़्र में इक्लाब पैदा किया, नज़रियए “वहदतुल बुजूद” की गुलत ताबीरात से जो हलाक़त फैल रही थी हज़रत मुजददिदे अलफे सानी के “तसव्वुरे वहदतुश



फ़हम को आम लोगो के लिये काबिले फ़हम बना दिया, जो फ़िक्के मुस्लिम की हर सतह पर इस्लाह करता हुआ एक अजीम इनक़लाब का सबब बना, हज़रत मुजहिदे अलफ़े सानी ने ज़ालिम व जाबिर हाकिमे वक़्त के ग़लत फैसलों पर बर वक़्त तनक़ीद की यहाँ तक कि आप को कैदो-बन्द से दो चार होना पड़ा, क़िलआ ग्वालियर में कैद और फिर नज़र बन्दी ने आप को इसलाही कोशिशों के असरात को अवाम और हुकूमते वक़्त में और देरपा बना दिया, आप की असौरी इस्लामी निज़ामे हुकूमत के लिए रहमत बन गई, आप मन्ज़िले मक़सूद की जानिब रवों दवाँ रहे और अजीमत पसनदी की ऐसी शानदार मिसालें कायम कीं जिस से मुर्दा दिल जिन्दा हो गये और एक अजीम इन्क़लाब आ गया, बादशाह के हुज़ूर सजदये ताज़ीमी तर्क कर दिया गया, शराब और दीगर ख़ुराफ़ात पर पाबन्दी लगा दी गयी, आपकी कोशिशों से शिआरे इस्लाम को ख़ूब फ़रोग हुआ, फिर जहाँगीर बादशाह की तख़्त नशीनी के बाद आप ही की कोशिशों से सलतनत में उमूरे मजहब और सियासत में मशवरह के लिये उलमा का बाकायदा कमीशन मुक़र्रर कर दिया गया जो हुकूमते वक़्त को अहकामे इस्लामी से बर वक़्त ख़बरदार रखता था।

हज़रत मुजहिदे अलफ़े सानी के इसलाही कारनामों को बयान करने के लिये तबील दफ़्तर की ज़रूरत है। मुमताज़ माहिरे तालीमो-मोअरिख़ प्रोफ़ेसर डॉ० मुहम्मद मसऊद अहमद के ज़ेरे सरपरस्ती एक तीन रुकनी बोर्ड (जिसमें राक़िम शामिल है) ने 2007 ईसवी में हज़ारों सफ़हात पर मबनी 15 जिल्दों में “इनसाइक्लो पीडिया जहाने इमाम रब्बानी मुजहिदे अलफ़े सानी” मुरत्तब किया है, जिसे इमाम रब्बानी फ़ाउन्डेशन कराची ने शाय किया, हज़रत मुजहिदे अलफ़े सानी हिन्दो-पाक के मुसलेहीन में मुमताज़ मक़ाम रखते हैं, उन कि मोमिनाना बसौरत ने चन्द बरसो में ख़ून का एक क़तरा बहे बग़ैर अजीम इनक़िलाब बरपा कर के मुसलमानान बरें सगीर को मजहबी, सियासी और रूहानी सतह पर

इसतिहकाम बख़शा।

आप की मशहूर तसानीफ़ में फ़ारसी “मकतूबात मुजहिदे अलफ़े सानी” ज़्यादा मशहूर हुई, उन के अरबी, उर्दु तुरकी और अंग्रेज़ी ज़बानों में तराजिम भी शाये हो चुके हैं जब कि यह तसानीफ़ भी आप की यादगार हैं, इसबातुन नबुव्वत, रिसाला दर इल्मे हदीस, रिसाला दर मसअला वहदतुल वुजूद, मबदा व मआद, मुकाशिफ़ते ग़ैबिया/ऐनिया, मआरिफ़े लदुनिया, रददुर्फ़ज़ा, शरह रूबाइयाते ख़्वाजा बेरंग, रिसाला ताईन बला ताईन, रिसाला मक़सूदुस्सालेहीन, आदाबुल मुरीदीन और रिसाला ज़ज्बो-सुलूक।

मुसलमान मुसलेहीन को बनज़रे तहकीक़ देखें तो हज़रत मुजहिदे अलफ़े सानी हर तबक़े में आला व अफ़ा नज़र आयेंगे और ना सिर्फ़ ये बल्कि हर सिनफ़े कमाल में अकमल होने के साथ आप बयक़ वक़्त सारी ख़ूबियों के जामे भी नज़र आते हैं, इसी बिना पर आप के सर पर “तजदीदे अलफ़े सानी” का ताज रखा गया जो विलायत में एक ऊंचा मक़ाम है, हुज़ुरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इरशाद के मुताबिक़ हर सदी के आगाज़ में मुजहिद पैदा हुये और उनहों ने तजदीदे दीन की ख़िदमात अन्जाम दीं लेकिन जब हम उन के हालाते ज़िन्दगी पर नज़र डालते हैं तो वाज़ेह तौर पर नज़र आता है कि उन्होंने दीन के किसी ख़ास शोबे में ही तजदीदी कारनामे अन्जाम दिये लेकिन ऐसी ज़ामिअत और हमा गीरी कहीं और नज़र नहीं आती जो हज़रत मुजहिदे अलफ़े सानी की सीरते तय्यबा में है, इस हकीक़त से मुजहिदे मिअत और मुजहिदे अलफ़, का फ़र्क़ रोज़े रोशन की तरह अयाँ है।

इसके अलावा ये पहलु भी काबिले ग़ौर है कि इन मुजहिदीन के बारे में उलमा का इख़तिलाफ़ पाया जाता है, बाज़ उलमा जिस हस्ती को एक सदी का मुजहिद क़रार देते हैं, दूसरे उलमा इसी सदी का मुजहिद दूसरी हस्ती को तसलीम करते हैं लेकिन ये अजीब इत्तिफ़ाक़ है कि हज़रत मुजहिदे अलफ़े सानी के मुजहिद



काबिल तबज्जुह है कि कुबाए तजदीद आप के कामते अक़दस पर कुछ ऐसी मोजू हुई है कि जब “मुजहिद” कहा जाता है तो फौरन ज़हन आप की तरफ चला जाता है, कोई दूसरी शख्सियत ज़हन में नहीं आती बल्कि उम्मत मुसलिमा आप को मुजहिद ही के लक़ब से जानती है, अल्लामा अब्दुल हकीम सियाल कोटी अलैहिरहमा ने हज़रत मुजहिद को “मुजहिददे अल्फे सानी” के ख़िताब से याद किया था, यह एक ऐसी बाज़ेह और रौशन हकीक़त थी कि उस कि सदाये बाज़ ग़शत तमाम आलमे इस्लाम में सुनी गयी और सारे अकाबिर ने आप को “मुजहिदे अल्फे सानी” तसलीम किया और हर ज़माने में इसी ख़िताब से याद किया और आप के तजदीदी कारनामों का एतराफ़ किया, चुनाँचे हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहिदिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह हज़रत मुजहिद के एक रिसाला की शरह में उम्मत मुस्लिमा पर जो आपके एहसानात हैं उन की तफ़सील लिखने के बाद लिखते हैं कि: “हज़रत मुजहिद से वही शख्स मुहब्बत रखेगा जो मोमिन, तफ़्वा शिआर होगा और उन से वही बुग़्ज रखेगा जो बदबख़्त फ़ाजिर और शक़ावत विसार होगा, आज जो मसाजिद में आजानें दी जा रही हैं और मदारिस से क़ालल्लाहु तआला व क़ाल्तरसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की दिल नवाज़ सदायें बुलन्द हो रही हैं और ख़ानकाहों में जो ज़िक्रो-फ़िक्र हो रहा है और क़ल्बो-रूह की गहराईयों से जो अल्लाह की याद की जाती है या लाइलाह: इल्लल्लाह की ज़र्बे लगाई जाती हैं उन सब की गर्दनो पर हज़रत मुजहिद का बारे मिननत है अगर हज़रत मुजहिद इस इलहादो-इरतिदाद के अक़बरी दौर में उस के ख़िलाफ़ जिहाद ना फ़रमाते और वह अज़ीम तजदीदी कारनामा अनजाम ना देते तो ना मसाजिद में आजानें होतीं, न मदारिस दीनिया, में क़ूरआनो-हदीस, फ़िक्र और बाक़ी उलूमे दीनिया का दर्स होता और ना ख़ानकाहों में सालेकीनो-ज़ाक़ीरीने अल्लाह के रूह

अफ़ज़ा ज़िक्र से ज़मज़मा सन्ज होते, इल्ला माशा अल्लाह।”

आज मुसलमान जिस तरह फिरकों में बटे हुये हुये और इस से जो वाक़ियात रूनुमां हुआ करते हैं, सब जानते हैं, इस वक़्त हमारे सामने मुख़तलिफ़ मकातिबे फ़िक्र हैं इन में से बाज़ हज़रत मुजहिद से अक़ीदतो-मुहब्बत रखते हैं उनकी अज़मत के काएल हैं, उनकी तारीफ़ व तौसीफ़ में रतबुल्लिसान हैं और उनको अपना इमामो-रहबर समझते हैं मगर इस चांद के लिये परवाने और बुलबुल में लड़ाई हो रही है, परवाना कहता है कि वह शमा है इसलिये मेरा महबूब है, बुलबुल कहता है कि वह फूल है इसलिये जानो-दिल से मैं उस पर फ़िदा हूँ।

इन मकातिबे फ़िक्र के इख़तेलाफ़ की वजह से इस्लाम को इल्मी सतह पर अज़ीम नुक़सान पहुँच रहा है इस लिये कमज़क़म वह मकातीबे फ़िक्र जो हज़रत मुजहिद को अपना रहनुमा तसलीम करते हैं वहीं आप की तालीमातो-हिदायात को सामने रख कर मुत्तहिदो-मुत्तफ़िहो जायें तो इस्लाम के ख़िलाफ़ प्रोपोगेन्डा पर काफ़ी काबू पाया जा सकता है।

हज़रत मुजहिद तरीक़त के चारों सिलसिलों से फ़ैज़ याब हुये, गोया सिलसिलए मुजहिदिया की मिसाल उस दरया की सी है जिसमें चारों तरफ़ से नहरें आकर मिलती हैं, उस दरया से अगर कोई चुल्लु भर पानी पी लेता है तो उसने हकीक़त में सब नहरों का पानी पी लिया, इसलिये सिलसिलाये आलिया मुजहिदिया के मुतवस्सेलीन को चारों सलासिल का फ़ैज़ पहुँच रहा है।

हुज़ुरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि बड़ा जिहाद जाबिर हुक्मरान के सामने कलामए हक़ बुलन्द करना है, मुजहिदे अल्फे सानी इस हदीस की अमली तफ़सीर थे, आप ने दो जाबिर हुक्मरानों के सामने हक़ का प्रचार कर के इहयाये इस्लाम और तजदीदे दीन का अहम सर अनजाम दिया, जिस पर मिल्लते इस्लामिया ने आप के



“मुजहिदे अल्फे सानी” होने का इक्कार किया, आप की इल्मी और रूहानी फ़ज़ीलत को हिन्दो-पाक के हर मसलक व सिलसिले के अकाबिर उलेमा व सूफ़िया ने माना, सराहा, अपनी तसानीफ़ में जाबजा आप के हवाले दिये और हज़रत मुजहिदे अल्फे सानी के अक़्वालो-इरशादात से इस्तदलाल किया है, जिन में इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरेलवी अलैहि रहमा जैसी हस्तियां भी शामिल हैं, शायरे मशरिक डॉक्टर इक़्बाल जब हज़रत मुजहिदे अल्फे सानी की बारगाह में हाज़िरी के लिये सरहिन्द शरीफ़ पहुँचे तो आप के रूहानी और इरफ़ानी कमालात से मुतअस्सिर हो कर इन अशआर में अपना ख़िराजे अकीदत पेश किया:

हाज़िर हुआ मैं शेख़े मुजहिद की लहद पर  
वह ख़ाक़ कि है ज़ेरे फ़लक मतलए अनवार

उस ख़ाक़ के ज़रों से हैं शर्मिन्दा सितारे

उस ख़क़ में पोशिदा है वह सहिबे असरार

गर्दन न झुकी जिस की जहांगीर के आगे

जिसके नफ़से गरम से है गरमीए अहरार

वह हिन्द में सरमाए-मिल्लत का निगहबान

अल्लाह ने बर वक्त किया जिसको ख़बरदार

हज़रत मुजहिदे अल्फे सानी ने इस्लामियाने

हिन्द की रुशदो-हिदायत के लिये सालासिले तरीक़त चिश्तिया, कादिरिया, नक़्शबन्दिया को रिवाज दिया और सिलसिला नक़्शबन्दिया तो बाद में आप की निसबत से “नक़्शबन्दिया मुजद्दिदिया” के नाम से माअरूफ़ हुआ, आज दुनिया के हर ख़ित्ते में इस सिलासिल के फ़ैज़ याफ़ता हज़रात पाये जाते हैं, मुजहिदे अल्फे सानी अपनी इस्लाही कौशिशों के दौरान एक साल (1027 हि0/1028 हि0) क़िला ग्वालियर में नज़रबंद भी रहे हैं, जबकि दौरे पाबंदी पाँच साल और दौरे ज़बाँ बंदी 6 माह पर मुहीत गुज़रा, अय्यामे आख़िर में आप अपनी ख़नकाह (सरहिन्द) में ख़लवत गुज़ी हो गये और उसी ख़लवत गुज़ीनी में 29 सफ़रूल मुजफ़्फ़र 1034 हि0 को

विसाल फ़रमाया, सरहिन्द शरीफ़ में आज भी मरक़दे अनवर मरक़जे खासो-आम है, इमामे रब्बानी मुजहिदे अल्फे सानी हज़रत शेख़ अहमद सरहिन्दी कूद्दिस: सिरिहल अजीज़ की तालीमात रुये इस्लाम का सिंगार और राहें सुलूको-मारफ़त के लिए मिस्ले किन्दिले नुरानी हैं, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हम सुन्नियों को उनके फयूजो बरकात से माला माल फ़रमाए – आमीन। ■■■

स. नं. 26 का बकिया .....

हुये, लिहाज़ा हमें अच्छे नामों का इल्तिज़ाम करना चाहिये, मज़हबे इस्लाम यह चाहता है कि उसके मानने वालों की औलाद नेक और मुसलमान हों, बच्चों की परवरिश बेहतर तरीक़े की जाये और औलाद जो कि नेमत इलाही है उसकी क़दर की जाये ताकि वह बड़ा हो कर मुल्क व समाज और खुद वालिदैन् के लिये नेअमत साबित हो, दुआ है कि अल्लाह हमें औलाद की परवरिश और नाम रखने में अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म और खुशनुदी का ख़याल हमेशा दिल में नक़्श फ़रमाये और तमाम मुसलमानों को इस्लामी तरज़े ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन। ■■■

स. नं. 48 का बकिया .....

दीन के नाम पर मता-ए-कायनात लुटा देने का जो ज़ब्बा हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत में था वह दूसरों में न था। हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरकाती कुद्स सिरिह के इन्तिखाब को कभी दाग़दार नहीं होने दिया। आप ने नाइब आला हज़रत की हैसियत से पूरे अरब व अजम में यह कहते हुये पैग़ामे रज़ा, फ़िक़रे रज़ा और मसलके रज़ा की धूम मचा दी कि:

क्यूँ रज़ा आज गली सूनी है

उठ मेरे धूम मचाने वाले

मौलाए करीम हम तमाम आशिकाने रज़ा को हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत जैसा इश्को-इरफ़ान अता फ़रमाए।

■■■



हुजूर मुजाहिदे मिल्लत की हयात-ख़िदमात पर रौशनी डालती एक फ़िज़्र अंगेज़ तहरीर

# उठ मेरे धूम मचाने वाले

अज: मौलाना रहमतुल्लाह सिद्दीकी ★

अस्लाफ़ व अख़्ताफ़

असलाफ़ की हयात व ख़िदमात, किरदार व अमल और उन की यादों के बुझते हुये चिरागों की लौ को तेज़ करना हर मोमिन के दीनों, मिल्ली और अख़लाकी फ़रीजे में दाख़िल है। इस लिये कि बद्अकीदगी, बद्अमली और बे-राह रवी के माहौल में उनकी हयात के ताबिन्दा नुक़्श, दम तोड़ते ज़ज्बों, टूटते हौसलों और मुन्तशिर ख़यालों को यकीन व ऐतमाद की मंज़िल अता करते हैं। तारीख़ पर जिन लोगों की गहरी नज़र है वह इस बात से ख़ूब अच्छी तरह वाकिफ़ हैं कि जब जब तारीकी के साथे घड़े हुये हैं, आज़ाद ख़याली का तूफ़ान उठा है और फ़िक्की आवारगी के मोहलक ज़रासीम ने स्वालेह नज़रियात को मुतासिर करने की कोशिशें की हैं तो हुजूर मुजाहिदे मिल्लत जैसी इल्म परवर, पाकबाज़, दीन परस्त और तक्वा शेआर शख़्सियात के पाकीज़ा कारनामों से फिसलते कदमों को इस्तेक़ामत की दौलत, यकीन का नूर और उम्मीद का सेवरा मिला है।

हुजूर मुजाहिदे मिल्लत इल्म व अमल, इश्क़ व इरफ़ान और ईमान व यकीन की उस मंज़िल पर फ़ाईज़ थे ज़हां पहुँचने की फ़िज़्र में बड़े बड़े साहिबे फ़ज़लौ कमाल के शाहीन अक्ल के बाल व पर जलते हुये दिख़ाई देते हैं। उलूमो फ़नुन की कोई ऐसी शाख़ नहीं, इश्क़ व इरफ़ान की कोई ऐसी सरहद नहीं और ज़ोहदो पारसाई की कोई ऐसी मंज़िल नहीं, जहाँ आपने अपने वुजूदे मस्ज़ूद का ऐहसास न दिलाया हो, अगर आपकी हयात के सुनहरे औराक़ उलटे जायें, तारीख़ के दफ़ातिर खंगाले जायें और ज़मीन की वुस्अतों में फैले हुये आप के नुक़्श वक़्जा किये जायें तो हिक्मत व दानाई के

दर्जनों अबवाब मुस्तिब हो सकते हैं। अतः आप की किताबे हयात का हर वर्क़ चाँद की चाँदनी से ज़्यादा साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ और सूरज की तरह दरख़्शा व ताबिन्दा है।

हुजूर मुजाहिदे मिल्लत यकीं मोहकम, अमल पैहम, मोहब्बत फ़ातेह आलम की अमली तफ़सीर थे। हवादिस से उलझते हुये मक़ासिद तक पहुँचना उनकी फ़ितरत थी। उन की ज़ात मेअम्मेरे सुन्नियत भी थी और शिआरे सुन्नत भी। ज़मीन पर बैठ कर अफ़लाक़ की वुस्अतों में टहलना आप के मआमुलात में दाख़िल था। आप की ज़ात जमाअते अहले सुन्नत के लिये इनमे इलाही भी थी और इसरारे इलाही भी, आप को आप के अहद ने नहीं समझा। आप को आपका अहद समझ लेता, तो बर्रे सगीर में आज मुसलमानों की तारीख़ मुख़तलिफ़ होती। जिस तरह माज़ी में आप के नुक़्शेपा मिनारे नूर थे इसी तरह आज भी है और इन्शा अल्लाह क़यामत तक गुत्थियाँ मीनारे नूर बने रहेंगे। आज की क़यादत आप के नुक़्श हयात को रहनुमा बना कर जमाती मसाइल की बहुत सारी पेचीदा सुलज़ा सकती है। आप की ज़िन्दगी के तमाम तर नुक़्श रौशन हैं लेकिन उन नुक़्श अपनी हयात का हिस्सा बनाने के लिये कोई तैयार नहीं होता। आप की ज़ात ता-हयात फ़ानूसे इश्क़ व इरफ़ान की सूरत में रौशन रही। आप ने जमाते अहले सुन्नत को जो वक़ार व ऐतबार बख़्शा है, उसकी कोई दूसरी मिसाल पेश करना बहुत मुशक़िल है। बातिल कुव्वतें आप के वुजूद से हिरासां रहा करती थीं। बिना ज़रूरते शरीआ किसी भी बातिल कुव्वत से इशतराक़ के आप सख़्त मुख़ालिफ़ थे। आप की शख़्सियत अपने अहद में कई ज़हात से मुमताज़ थी।



आप की शख्सियत में मिल्ली दर्द को मुजस्सम देखा जा सकता है। मुल्क व मिल्लत के हवाले से आप के ज़्वात व ख़्यालात में जो पकीजगी थी वह अब कहीं नज़री नहीं आती। आप का इल्म, आपका अमल और आपका इश्क़ तकलीद था। हराते इश्क़ आप को हर वक़्त बे-चैन किये रहती थी। यही वजह है कि आप का बिस्तर हर वक़्त बंधा रहता था। त-उम्र आप की फ़कीराना जिन्दगी की दहलीज़ पर रईसी पर पटकती रही। दुनियां की बड़ी से बड़ी ज़ालिम व जाबिर ताक़त आप को कभी मरक़ब न कर सकी। आप जुल्म व जबर की हर कलाई मरोड़ देते थे। अपने ज़माने में पूरी दुनियां में आप से बड़ा कोई दुसरा मुजाहिद न था और अब तक आप का कोई मिस्ल पैदा न हो सका है। जमाती रिवायात को आप ने जो तहफ़ूज़ फ़राहम किया है इस की मिसाल से माज़ी क़रीब की तारीख़ ख़ाली है। आप की जिन्दगी का हर तेवर इस शेअर का आईनादार था:

यकी मोहकम, अमल पैहम, मोहब्बत फ़ातेह आलम  
जिहादे जिन्दगानी में यह हैं, मर्दों की शमशीरें

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत जिस ज़माने में पैदा हुये वह ज़माना मज़हब व मसलक के लिये बड़ा पुर ख़तर, पुर आशोब और नाज़ुक ज़माना था। मुसलमान दीनी, मिल्ली, सनअती और सिवासी ऐतबार से मायूसियों का शिकार था। इस्लामी इक़तदार व रिवायात को खुले आम निशाना बनाया जा रहा था। तफ़्दीस अलुहीयत व रिसालत को शदीद ख़तरात लाहिक़ थे। मुसलमानों के दिलों से चिराग़ इश्क़े रिसालत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बुझाने की कोशिश जारी थी। महबूबाने खुदा से बन्दगाने खुदा के रिश्तों को टेढ़ी नज़रों से देखा जा रहा था। दर्सगाहों और ख़ानकाहों का वक़ार दाओं पर लगा हुआ था। मुसलमानों से इन का तसल्लुब और तशख़्ख़ुस छीना जा रहा था। उन्हें जिन्दगी के हर शोबे में बे-दस्त वषा करने की कोशिश तेज़ थी। ऐसे पुर ख़तर माहौल में आप ने क़ौमे मुस्लिम को आबरू मन्दाना जिन्दगी गुज़ारने का हौसला बख़्शा और बातिल की हर

साजिश को खुश असलूबी के साथ बे-नकाब फ़रमाया।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरकाती कुद्स सिर्रहू ने बातिल कुव्वतों से मुक़ाबले के लिये जो हथियार तैयार किये थे। हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत उन्हीं हथियारों से लैस हो कर मैदान में उतरे और बातिल के नापाक इरादों को ख़ाक़ में मिला कर रख दिया। उन्होंने क़ौमे मुस्लिम को ब-मक़सद जिन्दगी गुज़ारने के तरीक़े बताये और जिन्दगी के हर शोबे में अपने वुजूद का ऐहसास दिलाने, हुकूमते वक़्त से अपने जाइज़ मुतालबात मनवाने और इज्जतमाई तौर पर मुनज़्ज़म रहने के लिये पुरज़ोर तहरीकें चलाई। मुस्लिम मसाईल को उठाने की बुनियाद पर आप हमेशा हुकूमते वक़्त की निगाहों में खटकते रहे। चूँकि आप ख़ुद एक बड़े स्टेट के मालिक थे, आप के साथ जमाअत भी थी और जमीअत भी थी, हुकूमते वक़्त के साथ साथ दूसरी इस्लाम मुख़ालिफ़ तहरीकात को आप की ताक़त व कुव्वत का ख़ूब अंदाज़ा था। फिर भी आप को मुसाईब व आलाम से दो चार होना पड़ा। कैंद व बन्द की दिल ख़राश सोठबतों से गुज़ारना पड़ा। इस के ब-वजूद मसाईब व आलाम के तेज़ातुंद झोंके आप के होसलों के चिराग़ को कभी बुझा न सके। आप ने अपने कारनामों से अपने अहद पर देर प-असरात छोड़े हैं। जब भी कोई मोअरिख़ आप के अहद की तारीख़ मुस्तिब करेगा तो आपके ज़िक़ के बग़ैर वह तारीख़ मुकम्मल न समझी जायेगी। मिल्ली मफ़ादात के बाब में आप की बे-लोस कुरबानियों की एक तवील तारीख़ है, जैसे मुनज़्ज़म तौर पर तरतीब देने की ज़रूरत है। आप ही जैसी शख्सियात पे डॉ. इक़बाल का यह शेर चस्पा होता है:

हज़ारों साल नर्ग़िस अपनी बे नूरी पे रोती है

बड़ी मुशकिल से होता है चमल में दीदा वर पैदा

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की विलादत 8 मुहर्रमुलहराम 1322 हि0 मुताबिक़ 22 मार्च 1904 ई0



में हुई और विसाल 6 जमादियुल अव्वल 1401 हि0 मुताबिक 13 मार्च 1981 ई0 में हुआ। आप की 78 साला ज़िन्दगी के 28 साल तालीम व तरबियत के लिये निकाल दिये जायें तो 50 साल बच जाते हैं। यानी आप पूरे 50 साल तक पूरे होश व हवास मज़हब व मसलक और कौम व मिल्लत की ख़िदमात अंजाम देते रहे। जब, जहां, जैसी ज़रूरत पेश आई आपने मुलक मिल्लत के लिये खुद को पेश किया। आप के वुजूद का कोई हिस्सा ऐसा न था जो दीनी, मिल्ली, इल्मी और सियासी ख़िदमात के ज़ब्बे से ख़ाली हो। बाज़ सूफ़िया का फ़रमान है कि जो सांस ज़िक्रे इलाही से ख़ाली हो वह काफ़िर है। आपकी हयात का मुताला इस ख़याल को ऐतबार अता करता है कि आप की ज़िन्दगी का कोई लम्हा ज़िक्र व फ़िक्र से ख़ाली न था। आप के दीनी मिल्ली और जमाती दर्द को इस बात से समझा जा सकता है कि आप जिस शहर में जाते क़याम के लिये किसी मस्जिद का इन्तिखाब फ़रमाते। अक़ीदतमंदों की जमात यह चाहती कि हुज़ूर किसी के घर पे क़याम करें। अक़ीदतमंदों को आप जावाब देते कि घर दरवाज़े अमूमन दस बजे रात में बन्द हो जाते हैं लेकिन खुदा के घर के दरवाज़े हर वक़्त खुले रहते हैं। हमारी ज़रूरत कौम को न जाने किस वक़्त पेश आजाये। घर में क़याम करने से साहिबे ख़ाना को हमारे लिए पूरी पूरी रात बेदार होना होगा और यह दिक्कत तलब काम है। मस्जिद में न आने की पाबन्दी, न जाने की पाबन्दी। मुस्लेहीने उम्मत की तारीख़ में ऐसी मिसाल बहुत कम मिलेगी।

आप की इस तर्ज़ ज़िन्दगी पर जिस क़द ग़ौर व फ़िक्र कीजिये हैरानियां बढ़ती जाती हैं। इस हवाले से बहुत कुछ लिखा जा सकता है। आप ने अपनी दीनी, मिल्ली, इल्मी और सियासी ख़िदमात से पूरे अहद को मुतासिर किया। और आज जो भी आप की हयात का मुताला करता है, मुतासिर हुये बग़ैर नहीं रहता। अहदे हाज़िर के मुस्लेहीने उम्मत के लिये आप की हयात की

हर सांस मशअले राह है।

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की ज़िन्दगी के मुताला के दौरान एक क़री क़दम क़दम पर हैरत व इस्ताज़ाब का शिकार होता है कि एक रईसे वक़्त पे फ़कीर की तैह्रीं गहरी कैसे होगई? उनकी ज़िन्दगी की हर सांस से फ़कीरी की खुशबू फूटती थी। इन के रईसाना तेवर उस वक़्त देखने को मिलते थे, जब दीनी मिल्ली फ़रोग की राह में पैसे हाइल होते। दीनी रिवायात की तब्लीग़ व तरवीज के लिये उनके ख़ज़ाने का मुँह हर वक़्त खुला रहता। उनकी फ़कीरी की दहलीज़ पे अहले सरवत की भीड़ लगी रहती और हर शख्स आप की जुम्बिशे लब का मुन्तज़िर होता। लेकिन आप की जुबान खुलने के लिये आमादा नहीं होती, बल्कि हज़ारों बेमाया लोग आप की दुआओं से दौलत व सरवत की कान के मालिक होगये। फ़कीरों की बारगाहों में हर तरह के लोग हाज़िर होते हैं और अपने अपने ज़र्फ़ के मुताबिक़ सब बमुराद होते हैं। इन के यहां ज़ात, ब्रादरी, और क़बीले का कोई इम्तियाज़ नहीं होता। हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत का बाबे करम चौबीस घण्टे खुला रहता। आप के करम की बारिश में नहाने वालों की एक तवील फ़हरिस्त है। इस फ़हरिस्त में जमाते उलमा, जमाते फ़ुक्हा, जमाते ख़ुताबा, जमाते मुनाज़रीन, जमाते मुहद्देसीन, जमाते मुतकल्लेमीन, मुनातिका, फ़लासफ़ा, जमाते तलबा और अवाम सब नज़र आते हैं। आप की दर्सगाह इल्म में तिशानिगाने उलूमे नववी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम की हर वक़्त भीड़ सी लगी रहती। बल्कि आप के बाज़ तिलामिज़ा की दर्सगाहों में हम ने उलमा की जमात को जानू-ए-तलमुज़तय किये हुये देखे हैं।

रईसुल क़लाम हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादरी अलैहिर्रहमा लिखते हैं:

इस हकीक़त का इज़हार करते हुये मैं फ़ख़ महसूस करता हूँ कि अपनी ज़िन्दगी का एक तवील हिस्सा मैं ने हज़रत मुजाहिदे मिल्लत की ख़िदमत में



गुजरा है। सफ़र व हज़र में उन की हमरकाबी का बारह शर्फ़ हासिल हुआ है, खुसूसियत के साथ बारह मुनाज़रों में उनके साथ मैंने सफ़र की सआदत हासिल की है, जिन में से आठ मक़ामात पर मैंने हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की सदारत में कामयाब मुनाज़रा किया है, यह बिल्कुल अमरे वाक़िया है कि मुनाज़रा के उसूल व रूमुज़ बहस व इस्तदलाल के जाबते और गुफ़तगू के कवाइद व आदाब का जो सरमाया भी मेरे पास है वह हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत ही का अता कर्दा है।

पासबाने मिल्लत अल्लामा मुश्ताक़ अहमद निज़ामी अलैहिर्हिहमा लिखते हैं: “हमरी आम दर्सगाहों में “मीन कुतबी” के बाद “मुल्ला हसन” पढ़ाई जाती है लेकिन उलूम व मारिफ़ के इस बहर ज़ख़ार ने जब दर्सगाह संभाली तो “मुल्ला हसन” की जगह “शरह मिरकात” जैसे मुअर्रा किताब को जिस पर एक सतर का हासिया तक नहीं, उसे दाख़िले निसाब किया और उसी किताब में मुल्ला हसन व मुल्ला जलाल, काज़ी हम्दुल्लाह तक के मुबाहस को खंगाल देते, जो इस बात की रौशन दलील है कि उन्हें मआकूलात पर किस हद तक यदे तुला हासिल था।”

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की इल्मी तबहदुर के हवाले से प्रोफ़ेसर शाहिद अख़तर का बयान ज़ैल में मुलाहिज़ा करें:

सरकार मुजाहिदे मिल्लत की हयाते मुबारका का एक बड़ा हिस्सा चूँकि मिल्ली सरबुलन्दी और सरफ़राज़ी की कोशिशों नीज़ बद-अक़ीदगी के खिलाफ़ गुज़रा। इस लिये लोगों को इन के इल्मी तबहदुर का कमा हक्कहु अंदाज़ा न हो सका। जब कि हकीकत यह है कि वह बीसवीं सदी की आठवीं दहाई तक मुख़तलिफ़ उलूम में अपने हम अस्र उलमा में मुमताज़ हैसियत के हामिल थे। माकूलात पर उनकी दस्तरस का ये आलम था इन के ज़माने के बड़े बड़े आलिम को उन की हमसरी का दावा नहीं था। जिस

तरह मीर ने “निकातुल शोरा” में अपने अहद में चौने तीन शाइरों का वुजूद तसलीम किया था। बीसवीं सदी के माकूलात के एक मुस्तानद आलिम (सदरुल उलमा) मौलाना गुलाम जीलानी मेरठी रहमतुल्लाह अलैहि ने ठीक इसी तरह अपने अहद में माकूलात के द्वाइ आलिमों का वुजूद तसलीम किया था। बकौल उन के माकूलात पर उनके अलावा पूरी दसतरस अगर किसी को हासिल थी तो वह सरकार मुजाहिदे मिल्लत अलैहिर्हिहमा की जात थी और उन के तवस्सुत से उन के शागिर्द मौलाना निज़ामुद्दीन बलयावी साहब किब्ला शैख़ुल हदीस मदरसा फ़ैजुल उलूम को निस्फ़ रसाई। सरकार मुहदिदसे आजम हिन्द अलैहिर्हिहमातु रिज़वान ने भी सरकार मुजाहिदे मिल्लत के तबहदुरे इल्मी को इस तरह ख़िराजे तहसीन पेश फ़रमाया था। “मुजाहिदे मिल्लत शाह हबीबुर्हमान इल्म के बादशाह है।” (नवाये हबीब, मुजाहिदे मिल्लत स. 47-48)

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत का अहद उलमा व मशाइख़ का अहद था। बड़ी बड़ी जामे उलूम शख़िसयात मुल्क के मुख़्तलिफ़ गोशों में मौजूद थीं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरकाती कुदस सिर्रहु की दर्सगाह की तरबियत याफ़्ता शख़िसयात का एक अलग नूरी कारवां था। तिलमीज़े आला हज़रत हुज़ूर सदरुशशरिया के फ़ैज़ याफ़्ता उलमा की जमात अलग थी, सदरुशशरिया के तिलामज़ा की फेहरिस्त काफी तवील है, दूसरी दर्सगाहों के सनद याफ़्ता उलमा भी कम न थे, यानी अहले इल्म व फ़न की जमात ग़ैर मुनक़सिम हिन्दुस्तान के हर गोशों में मौजूद थी और सब अपनी अपनी जगह पर मसरूफ़े अमल थे। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरकाती कुदस सिर्रहु के तिलामज़ा के बाद उलमा की जो जमात नज़र आती है उनमें हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की शख़सियत मुख़्तलिफ़ जेहात से मुमताज़ नज़र आती है। अपने मुआसरीन में हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत के इम्तियाज़ात की अगर



फ़हरिस्त तैयार की जाये तो खुद एक किताब तैयार हो जाये। ज़ैल में इम्तियाज़ात के चन्द नुमायां पहलू मुलाहिज़ा करें।

मुजाहिदे मिल्लत रईसे आज़म उड़ीसा थे। यानी उड़ीसा में आप से बड़ा कोई रईसे न था आपकी रियासत रऊफ़िया स्टेट से मशहूरो मआरुफ़ थी आप की दौलत व सरवत का इस बात से अंदाज़ा लगया जा सकता है कि आप सालाना 49 हजार रुपये ब्रिटिश गवर्मेंट को टैक्स अदा करते थे। अगर इस 49 हजार से आज की करन्सी ख़रीदी जाये तो एक करोड़ से ज़ाहद रक़म बनती है। आपकी रियासत, जुल्म व नईसाफ़ी से पाक थी आपके आबाये किराम भी नर्म दिल, ग़रीब परवर और अदल पसन्द थे। फूक़रा व मसाकीन के लिये आपका दरवाज़ा हर वक़्त खुला रहता था। आपके दरवाज़े से कोई साइल कभी महरूम नहीं लौटता था। बल्कि तारीख़ यह भी बताती है कि माँगने वालों को हाजत से सिवा देते थे। साइलों में तिशनगाने उलूम भी होते थे। मरीज़ाने इश्क़ भी होते थे, और तालिबाने दुनिया भी होते थे। उनकी बारगाह में हाज़िर होने वाले साइलों की जुबान पर कभी कोई हफ़े शिकवा नहीं देख गया। वह भीख़ देते भी थे और सुनते नबवी के मुताबिक़ मंगता की भलाई की दुआयें भी करते थे। साइलों के हवाले से उनका हाल कुछ यूँ था:

आता है फ़कीरों पे उन्हें प्यार कुछ ऐसा  
खुद भीख़ दें और खुद कहें मंगता का भला हो

हुज़ुरे मुजाहिदे मिल्लत रईस ही नहीं बल्कि रईसे आज़म थे। आपने अपनी पूरी रियासत को दीनी इक्तिदार रिवायात फ़रोग के लिये वक़फ़ कर दिया था। आपकी हयात का अक्सर हिस्सा रेल में गुज़रा या जेल में। ब्रिटिश गवर्मेंट से आप महाज़ आरा रहे। और ब्रिटिश गवर्मेंट के बाद जो हुकूमत आई उसकी बअज़ पालीसियों से भी आप मुत्तफ़िक् न थे। आप हर उस पॉलिसी के खिलाफ़ आवाज़ बुलन्द करते रहे जो समाज के दबे कुचले लोगों के खिलाफ़ होती आपकी सदाये ऐहतिजाज से राये आम्मा मिन्टों में तब्दील हो जाया करती थी। नतीजे के तौर पर हुकूमत और उससे जुड़े हुये

लोग अपनी पॉलिसी पे नज़रे सानी करने पर मजबूर हो जाते। आपका मज़हबी और सियासी दोनों मक़ाम बहुत बुलन्द था। आपकी ज़ात सूरत व सीरत, अमल, किरदार, के ऐतबार से भी बेमिसाल थी। इंकिसारी, मेहमान नवाज़ी, फ़ैयाज़ी, सखावत, सब्र व शुक्र, खुश मिज़ाज़ी, कौल व फेल में यकसानियत के ऐतबार से भी बेमिसाल व बे-नज़ीर थी। इस्लामी ज़िन्दगी जिस अनासिर से तक्मील पाती है वह सारे अनासिर आपकी किताबे हयात में बेहतर तरीक़े से देखे जा सकते हैं। आप अख़लाके नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का महसूस पैकर थे। आप के इश्क़े रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हवाले से शम्सुल उल्मा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती निज़ामुददीन साहब रहमतुल्ला अलैहि साबिक़ शेख़ुल हदीस दारुल उलूम ख़ैरिया निज़ामिया सहसराम लिखते हैं।

"इश्क़े हकीकी के इस्तग़राक़ में मुजाहिदे मिल्लत हर आन यही चाहते थे कि मदीना मुनव्वरा की सर ज़मीन हो और मैं हूँ। बसूरते आज़ादी बसूरते क़ैद मवाक़े पर हरगिज़ निगाह नहीं रहती थी। क्योंकि वो मैदाने इश्क़ का फ़र्ज़ अब्बलीन समझते थे। जब हाज़िरी होती तो वहाँ के ख़स व ख़शाक़ को बौसा देते। ज़मीन के चप्पा चप्पा को चूम लिया करते थे। जब दरयाफ़्त किया जाता कि ये क्या? तो फ़रमाते कि मेरे सरकार का इस मक़ाम पर कंभी क़दमे नाज़ पड़ा हो।"

(नवाये हबीब का मुजाहिदे मिल्लत नम्बर, स. 122)

हुज़ुर मुजाहिदे मिल्लत की पुतलियों में जमाले खज़ुरा मुनक्कश था उन्हें ये एज़ाज़ कठिन रियाज़त के बाद ही मिला था उन्हें ये मक़ाम हासिल था के हिन्द में बैठ कर गुम्बदे खज़ुरा की जियारत से खुद को शाद काम किया करते थे, उनका इश्क़ जुनू की सरहदों में दाख़िल हो चुका था, उनकी जलवतो खलवत में हर वक़्त नग़माते रज़ा की धूम रहा कर थी, जब हिन्द का ये आलम है तो दयारे महबूब में आप की वारफ़ांगी का क्या हाल रहता होगा उस क़ैफ़ियत की तस्वीर लफ़्ज़ों में उतारना बहोत मूश्किल है, देखने वालों का बयान है कि आप ज़रते मदीना को अपनी आँखों से बोसे देते और आप की जुबान पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान कादरी बरकाती बरेलवी कुहिस सिरहू के इस तरह के



अशआर होते :

ऐ ख़ारे तय्यबा देख कि दामन न भीग जाये  
यूँ दिल में आ कि दीदये तर को ख़बर न हो  
कूचे कूचे में महकती है यहां बूये कमीस  
यूसुफतां है हर इक गोश-ए-कनआने अरब  
किनारे ख़ाके मदीना में राहतें मिलतीं  
दिले हज़ीं तुझे अशके चकीदा होना था  
हज़रत मौलाना अब्दुल करीम नईमी लिखते हैं:

“मुहब्बत का तकाज़ा यह भी होता है कि  
महबूब के ताअल्लुक़ दारों से भी मुहब्बत करे। चुनाँचे  
आप ने सरकार दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम  
के दोस्तों और ताअल्लुक़ दारों से उल्फ़त व मुहब्बत  
की। महबूबे खुदा के दुश्मनों से दुश्मनी ब-हाल रखी।  
सहाब-ए-किराम, अज़वाजे मुताहरात, अहले बैत,  
आले रसूल और औलिया-ए-किराम को जान व दिल  
से महबूब रखा। काफ़िरो, मुनाफ़िकों और तमाम  
बदमज़हबों से कुलयतन कुलयतन नफ़रत व अदावत  
थी। महबूब खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की  
ज़्यारत का शौक़ व इशितयाक़ ब-कसरत रखते थे। शाहे  
बक़््श की याद और ज़िक़्र पाक से हमेशा रतबुल लिसान  
रहते। सोते में याद थी, जागते में याद थी, चलते फ़िरते में  
याद थी। हर हालत में दिल से, जुबाने ज़िक़्रे महबूब से  
अपने को गरमाया करते। ज़िक़्रे महबूबे खुदा को  
फ़रावानी के साथ साथ तआज़ीम व तौकीर सरवरे  
आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में  
अदब व एहताराम के लिये आप की पूरी ज़िन्दगी वक़फ़  
थी। अपने कौल व फ़ेअल और हाल से इस इम्तिहान में  
पूरी तरह कामयाब थे। आपकी चश्माने मुबारक महबूबे  
खुदा के हुस्न व ज़माज़ से मुस्तगरक़ रहती। आप के  
काने मुबारक महबूब के ज़िक़्र व मदहा और उनके  
कलाम के अलावा हर कलाम से बहरा रहता।” (नवाये  
हबीब, मुजाहिदे मिल्लत न. स. 212)

प्रोफ़ेसर शाहिद अख़तर लिखते हैं:

“इश्क़ की कैफ़ियत यह होती है कि आशिक़े  
मआशूक़ की एक एक अदा पर जान निसार करने की

तड़प अपने अन्दर रखे और मआशूक़ के तसव्वुर से ही  
विसाल की लज़्ज़तों में डूब जाया करे। सरकार मुजाहिदे  
मिल्लत के इश्क़ का यह आलम था कि अपनी ज़िन्दगी  
के मुआमलात में वह रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि  
वसल्लम की अदाओं की पैरवी करते और नाम नामी  
इस्मेग्रामी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आते ही  
तसव्वुरे मआशूक़ में डूब कर मुज़तीरब हो जाते। आँखें  
आँसू बरसाने लगतीं। सरकार आसी रहमतुल्लाह  
अलैहि ने इश्क़ की एक कैफ़ियत यूँ पेश की है:-

आज फूले न समार्ये के कफ़न में आसी

है शबे गौर भी इस गुल से मुलाकात की रात

सरकार मुजाहिदे मिल्लत इश्क़ की इसी  
कैफ़ियत में सर शार थे। जहां मौत भी इस लिये लज़्ज़त  
आ गयी थी कि इस गुल से मुलाकात की सबील साबित  
होगी। शुरू में शोला बार तक़रीर फ़रामया करते थे मगर  
बाद में यह हालत हो गई कि तक़रीर कर ही नहीं पाते।  
दो चार जुम्लों के बाद सरकार दो आलम सल्लल्लाहु  
अलैहि वसल्लम का ज़िक़्र आया और रिवक़त तारी हो  
गई, आँसू जारी हो गये।

अगस्त 1980 ई0 में सरकार मुजाहिदे मिल्लत  
की तशरीफ़ आवरी अपने इलाक़े में हुई। फ़कीर को यह  
ज़िम्मादारी सौंपी गई थी कि हूड़ा जा कर सरकार को  
अपने यहाँ लाऊँ। एक दिन पहले फ़कीर हूड़ा पहुँचा।  
तिकियापाड़ा से बाओड़िया, बाओड़िया में शब गुज़ारी,  
फिर तिकियापाड़ा और तिकियापाड़ा से शीबपुर पता  
चला कि सरकार तेलनी पाड़ा तशरीफ़ ले जा चुके हैं।  
जान में जान आई, घर आया तो पता चला कि सरकार  
गुस्ल फ़रमा रहे हैं, गुस्ल से फ़रागत हुई तो कमतरनी ने  
क़दम बोसी की। सरकार ने पूछा कि तलाश में ज़हमत  
हुई होगी। कमतरनी ने कहा, सरकार ज़हमत तो क्या हुई,  
हाँ जब एक जगह से दूसरी जगह दौड़ रहा था, वहशत  
कल्कल्लबी का यह शेअर जुबान पर जारी था:

है अरज़ाँ इस क़दर दीदारे जानाँ हम न मानेंगे

जुलैख़ा क्या सुनाई है ख़याल इस का है ख़वाब  
इस का



शेर का सुनना था कि चेहरा मोतगय्यर हो गया। बार बार.. है अरज़ा! इस क़दर दीदारे जाना हम न मानेंगे.. कहते और आँसुओं की झड़ी लग जाती। कमतरिन ने अपने इश्क़ की बात की थी। सरकार मुजाहिदे मिल्लत अपने मआशूक़ के तसव्वुर में डूब गये” नवाये हबीब का मुजाहिदे मिल्लत न. स. 67-68)

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की पूरी ज़िन्दगी मज़हबी दर्द से इबारत थी। बल्कि अगर कोई मज़हबी दर्द को मुजस्सम देखना चाहे तो हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत को देख सकता है। आप ने मज़हबी क़दरों के फ़रोग़ में जो कुर्बानियाँ पेश की हैं, उस के बयान के लिये लुगात में अलाफ़ाज़ नहीं मिलते। गोद से गौर तक का कोई लम्हा आप का ख़िदमते दीन मतीन से ख़ाली नहीं मिलता। आप की ज़िन्दगी की हर सांस से इत्तबअ शरीअत की खुशबू फूटती है।

आप की दीनी मिल्ली और इल्मी ज़िन्दगी का इन्तिहाई हसीन नक़्शा हज़रत अल्लामा असलम बस्तवी रहमतुल्लाह अलैहि ने कुछ यूँ खींचा है:-

वह मुजाहिदे मिल्लत! जो रात के ज़ाहिद और दिन के मुजाहिद थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो उस्वए-सिद्दीकी व फ़ारूकी का अमली नमूना थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो सुन्नते उस्मानी की शाने इस्तग़ान थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो ज़रबे यदुल्लाह के पर तो थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो सुन्नते इश्के बिलाली के पैकर थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो आबरू-ए-मिल्लत थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो कौम व मिल्लत के काफ़िला सालार थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो तसव्वुफ़ के इमाम और सूफ़ियों के सरदार थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो इल्म का पहाड़ थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो पैकर हिलम व मुरव्वत थे। वह मुजाहिदे मिल्लत! जिन के इश्के रिसालत पनाही ने नजदी हुकूमत के दरो बाम को हिला दिया। वह मुजाहिदे मिल्लत! जिनसे दुनिया-ए-वहाबियत लरज़ा बर अन्दाम थी। वह मुजाहिदे मिल्लत! जो बजाय खुद एक तहरीक थे। इस अहदे गुमरही में निशाने मंज़िल थे। इस दौर तारीकी में एक “मीनार-ए-नूर” और एक तेज़

तरार किस्म की रौशनी थे। मगर आह वह “मीनार-ए-नूर” हम से रोपोश हो गया और वह रौशनी हम से छुप गई। (फतहाना अशरिफ़, मुजाहिदे मिल्लत न. स. 143-144)

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की ज़िन्दगी के दो मज़बूत प्लेटफ़ॉर्म थे। एक मज़हबी दूसरी सियासी, चूँकि आप के अहद में मुसलमान और सियासी दोनों ऐतबार ज़वाल का शिकार थे। मुल्क की दूसरी कौमें मुसलमानों को ज़िन्दगी के तमाम शोबों में बे दस्त व पा कर देना चाहती थीं। उन्हें यह ख़तरा था कि अगर मुसलमान सियासी, समाजी और मुआशी तौर पर खुद कफ़ील होंगे तो उन से निपटना बहुत मुश्किल होगा। और आज भी हुकूमती सतह पर यही कोशिश जारी है बल्कि आज मुसलमानों के हालात कल से बदतर हैं और आने वाला वक़्त और भी बुरा होगा। आज हुकूमत अपने मिशन पर पूरे तौर पर कामयाब हो चुकी है। हुकूमत का कोई भी शोड़बा ऐसा नहीं है जिस में मुसलमानों की मोअस्सर नुमाइन्गी हो। कल हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत जैसी मुस्तहक़म क़यादत मुसलमानों में मौजूद थी। आज मुसलमानों में कोई मुजाहिदे मिल्लत नहीं। हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत को हुकूमत की बदनिगाही का ख़ुब ऐहसास था, यही वजह थी कि आप ने मुसलमानों में जुनूने इश्क़ को तेज़ करने की ताहियात ज़ददोज़हद रखी। आप को आला हज़रत ने अपना मिशन सौंपा था। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरकाती कुदस सिरहु ने अग़्यार के नापाक अज़ाइम को भांप लिया था। आप ने मुसलमानों के हाल को माज़ी से जोड़ने की कोशिशें कीं इस सिलसिले में आप की तालीफ़ात व तसनीफ़ात देखी जा सकती हैं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरकाती कुदस सिरहु ने जिस तहरीक की बुनियाद रखी थी, इल्म व इरफ़ान और शक़र व आगाही का जो चिराग़ रौशन किया था इसी चिराग़ की लौ को तेज़ करने के लिये आप ने बाद विसाल हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत का इन्तिखाब फ़रमाया था। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरकाती कुदस सिरहु के ज़माने में उलमा, मशइख़ और मज़हबी रहनुमाओं की कमी नहीं थी लेकिन बकिया स. 41 पर



# अपने दरमियाँ का दयानियों को पहचानें

अज: मौलाना खुशीद आलम रज़वी \*

इस वक्त पूरा पाकिस्तान का दयानियों की फ़ितानागरी का शिकार है, बेगुनाह आशिकाने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर गोलियाँ बरसायी जा रही हैं, उम्मतें मुस्तफ़ा "नामूसे रिसालत" की हिफ़ाज़त की ख़तिर सड़कों पर अपने शबो-रोज़ गुज़ारने पर मजबूर हैं, ताक़त व हुकूमत के नशे में चूर अरबाबे इक्तेदार अपने ईमान व इस्लाम का सौदा करने में लगे हुए हैं, जिस का फ़ायदा उठा कर यह आस्तीन के साँप हुकूमत के आला ओहदों पर पहुँच चुके हैं और हक़ परस्तों के हाथों बातिल के लिये हिफ़ाज़ती हिसार खींच रहे हैं, ऐसे पुरफ़ितन दौर में कौम के लिए इन "गन्दुम नुमा जौ फ़रूशों" की सही पहचान ज़रूरी है।

ज़ेरे तज़र मज़मून पाकिस्तान में का दयानियों की आईनी हैसियत वाज़ेह करता है और साथ ही साथ उनकी मज़हबी फ़रेब कारियों, मक्कारियों का पर्दा भी चाक करते हैं (फ़ारूकी)

मिर्जा गुलाम अहमद का दयानी ने अपने आकाओं के इशारे पर दावए नबूवत करके कौमो-मिल्लत में तफ़रीको-इंतेशार कि जो बीज बोई थी उस के पैरो कार आज भी उसकी आबयारी कर रहे हैं।

ध्यान रहे कि 1974 ई0 की आईनी तरमीम और बादे अर्ज़ा 1984 ईसवी के इम्तिनाए का दयानित क़ानूनी ऐक्ट की शिक 298 ए, 298 बी, और 298 सी के तहत का दयानी ना सिर्फ़ काफ़िर हैं बल्कि धोका दे कर खुद को मुसलमान साबित करने के लिए अगर "शेआरे इस्लाम" का इस्तेमाल करेंगे तो उनके लिए 3 साल कैद की सज़ा पाकिस्तानी क़ानून में मौजूद है।

ज़ेल में कुछ ऐसी निशानियाँ बयान की जा रही

हैं जिन का इस्तेमाल मुसलमानों के भेस में छिप कर रहने वाले का दयानी अवसरों-बेशतर करते हैं:

(1) मुसलमानों से गप-शप करने के बहाने का दयानी अपनी पहचान कराये बग़ैर बात का रूख़ मज़हबी उमूर की तरफ़ मोड़ देता है और ये बावज़र कराने कि कोशिश में लगा रहता है कि ईसा अलैहिस्सलाम के मुताअल्लीक़ दर्ज़ ज़ैल अक़ायद रखना इस्लाम और क़ुरआन के ख़िलाफ़ ही नहीं कुफ़्र भी है।

अल्लाह ने ईसा अलैहिस्सलाम को आसमान पर जिन्दा उठा लिया है और काफ़िर उन को सलीब नहीं दे सके और वह क़यामत के करीब दुनिया में वापस आयेंगे और दज्जाल को क़त्ल करेंगे।

का दयानी यह साबित करने की कोशिश करते हैं कि उन को सलीब पर चढ़ा दिया लेकिन वह ज़ख़्मी हालत में फिलिस्तीन से कश्मीर हिज़रत कर गये, वहाँ 120 साल की उम्र में उनको मौत आयी।

सही अहादीस में यह मज़कूर है कि क़यामत से क़बल हज़रत ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम दुनिया में नाज़िल होंगे, इससे मुराद यह है कि इस उम्मत में से ही किसी ईसा अलैहिस्सलाम जैसे को पैदा होकर मसीहे इब्ने मरयम और इमाम मेहदी होने का दावा करना है।

क़ुरआन में ज़हां ईसा इब्ने मरयम के मुताअल्लिक़ "तोवफ़फ़ा" का लफ़्ज़ मौजूद है, इस से मुराद उनकी मौत है, हालांकि अरबी जानने वाले बख़ूबी समझते हैं के "तोवफ़फ़ा" का मतलब किसी चीज़ को पूरा-पूरा क़ब्ज़ करना या "पूरा-पूरा ले लेना" होता है और चूँकि अल्लाह ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मुकम्मल तोवफ़फ़ा कर ली, यानी, जिस्म-शऊर और रूह



उनकी "तोवफ़ा" का बयान है और अहादीस में उनके बयामत से केवल तुजूल का बयान इस "तोवफ़ा" की तस्दीक करते हैं।

(2) उल्माए दीन से शदीद मुतानफ़िर करने की कोशिश करते हैं, उनको तमाम बुराईयों की जड़ बताते हैं "मुल्ला और मौलवी" के नाम से पुकारते हैं, फिर का वारियत और कुफ़्र के फ़तवों पर बात करने के बहाने मौजू को कादियानीयों के खिलाफ़ होने वाली कारवाइयों को जमाते अहमदिया की तरफ़ ले जाते हैं और यह जताने की कोशिश करते हैं कि जिस तरह मुसलमानों के तमाम फिरके एक दूसरे को काफ़िर करार देते हैं, वैसे ही उन्होंने जमाअते अहमदिया को अपने आपस के इख़िलाफ़ के तहत काफ़िर करार दे दिया है, जबकि फ़िक़ह के चारों अइम्मा इमाम अहमद बिन हम्बल, इमाम शाफ़ई, इमाम मालिक और इमाम आजम अबू हनीफ़ा रिज़वानुल्लाहि ताअला अन्हुम में से किसी ने दूसरे फ़िक़ह के मानने वाले को काफ़िर या इस्लाम से ख़ारिज करार नहीं दिया।

अक़ीदए-ख़ल्मे नबूव्वत के मामले में उम्मेते मुस्लिमा का इज्मा है कि हुज़ूर सल्लललाहू अलैहि वसल्लम के बाद पैदा होने वाला हर मुद्दईए नबूव्वत और उस के पैरोकार काफ़िर और इस्लाम से ख़ारिज हैं यहाँ तक कि इमामे आजम अबू हनीफ़ा रदीअल्लाहू अन्हू का फ़तवा है कि जिस किसी ने हुज़ूर सल्लललाहू अलैहि वसल्लम के बाद किसी मुद्दईए नबूव्वत से उसकी सदाक़त का सबूत तलब किया, किसी तरहदुद के साथ तो वो खुद भी इस्लाम से ख़ारिज हो जाएगा।

(3) कादयानी चाँदी की ख़ास किस्म की अँगूठी पहनते हैं, अकसर ला इल्म मुसलमानों के सामने या वहाँ जहाँ उन को इस बात का यक़ीन हो कि उन को कोई पहचान नहीं पाएगा, वो अँगूठी जिस पर क़ूरान की यह आयत "अलैसल्लाहू बेकाफ़िफ़न अब्दुहू" यानी क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफी नहीं? लिखी होती है, मिर्जा

कादयानी की सुन्नत के तौर पर पहनते हैं क्योंकि मिर्जा कादयानी भी ऐसी अँगूठी पहना करता था।

(4) कादयानियों में उन के ख़लीफ़ा की मुकम्मल दाढ़ी होती है, वो शेआरे इस्लाम की मुकम्मल पाबन्दी करता है ताकि आम मुसलमानों को धोका दे सके वरना मुसलमानों से नफ़रत के सबब कादयानियों को तो कोशिश यह होती है कि हर उस वज़ा क़ता और शेआर व नक़ल से बचें जिसे हमारे उल्माए इकराम या एक मुसलमान अपनाता है, वैसे तो कादयानी आप को 99 फीसद फ्रेंच कट मिलेगा या फिर क्लीन शेव।

उनके यहाँ ग़ैर एलानिया तौर पर कोई जमाते अहमदिया का ओहदेदार मौजूदा ख़लीफ़ा से लम्बी या घनी दाढ़ी नहीं रख सकता, इस लिए कभी सालाना कादयानी जल्से के मौके पर भी हज़ारों कादयानियों के बीच कोई कादयानी अपने ख़लीफ़ा जैसी, उस के बराबर या उससे लम्बी दाढ़ी वाला नज़र नहीं आएगा।

अगर आप गूगल में रोमन उर्दू में जलसा सालाना जमात अहमदिया लिख कर सर्च करेंगे तो इस बात की तस्दीक हो जाएगी।

(5) कादयानी कभी मुसलमानों की तरह मख्सूस नमाज़ वाली गोल टोपी नहीं पहनते, वो या तो पटानों की मख्सूस टोपी पहने नज़र आएंगे या फिर सिन्धी टोपी या जिन्नाह कैप।

इस हवाले से हम एक ऐसी बात जो कोई कादयानी आपको नहीं बताएगा, बताते हैं कि कादयानी जमात में उनके मर्तबे या रूतबे के लिहाज़ से सर ढांपने का रिवाज है, मर्दों में उन का ख़लीफ़ा शिमला वाली पगड़ी पहनता है और उस के अलावा किसी कादयानी को उस की मौजूदगी में पगड़ी पहनने की इजाज़त नहीं होती।

ख़लीफ़ा के बाद जो उस से निचले दर्जे के ओहदेदार हैं वो जिन्नाह कैप का इस्तेमाल करते हैं, पैन्ट कोट या शलवार कमीज़ और शेरवानी के साथ।



फिर उनसे निचले दर्जे के आम कादयानी पठानों की मछूस टोपी पहनते हैं या फिर सिन्धी टोपी में नज़र आते हैं।

(6) कादयानी औरतों को पहचानना तो और भी आसान है, यह भी अपने कादयानी मर्दों की तरह मुसलमान औरतों की ज़िद में ढीले ढाले बुर्के के बजाए आम तौर पर टाइट बुर्का पहनती हैं, जिस की कमर पर अकसर बेल्ट भी लगी होती है ताके बुर्के की फिटिंग अच्छी आए इसके अलावा उनके बुर्के में एक लम्बी चाक भी होती है और उनके नकाब का तरीका भी निराला होता है जिसमें नकाब नाक के नीचे रखा होता है होठों के ऊपर ढलका हुआ, जिससे सिवाए लब और रूख़सार के सब नज़र आता है जो “साफ़ छुपते भी नहीं, सामने आते भी नहीं” का मंज़ूर पेश करता है, जिसे मुसलमान मर्दों को लुभाने के लिए एक हर्बे के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है।

(7) कादयानियों का टीवी चैनल एम टीवी ए (मुस्लिम टीवी अहमदिया) के नाम से 24 घंटे अपना प्रोग्राम नशर करता है, जिस पर यह अपने मज़मूम कुफ़्रिया अकीदे की खुल्लम खुल्ला तब्लीग़ करते हैं और दोखाधड़ी पर मक्बनी तालीम को इस्लाम अहमदियत यानी अहमदियत ही अस्त इस्लाम है, के नारे के साथ पेश करते हैं। कादयानियों की एक निशानी यह भी है कि आज के इस दौर में जब केवल टीवी आम है और डिश अन्टीना का इस्तेमाल पाकिस्तान में भी आम घरेलू सारेफ़ीन के लिए पुरानी बात हो चुकी है लेकिन इसके बावजूद कादयानी एम टीवी ए चैनल देखने की गर्ज से अपने घरों पर डिश अन्टीना ही लगाते हैं और जिन मुसलमानों पर यह अपने फ़रेंब की तबा आजमाई करते हैं, उनको अकसर तबलीग़ की नियत से अपना यह टीवी चैनल अपने घर या इलाके के कादयानी मरकज़ में लाकर दिखाने की काशिश करते हैं।

कादयानियों का मशहूर चैनल मीनारतुल मसीह है जो कि कादयान पंजाब हिंदुस्तान में वाके है,

जिस मीनारा को यह अपने टीवी चैनल पर मुसलमानों के मुकाबले ख़नाए काबा और मस्जिदे नबवी की जगह दिखा कर उसको मुश्तहिर करते हैं

(8) सब से अहम निशानी यह है कि कादयानी नामों के आगाज़ में आप को मुहम्मद लगा नज़र नहीं आएगा और ना ही कोई पैदाइशी कादयानी आपको इस तरह का ख़ालिस इस्लामी नाम रखता है, जैसे कि अब्दुल्ला, मुस्तफ़ा, अब्दुरशीद, अब्दुल क़य्यूम वगैरा जबकि इन के नामों के इख़िताम में अहमद लगा हुआ पाया जाता है जो मिर्ज़ा गुलाम कादयानी के नाम का भी हिस्सा था और कादयानी क़ुरान में बयान होने वाले आका सल्लललाहो अलैहि वसल्लम के मछूस नाम अहमद से मुराद मिर्ज़ा कादयानी की ज़ात ही लेते हैं, मआज़ल्लाह।

(9) याद रहे कि दुनिया भर में पाए जाने वाले ज़्यादातर कादयानी पंजाबी ज़बान बोलने वाले घरानों से ताअल्लुक रखते हैं क्योंकि मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी का ताअल्लुक भी तक्सीम हिन्दुस्तान से पहले “कादयान” ज़िला गुरदासपुर पंजाब से था, इस लिये इन की तबलीग़ का मरकज़ी दायरा असर भी तक्सीम से पहले और बाद में पंजाब ही रहा, ताकि यहाँ मौजूद सादा दिल देहाती और मिलनसार माहौल में उनके फितने की आबियारी हो सके और आज भी यह सिलसिला जारी है।

कादयानियों की यह कुछ निशानियाँ तहरीर करदी गई हैं, इस उम्मीद के साथ कि कारईन उन्हें ज़रूर याद रखेंगे और उन्हें दूसरों तक पहुँचाएंगे ताकि आम मुसलमान इस कादयानी फितने से महफूज़ रहें और अपना ईमान और इस्लाम सलामत रख सकें।

अंग्रेज़ों के पैदा कर्दा किस फितने से बख़्बर रहना और उसे पहचानना हर अहले इस्लाम के लिए ज़रूरी हो गया है, इन की फितना सामानियाँ इमान के लिए ज़हरे हलाहल हैं, अल्लह सब को महफूज़ रखे।

\*\*\*



# जमात रजा ए मुस्तफा एक नज़र में

अज़: मौलाना सय्यद मुहम्मद अज़ीम अज़हरी★

जमात की सरगर्भियाँ

आला हजरत इमाम अहमद रजा खां कादरी फ़ज़िले बरेलवी रदियल्लाहु अन्हु ने 7 रबीउल सानी 1339 हिजरी मुताबिक 17 दिसम्बर 1920 ईसवी को मुस्तफा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन्किलाबी मिशन की तरबीज व ईशाअत, मुसलमानों के इमान व अक़ीदे की हिफ़ाज़त और समाजी, माली व अख़लाकी पस्ती से प्रभावित उम्मत मुस्लिम की नुसरत व हिमायत के लिए जमात रजा ए मुस्तफा को कायम फरमाया।

जमात रजा ए मुस्तफा एक आलमी तहरीक है जो शरीअते इस्लामिया की मुकम्मल पासबान व मुहाफिज है, तमाम अहले सुन्नत व जमात चारों मजहब हनफी, शाफी, मलिकी, व हंबली की मुबल्लिग व तर्जमान है जिनका मुल्के हिंदुस्तान में शनाख़्ती निशान मसलके आला हज़रत है।

- 1) शाह इदुल इस्लाम मुहम्मद अब्दुस्सलाम रजवी जबलपुरी।
- (2) मलिकुल उलमा मौलाना मुहम्मद जफरुद्दीन रजवी बिहारी।
- (3) सदरुल उलमा मौलाना रहम इलाही मंगलोरी।
- (4) मौलाना महमूद ज़ान रजवी ज़ाम जोधपुरी।
- (5) उस्ताज़ुल उलमा मौलाना हसनैन रजा खां बरेलवी।
- (6) बुरहाने मिल्लत मुफ्ती बुरहानुल हक रजवी जबलपुरी व दूरहमतुल्लाही अलैहिम अजमईन।

**सरपरस्त:** काज़ी उल- कुज़ात फ़िल हिन्द ताज़ुशशरिया हज़रत अल्लामा अलहाज मुफ्ती मुहम्मद अख़्तर रजा खां कादरी अज़हरी दामा जिल्लुहुल आली।

**अध्यक्ष:** शाहज़ाद-ए-हुज़ूर ताज़ुशशरिया हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अरज़द रजा खां कादरी।

**जमात के उद्देश्य:**

- (1) इस्लामी तालीमात को आम करना, कुरान व सुन्नत पर मुश्तमिल दावत व तब्लीग का लिटरेचर कौम तक पहुँचाना।
- (2) दीन व मसलक के दुश्मनों की तहरीरी व तकरीरी तौर पर तरदीद करना।
- (3) गुमराह फिरकों और सुन्नियों के भेष में मौजूद लोगों की मुनाफकत का जाहिर करना।
- (4) उलमा ए अहले सुन्नत खासकर इमाम अहमद रजा खान कादरी की किताबों को पब्लिश करना।
- (5) मुसलमानों की मजहबी, समाजी, रोजगार व अख़लाकी कमियों को दूर करने के लिए मजबूत कदम उठाना और इसी तरह जमात रजा ए मुस्तफा की प्रकाशन के विषय में भी खिदमत सराहनीय हैं जिसने हजारों की तादाद में किताबें और पम्फलेट पब्लिश किये जमात की बड़ी खिदमत के ताल्लुक से मौलाना मुहम्मद अहमद मिस्बाही लिखते हैं, इस जमात रजा ए मुस्तफा की तारीख का बड़ा रिक्कत अंगेज़ और अजीमुशान बाब शुध्दी तहरीक का खात्मा है व इसकी खिदमत के खाने में सिर्फ यही कारनामा होता तो वही उसे बकाये दवाम बख़्शने के लिए काफी था।

**जमात रजा ए मुस्तफा के विभाग:**

- (1) दावत व तब्लीग विभाग।
- (2) प्रकाशन विभाग।
- (3) लेखन, अनुवाद एवं शोध विभाग।
- (4) सियासी व कानूनी मामलात विभाग।



- (5) पत्रकारिता विभाग।
- (6) इन्फ्रामैशन टेक्नोलॉजी विभाग।
- (7) समाज सेवा विभाग।
- (8) शिक्षा विभाग।
- (9) कजा व इफ्ता विभाग।
- (10) वक्फ व पुरातत्व विभाग।
- (11) माली विभाग।

देश-विदेश में जमात रजा ए मुस्तफा की 100 से अधिक शाखें हैं जिनकी देखरेख जमात रजा ए मुस्तफा के हेड ऑफिस बरेली शरीफ से होती है। किसी भी काम के लिए रोड मैप तैयार करना हो या दीनी गतिविधियां निश्चित करना हों सब मसलके आला हजरत की रौशनी में अंजाम दिये जाते हैं चूँकि अल्लाह ताला और उसके प्यारे महबूब मुस्तफा करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रजा हासिल करना ही असल मकसद है।

#### जमात की शाखें :

देश-विदेश में जमात रजा ए मुस्तफा की 100 से अधिक शाखें हैं जिनकी देखरेख जमात रजा ए मुस्तफा के हेड ऑफिस बरेली शरीफ से होती है व किसी भी काम के लिए रोड मैप तैयार करना हो या दीनी गतिविधियां निश्चित करना हों सब मसलके आला हजरत की रौशनी में अंजाम दिये जाते हैं चूँकि अल्लाह ताला और उसके प्यारे महबूब मुस्तफा करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रजा हासिल करना ही असल मकसद है।

#### जमात रजा ए मुस्तफा के महत्वपूर्ण कारनामे:

जमात रजा ए मुस्तफा की खिदमाते जलीला की एक लम्बी फहरिस्त है जमात के प्लेटफार्म से वो बड़े बड़े कारनामे अंजाम दिए गए हैं जिनकी उस वक्त अवामे अहले सुन्नत को सख्त जरूरत थी। जब इस्लाम के मूल संस्कारों पर पाबन्दी की कोशिश की गई तो जमात के जिम्मेदारों ने कौम की आवाज पर लब्बैक कहते हुए

मैदान में कदम रखा।

हिंदुस्तान की आजादी के मोर्के पर राम-राज के कयाम का नारा लगा तो जामत रजा ए मुस्तफा ने आगे बढ़ कर अहले इस्लाम की अकीदतों की खयाल रखते हुए उसके खिलाफ मुहीम चलाई।

मुसलमानों के खिलाफ चलाया गया अभियान बनाम शुध्दी आंदोलन का खात्मा जमात रजा ए मुस्तफा ने ही किया और इसी तरह जमात रजा ए मुस्तफा की प्रकाशन के क्षेत्र में भी खिदमात सराहनीय हैं जिसने हजारों की तादाद में किताबें और पम्फलेट पब्लिश किये।

इस जमात रजा ए मुस्तफा की तारीख का बड़ा रिकत अंगेज और अजीमुशान बाब शुध्दी तहरीक का खात्मा है। इसकी खिदमात के खाने में सिर्फ यही कारनामा होता तो वही उसे बकाये दवाम बख्शने के लिए काफी था।

#### जमात के मेम्बर कैसे बने :

जमात रजा ए मुस्तफा की मेम्बरशिप व ब्रांच अपने इलाके में कायम करने के लिये नीचे दिए गये निर्देशों का पालन करें अश्वफलाइन मेम्बरशिप का तरीका जमात रजा ए मुस्तफा के हेड ऑफिस से मेम्बरशिप का फश्म हासिल करें और अपनी आवश्यक जानकारी भरके हेड ऑफिस में जमा करें व ऑफलाइन मेम्बरशिप का तरीका :

जमात रजा ए मुस्तफा के हेड ऑफिस से मेम्बरशिप का फॉर्म हासिल करें और अपनी आवश्यक जानकारी भरके हेड ऑफिस में जमा करें।

#### ऑनलाइन मेम्बरशिप का तरीका :

जमात रजा ए मुस्तफा की वेबसाइट: [www-jamatrazamustafa-org](http://www-jamatrazamustafa-org) esa apply for Membership के आशन पर जाकर अपनी आवश्यक जानकारी भरके Submit करें !

जमात की ब्रांच कैसे कायम करें : बकिया स. 34 पर



# बातें आला हज़रत की

अज : मोईन अख़्तर रज़वी ★

**बद अक़ीदों के हाथ में अपना हाथ भी देना गवारा नहीं करते थे, ये शान थी आला हज़रत की**

एक बार मेरे आला हज़रत कुछ ज्यादा ही बीमार हुए, आस पास के हकीमों से इलाज चल रहा था लेकिन कोई फायदा नहीं हो रहा था तो उनके इलाज के लिए लखनऊ के एक हकीम साहब को बरेली शरीफ बुलाया गया, आला हज़रत के इलाज के लिए जब हकीम साहब आला हज़रत के करीब गए और आप से कहा के आप अपना हाथ दीजिये मुझे नब्ज चेक करनी है, मेरे आला हज़रत ने फरमाया कि पहले आप अपना अक़ीदा बताइये, हकीम साहब बोले कि नब्ज से अक़ीदे का क्या ताअल्लुक? मेरे आला हज़रत ने फरमाया: अल्हम्दु लिल्लाह इस फकीर ने अपना हाथ ग़ौसे आजम के हाथों में दे दिया है, आज तक किसी बद अक़ीदा के हाथ में अपना हाथ नहीं दिया, इस लिए आप पहले अपना अक़ीदा बताइये, हकीम साहब बोले: मैं क्या अक़ीदा बताऊ अपना, किस मसले पे बताऊ? आला हज़रत ने फरमाया: हकीम साहब अशरफ अली थानवी, गंगोही, कासिम नानौतवी के बारे में आप का क्या अक़ीदा है?

हकीम साहब बोले हज़रत मुझे इन लोगों के बारे में कुछ नहीं पता, आला हज़रत ने फरमाया कि हकीम साहब के रहने का माकूल इंतजाम किया जाये और अशरफ अली थानवी, कासिम ननौतवी, गंगोही की लिखी हुयी किताबें हिफ्जूल ईमान, तहज़िबुलनास जैसी इन बद मज़हबों की लिखी हुयी किताबें उन्हें दीं और फरमाया: पहले आज शाम को आप इन किताबों को पढ़िये, कल फिर मेरे पास तशरीफ लाइये फिर

ईमानदारी से बतइये कि इन लोगों के बारे में आप का क्या अक़ीदा है?

हकीम साहब रात भर किताबें पढ़ते रहे, सुबह जब आये तो आला हज़रत ने फरमाया: हकीम साहब अब बताइये क्या अक़ीदा है इन लोगों के बारे में आप का? हकीम साहब बोले : हज़रत ये ऐसे बदतरीन काफिर हैं कि जो इनके कुफ़्र में शक करे वो भी काफिर हो जाएगा, मेरे आला हज़रत ने फरमाया अब आप मेरी नब्ज देख सकते हैं, हकीम साहब बोले हज़रत मैं तो आप का इलाज करने आया था, आप ने मेरा ही इलाज कर दिया, अल्लाह आप को जज़ाए ख़ैर और शिफाए फौर अता फरमाए।

आज कल लोग गुस्ताखे रसूल औा बद अक़ीदा फिरकों में अपनी बेटों और बेटियों की शादी कर रहे हैं और कहते हैं कि कुछ नहीं ये सब मौलाना लोगों की अपनी बातें हैं, वो ऐसे ही आपस में लड़ाने वाली बातें करते रहते हैं, हम लोग और वो लोग सब मुसलमान ही है, हमें इन झगड़ों में नहीं पड़ना।

अरे मुसलमानों ज़रा सोचो तो सही कि जो गुस्ताखे रसूल होगा वो मुसलमान बचा ही कब? जब आम नबीयों और रसूलों यहाँ तक कि फरिश्तों कि शान में अदना सी भी गुस्ताखी और बेअदबी कुफ़्र है तो जो तमाम नबीयों और रसूलों का सरदार है उस की शान में गुस्ताखी और बेअदबी कितना बड़ा कुफ़्र होगा? इलाही सब से पहले मुझे फिर तमाम मुसलमानों को सिराते मुस्ताकीम पर चलने की तौफ़ीक अता फरमाए।



# आला हजरत के हालात

## बर सवालातो-जवाबात

अजु : डॉ. शकील अहमद औज ★  
मुरल्लिब : आमिल हुसैन रजवी

रजवीयात

सवाल न. 1 : इमाम अहमद रज़ा की तरीखे विलादत सन् हिजरी में बताइये ?

जवाब : 10 शव्वालुल मुर्क़रम 1272 हिजरी ।

सवाल न. 2 : बताइये आपने सबसे पहले ख़िताब कब किया था ?

जवाब : 1862 ई0 बमुताबिक् रबिउल अव्वल 1278 हिजरी को छे साल की उम्र में ।

सवाल न. 3 : बताइये आपका पैदाइशी नाम क्या था ?

जवाब : मुहम्मद ।

सवाल न. 4 : क्या आप इमाम अहमद रज़ा का तरीख़ी नाम बता सकते हैं ?

जवाब : अलमुख्तार ।

सवाल न. 5 : बताइये आपका नाम अहमद रज़ा किसने रखा था ?

जवाब : दादा जान हज़रत रज़ा अली ख़ाँ ने ।

सवाल न. 6 : बताइये जब जंगे आज़ादी लड़ी जा रही थी उस वक़्त आपकी उम्र कितनी थी ?

जवाब : सिर्फ़ एक साल ।

सवाल न. 7 : बताइये आपके अमामा का शिमला किस शाने पर रहता था ?

जवाब : बाँयें शाने पर ।

सवाल न. 8 : आपको नौउमरी में एक मर्ज़ हो जाया करता थ, बताइये कौन सा ?

जवाब : आशोबे चश्म का ।

सवाल न. 9 : आप पान भी खाया करते थे, बताइये तमबाकू के साथ या बग़ैर तमबाकू के ?

जवाब : बग़ैर तमबाकू के ।

सवाल न. 10 : बताइये आप की आमदनी का ज़रिया

क्या था ?

जवाब : ज़र्मीदारी ।

सवाल न. 11 : बताइये आप कलम में कौन सी निब लगाने से इजतिनाब (बचते) करते थे ?

जवाब : लोहे की निब ।

सवाल न. 12 : बताइये आप जब 786 का अदद लिखते थे तो इब्तिदा दायीं तरफ़ से करते थे या बायीं तरफ़ से ?

जवाब : दायीं तरफ़ से यानी पहले 6 लिखते थे ।

सवाल न. 13 : कसरते मुताला से जब आपकी आँखों में निहायत शदीद तकलीफ़ हो गयी थी तो आपने अपने उस्ताद मिर्ज़ा गुलाम कादिर बेग के इसरार पर एक डाक्टर से रूजू किया था । डाक्टर का नाम बताइये ?

जवाब : डाक्टर अण्डर सन ।

सवाल न. 14 : बताइये आपकी आँख के मुआइने के बाद डाक्टर अण्डर सन ने क्या कहा था ?

जवाब : मुताला छोड़ दीजिए नहीं तो बीस बरस में आँखों में पानी उतर आएगा ।

सवाल न. 15 : आपकी पैदाइश पर ख़ान दान के किस बुजुर्ग ने यह कहा था "मेरा यह बेटा इंशा अल्लाह बहुत बड़ा आलिम होगा" ?

जवाब : मौलाना रज़ा अली ख़ाँ ने ।

सवाल न. 16 : बताइये आपने कितने अर्से में कुर्आन मजीद हिफ़्ज़ किया था ?

जवाब : एक माह में ।

सवाल न. 17 : क्या आप इमाम अहमद रज़ा के हिफ़्ज़े कुर्आन की वजह बता सकते हैं ?

जवाब : बाज़ लोग नाम के साथ हाफ़िज़ लिख दिया करते थे, इसलिए हाफ़िज़ बनना अपने ऊपर लाज़िम



कर लिया।

सवाल न. 18 : बताइये आप घड़ी का टाइम किस तरह मिलाया करते थे?

जवाब : दिनको सूरज और रात को सितारे देख कर।

सवाल न. 19 : बताइये घड़ी का इस तरह मिलाना किस इल्म साहिबे कमाल होने की दलील है?

जवाब : इल्मे तौकीत में।

सवाल न. 20 : आपकी हैरत अंग्रेज जहानत देख कर आपसे यह किसने पूछा था कि साहिब जादे सच सच बता दो किसी से कहूँगा नहीं, तुम इंसान हो या जिन?

जवाब : आपके उस्ताद ने।

सवाल न. 21 : बताइये इसके जवाब में आपने क्या इरशाद फरमाया?

जवाब : (अलहुम्दुलिल्लाह) मैं इंसान हूँ, अलबत्ता अल्लाह का फज़ल व करम शामिले हाल है।

सवाल न. 22 : बताइये आपने पूरी ज़िन्दगी में मजमूई तौर पर कितनी ज़कात अदा की?

जवाब : आपने कभी इतनी रकम अपने पास जमा ही नहीं रखी जिस पर ज़कात वाजिब हो इसलिए आपने कभी ज़कात नहीं दी।

सवाल न. 23 : आप उमूमन मटके का बासी पानी नहीं पीते थे बताइये क्यों?

जवाब : आपको जुकाम हो जाता था।

सवाल न. 24 : आपने पौने तीन माह मक्का मुअज्जमा के कियाम के दौरान खुद, कितनी मिक्दार में आंबे ज़म ज़म पिया था?

जवाब : तक़रीबन चार मन।

सवाल न. 25 : क्या आप इस कुआनी आयत का तर्जुमा जानते हैं?

जवाब : खुददाम चाँदी के कटोरे और गिलास लिए, इनको घेरें हैं।

सवाल न. 26 : बताइये इस आयत से इल्मे अब्जद के काइदे से कितने अदद बरामद होते हैं?

जवाब : 1340।

सवाल न. 27 : वफ़ात के कुछ देर कबल आपने वक्त पूछा था, बताइये वह वक्त क्या था?

जवाब : एक बजकर छप्पन मिनट दिन के।

सवाल न. 28 : वफ़ात के चन्द लम्हा कबल आपने कुआन शरीफ सुनने की फरमाइश किससे की थी?

जवाब : अपने छोटे साहिबजादे मुफ़ती मुहम्मद मुसतफ़ा रज़ा ख़ाँ साहब से।

सवाल न. 29 : बताइये कुआन मजीद की वह कौन सी दो सूर्तें हैं जो मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ साहब ने इन्हें सुनाई?

जवाब : सूरह यासीन और सूरह रअद।

सवाल न. 30 : बताइये ब वक्ते विसाल आपकी ज़बान पर क्या था?

जवाब : (लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुरसूलल्लाह)।

सवाल न. 31 : इमाम अहमद रज़ा की पैदाइश तो बरेली के मुहल्ला जिसौली में हुई थी लेकिन ज़रा यह बताइये कि आपका मज़ार किस मुहल्ले में है?

जवाब : मुहल्ला सौदागरान में।

सवाल न. 32 : अपनी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने के लिए आपने दो नाम दिये थे। जिसमे एक नाम तो आपके बड़े साहिब जादे का था, बताइये दूसरा नाम किस का था?

जवाब : साहिबे बहारे शरीयत (मौलाना मुहम्मद अमजद अली आज़मी का)।

सवाल न. 33 : आपने अपने जनाज़े के आगे "ज़रियाए क़ादरिया" और एक नात पढ़ने की वसीयत की थी। बताइये वह नात कौन सी थी?

जवाब : काबे के बदरुद दुजा तुमपे करोड़ो दुरुद तैबा के शमसुद्दुहा तुमपे करोड़ो दुरुद।

सवाल न. 34 : तदफ़ीन के बाद आपकी कब्र पर सात मरतबा आज़ान दी गई थी। बताइये क्यों?

जवाब : इसलिए कि वसीयत थी।

सवाल न. 35 : बताइये यह आज़ान किसने दी थी?



जवाब : आपके बड़े साहबजादे मुहम्मद हामिद रज़ा खाँ कादरी ने।

सवाल न. 36 : आज्ञान के बाद आपकी वसीयत के मुताबिक़ बा आवाज़े बुलन्द कितनी देर तक दुरुदशरीफ़ पढ़ा गया था ?

जवाब : तक़रीबन देड़ घंटे तक।

सवाल न. 37 : आपने कितने दिनों तक मुसल सल अपनी कब्र पर कुआन शरीफ़ और दुरुदशरीफ़ पढ़ने की वसीयत की थी ?

जवाब : तीन रोज़ तक।

सवाल न. 38 : बताइये वह कौन सा इल्म है जिसे आप मकरुह (नापसन्द) समझते थे ?

जवाब : फ़लसफ़ा।

सवाल न. 39 : बताइये आपने बेशतर उलूम किससे हासिल किये ?

जवाब : अपने वालिदे मुहतरम से।

सवाल न. 40 : इमाम अहमद रज़ा मसनदे इफ़ता पर कब फ़ाइज़ हुए। सन ई0 बताइये ?

जवाब : 1869 ई0 में।

सवाल न. 41 : बताइये आपने कुआन पाक नाज़रा कब ख़त्म किया था ?

जवाब : 1860 ई0 मुताबिक़ 1276 हिजरी को चार साल की उम्र में।

सवाल न. 42 : बताइये आपने अलूमे अक़लिया व नक़लिया से सनदे फ़रागत कब हासिल की थी ?

जवाब : 1869 ई0 मुताबिक़ 1286 हिजरी को।

सवाल न. 43 : आपने इल्मे हदीस, इल्मे फ़िक़ह और इल्मे उसूल तफ़सीर की सनद किन उलमाए किराम से हासिल की थी ?

जवाब : सय्यिद अहमद दहलान शाफ़िई मक्की और अब्दुल रहमान सिराज हनफ़ी मक्की से।

सवाल न. 44 : आपने पहली बार हज की सआदत कब हासिल की थी ?

जवाब : 1296 हिजरी मुताबिक़ 1878 ई0 को।

सवाल न. 45 : बताइये आपने दूसरी बार हज की सआदत किस सन ई0 में हासिल की थी ?

जवाब : 1905 ई0 में।

सवाल न. 46 : बताइये आपका विसाल कब हुआ। सन ई0 बताइये ?

जवाब : नवम्बर 1921 ई0 में।

सवाल न. 47 : सन ई0 के मुताबिक़ इमाम अहमद रज़ा खाँ की उम्र बताइये ?

जवाब : 65 साल।

सवाल न. 48 : बताइये 1905 ई0 को हरामैन तय्येबैन में आपका क़याम कितने अर्से रहा ?

जवाब : चार माह।

सवाल न. 49 : बताइये आपकी अज़वाजी ज़िंदगी का आगाज़ कब हुआ ?

जवाब : 1874 ई0 मुताबिक़ 1291 हिजरी को।

सवाल न. 50 : बताइये उस वक़्त आपकी उम्र मुबारक कितनी थी ?

जवाब : सन ई0 के मुताबिक़ 18 साल और सन हिजरी के मुताबिक़ 19 साल।

सवाल न. 51 : बताइये पहले हज के मौक़े पर आपकी उम्र कितनी थी ?

जवाब : सन् ईसवी के मुताबिक़ 22 साल और सन् हिजरी के मुताबिक़ 24 साल।

सवाल न. 52 : बताइये आपने बरेली में कौनसा दारुल उलूम काइम किया ?

जवाब : दारुल उलूम मंज़रे इस्लाम।

सवाल न. 53 : बताइये इस दारुल उलूम के क़याम के वक़्त आपकी उम्र कितनी थी ?

जवाब : सन ई0 के मुताबिक़ 49 साल और सन हिजरी के मुताबिक़ 51 साल।

सवाल न. 54 : बताइये दूसरे हज के मौक़े पर आपकी उम्र कितनी थी ?



जवाब : सन ई0 के मुताबिक 49 साल और सन हिजरी के मुताबिक 51 साल।

सवाल न. 55 : बताइये किस शहर के उलमा ने आपको "ज़ियाउद्दीन अहमद" का लक़ब दिया था ?

जवाब : मक्का मुअज़्ज़मा के उलमा ने।

सवाल न. 56 : बताइये आप दूसरे हज के मौके पर वापसी में हिन्दुस्तान के किस मशहूर शहर तशरीफ़ ले गये थे ?

जवाब : मुम्बई।

सवाल न. 57 : बताइये मुम्बई से वापसी पर आप किस शहर में रोनक़ अफ़रोज़ हुए थे ?

जवाब : अहमदा बाद में।

सवाल न. 58 : बताइये इन दोनों शहरों में आपका कयाम कितने कितने अर्से रहा ?

जवाब : एक एक माह।

सवाल न. 59 : बताइये वह दो महीने कौन से हैं ?

जवाब : रबीउल अव्वल, रबीउल आख़िर।

सवाल न. 60 : बताइये 1918 ई0 मुताबिक़ जमादुल ऊला आख़िर 1337 हिजरी को आप किस जगह तशरीफ़ ले गये ?

जवाब : जबलपुर।

सवाल न. 61 : जून 1921 ई0 मुताबिक़ रमज़ानुल मुबारक 1339 हिजरी को आप कहाँ कयाम पज़ीर थे ?

जवाब : कोहभवाली, नैनीताल में।

सवाल न. 62 : आपका विसाल कब हुआ सन हिजरी बताइये ?

जवाब : 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1340 हिजरी को।

सवाल न. 63 : आपकी उम्र एतबार सन ई0 65 साल बनती है बताइये सन हिजरी के मुताबिक़ कितनी उम्र बनती है ?

जवाब : 68 साल।

सवाल न. 64 : बरेली के उस मुहल्ले का नाम बताइये जहाँ आपकी पैदाइश हुई ?

जवाब : मुहल्ला जसौली।

सवाल न. 65 : बताइये वह मकान कि जहाँ आप पैदा हुए इस वक़्त किसकी मिलकियत में हैं ?

जवाब : एडवोकेट अज़दर हुसैन की मिलकियत में है।

सवाल न. 66 : मुहल्ला सौदागरान बरेली का वह मकान जहाँ से आपने उलूम व फ़ुनून के दरया बहाए, आज कल किसके कब्ज़े में हैं ?

जवाब : हज़रत मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ाँन अज़हरी साहब किब्ला के।

सवाल न. 67 : आपके मज़ार के सामने एक मस्जिद है, क्या आप इस मस्जिद का नाम बता सकते हैं ?

जवाब : मस्जिदे रज़ा।

सवाल न. 68 : मुहल्ला घेर जाफ़र ख़ाँ बरेली की उस मस्जिद का नाम बताइये जहाँ आप साल में दो बार वाज़ फ़रमाया करते थे ?

जवाब : शाही अकबरी मस्जिद।

सवाल न. 69 : बताइये यह मस्जिद किस बादशाह ने तामीर कराई थी ?

जवाब : शहंशाह अकबर ने 986 हिजरी में।

सवाल न. 70 : बताइये उस मस्जिद का मशहूर और क़दीम नाम क्या है ?

जवाब : मिर्ज़ाई मस्जिद।

सवाल न. 71 : बताइये जब आप दाईए अज़ल को लब्बैक कह रहे थे यानी विसाल फ़रमा रहे थे तो उस वक़्त टाइम क्या हो रहा था ?

जवाब : दो बजकर अड़तीस मिनट, दिन।

सवाल न. 72 : क्या आप इमाम अहमद रज़ा के विसाल का दिन बता सकते हैं ?

जवाब : जुमअतुल मुबारक।

सवाल न. 73 : जिस वक़्त आपका इत्तेक़ाल पुरमलाल हुआ, उस वक़्त मुअज़्ज़िन आजान दे रहा था, बताइये ब वक़्ते विसाल वह आजान के किस जुमले पर था ?

जवाब : (हय्या अललफ़ला) पर।





## सेन्टर ऑफ़ इस्लामिक स्टडीज़ जामियतुर रज़ा

मरकज़ नगर, मथुरापुर, सी.बी.गंज, बरेली शरीफ़, पू.पी.  
**CENTER OF ISLAMIC STUDIES JAMIATUR RAZA**  
MARKAZ NAGAR MATHURAPUR, C.B.GANJ, BAREILLY SHARIF (U.P.)



उम्दा क़ायमो-तआम के साथ एक हजार से जाएद बच्चा ज़ेर तअलीम



### Imam Ahmad Raza Trust

82-Saudagran, Raza Nagar, Bareilly U.P.-243003 (India)



### इमाम अहमद रज़ा ट्रस्ट

82, सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, पू.पी.

E-mail: [imamahmadrazatrust@auahazrat.com](mailto:imamahmadrazatrust@auahazrat.com)  
[imamahmadrazatrust@yahoo.co.in](mailto:imamahmadrazatrust@yahoo.co.in)

Website: [www.auliaharat.com](http://www.auliaharat.com), [jamiaturaza.com](http://jamiaturaza.com), [hazrat.org](http://hazrat.org)

Contact No. +91 0581 3291453  
+91 9897007120  
+91 9897267869

State Bank of India, Bareilly.  
A/C No. 030078123009  
IFSC Code : SBIN0000597

HDFC Bank, Bareilly  
A/c No. 50200004721350  
IFSC Code : HDFC0000304



RNI No. UPMUL/2017/71926  
Postal Regd. No. UP/BR-34/2017-19

JANUARY - 2018  
PAGES 60 WITH COVER

PER COPY : ₹20.00  
PER YEAR : 250.00

# MAHNAMA SUNNI DUNIYA

Printer, Publisher & Owner Asjad Raza Khan, Printed at Faiza Printers, Bara Bazar, Bareilly  
Published at 82, Saudagran, Dargah Aala Hazrat, Bareilly Sharif (U.P.) PIN : 243003, Editor Asjad Raza Khan



में इश्तिहार देकर अपने कारोबार और इदारे को फ़रोग दें

Monthly Package Four Colour महाना पैकेज फ़ोर कलर

S. No.	Adv. Space	कोवर्क्वार्टर Quarter Page	हॉफ़ Half Page	फुल Full Page	अश्टभारकी जगह	नम्बर
1	Back Title Page	8000/-	10000/-	15000/-	बिक नामस	1
2	Back Side of Front Title Page	6000/-	8000/-	12000/-	फ्रंट नामस का अन्दरुनी हस्ते	2
3	Back Side of Back Title Page	4000/-	6000/-	10000/-	बिक नामस का अन्दरुनी हस्ते	3

Quarterly Package Four Colour तिमाही पैकेज फ़ोर कलर

1	Back Title Page	20000/-	25000/-	35000/-	बिक नामस	1
2	Back Side of Front Title Page	15000/-	20000/-	30000/-	फ्रंट नामस का अन्दरुनी हस्ते	2
3	Back Side of Back Title Page	10000/-	15000/-	25000/-	बिक नामस का अन्दरुनी हस्ते	3

Half Yearly Package Four Colour छमाही पैकेज फ़ोर कलर

1	Back Title Page	30000/-	40000/-	60000/-	बिक नामस	1
2	Back Side of Front Title Page	20000/-	35000/-	50000/-	फ्रंट नामस का अन्दरुनी हस्ते	2
3	Back Side of Back Title Page	15000/-	25000/-	40000/-	बिक नामस का अन्दरुनी हस्ते	3

Yearly Package Four Colour सालाना पैकेज फ़ोर कलर

1	Back Title Page	50000/-	70000/-	100000/-	बिक नामस	1
2	Back Side of Front Title Page	35000/-	60000/-	80000/-	फ्रंट नामस का अन्दरुनी हस्ते	2
3	Back Side of Back Title Page	25000/-	40000/-	60000/-	बिक नामस का अन्दरुनी हस्ते	3

Black & White Package any in side Magazine ब्लैक एण्ड व्हाइट पैकेज रिसाला में कहीं भी

1	Monthly	1500/-	3000/-	5000/-	माहाने	1
2	Quarterly	4000/-	8000/-	12000/-	सहमाही	2
3	Half Yearly	7000/-	12000/-	16000/-	शशमाही	3
4	Yearly	10000/-	16000/-	20000/-	सालाने	4

नोट:-

- 1 तीन महीने का मतलब कोई भी तीन महीने, इसी तरह 6 या 12 महीने का मतलब कोई भी 6 या 12 महीने।
- 2 वक़्त और हालात के पेशे नज़र इश्तिहार की इबाआत मुक़ददम व मुवख़्ख़र भी हो सकती है।
- 3 पूरे इश्तिहार की रक़म एक मुश्त पेशगी जमा करनी होगी।

Contact: 82 Saudagaran, Dargah Aalahazrat, Bareilly Sharif (U.P.), Pin - 243003, Mob. 9411090486  
Account Details: Asjad Raza Khan, SBI A/c No. 10592358910, IFSC Code: SBIN0000597